

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

समाचार संपादक

अखिलेश कुमार, 9431089053

विशेष संपादक

मुकेश कुमार सिंह

सहायक संपादक

कोमल सुलतानिया

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीराज कुमार सिंह, 9431049337

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

राजनीतिक व्यूगे

अमरेन्द्र शर्मा 9899360011

प्रभाकर कुमार राय

प्रबंधक

अविनाश कुमार 8287266244

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार व्यूगे

अनूप नारायण सिंह 9546224277

क्राइम व्यूगे

एसएन श्याम

मुख्य संवाददाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशीष कुमार

जिला व्यूगे

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,

(व्यूगे चीफ), 9334114515

समस्तीपुर : राजेश कुमार

चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993

मुंगेर : सिद्धांत

कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता 9973077043

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार 7903292877

दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841

स्वाति, रंजीत कुमार

ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली

मंदिर रोड नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली

मंदिर रोड नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से

प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोटी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर

राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
माजपा

जय जयराम सिंह

JJRS CONSTRUCTION
PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 9, अंक : 8, अप्रैल 2022, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दू मासिक पत्रिका



18

पॉलिटेक्निक कोर्स कर बनाये एक अच्छा कॉरियर



समझो साइबर क्राइम को, ...

20



आखिर मासूमों का शोषण कब तक..

22



कब मिलेगा कात्यायनी मंदिर... 24



वायु प्रदूषण के चलते जहरीली ... 26



बंद होना चाहिए जनप्रतिनिधियों की पेंशन का अमृत महोत्सव

ज

ब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो अमृत सत्ताधीशों के हिस्से में ही आया लगता है। जबकि विसंगतियों की विद्रोहियों से जन को हर कदम पर कड़वे घूट पीने को विवश होना पड़ता है। जनप्रतिनिधि कार्यकाल के राजसी ठाठों के अलावा तमाम वेतन-भर्तों का सुख तो थोगते ही हैं, जनप्रतिनिधि न रहते हुए भी मलाइंदर पेंशन का लाभ पाते हैं। वह भी चक्रवृद्धि ब्याज की तरह बढ़ती पेंशन का। जिस देश में कोरोना संकट में 80 करोड़ लोगों की आय में संकुचन का दावा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं कर रही हैं, वहीं पंजाब के अकूत धन-संपदा वाले एक पूर्व जनप्रतिनिधि की पेंशन का पांच लाख होना लोकतंत्र की विसंगतियों का आईना दिखाता है। भले ही प्रतीकों की राजनीति करने पर आम आदमी पार्टी की विपक्षी दल आलोचना करते रहे लेकिन पंजाब में एक विधायक, एक पेंशन वाले कदम की मुक्तकंठ से सराहना की जानी चाहिए। निस्सदैह, आप सरकार ने राजनीति में शुचिता की दिशा में जो कदम बढ़ाया है वह देश के अन्य राज्यों के लिये भी मार्गदर्शक साबित होगा। जनता में जागरूकता आएगी कि जनप्रतिनिधियों की सरकारी संसाधनों की बंदरबांट की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जानी चाहिए। यह सुखद ही है कि पंजाब की एक पेंशन के नियम के बाबत अब हरियाणा में चर्चा सरारग्म है। पंजाब द्वारा पेश सार्थक मिसाल के बाद हरियाणा के पूर्व विधायकों की पेंशन से जुड़े विवरण को पिछले दिनों सूचना के अधिकार के तहत हासिल किया गया। निश्चित रूप से यह जानकारी जनता के संज्ञान में आने के बाद उन पूर्व विधायकों पर जनता का दबाव बनेगा, जो कई बार विधायक चुने जाने पर कई पेंशन ले रहे हैं। बिहार में तो सबसे अनुठा मामला है। यहां बिना शपथ लिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को विधायक मान लिया गया और उनको पेंशन समेत पूर्व विधायकों को मिलने वाले अन्य सुविधाएं दी जा रही हैं। ये प्रतिनिधि एक दिन भी विधानसभा में नहीं बैठे। ऐसे तमाशों सिर्फ भारतीय लोकतंत्र में ही संभव है। इस पन्दर्श में पंजाब में की गई पहल के बड़े मायने हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान सरकार ने दावा किया है कि पेंशन निर्धारण के नये नियम से पांच साल में सरकार अस्सी करोड़ रुपये की रकम बचायेगी। निश्चित रूप से विकास योजनाओं के लिये अतिरिक्त धन उपलब्ध हो सकेगा। हरियाणा में भी ऐसी पहल के सार्थक परिणाम सापेने आएंगे। दरअसल, आरटीआई के तहत हरियाणा सरकार से हासिल जानकारी के अनुसार, राज्य में पूर्व विधायकों को पेंशन तथा मृतक विधायकों के जीवनसाथी को पारिवारिक पेंशन पर सलाना लगभग 29.5 करोड़ खर्च किये जाते हैं। राज्य में कांग्रेस के एक पूर्व मंत्री 2.38 लाख रुपये प्रति माह की पेंशन के साथ सूची में सबसे ऊपर हैं। वहीं एक अन्य पूर्व मुख्यमंत्री को 2.22 लाख प्रति माह मिलते हैं जबकि काफी विधायकों को डेढ़ लाख से अधिक की पेंशन मिलती है। उस देश में जहां करोड़ों लोग अथाह परिश्रम के बाद भी जीवनपर्यंत इतना वेतन हासिल नहीं कर पाते हैं, वहां जन प्रतिनिधि घर बैठे यह सुख हासिल करें, विसंगति को ही दर्शार्ता है। देश के जनप्रतिनिधियों ने पेंशन के पुराने फारूलों को समाप्त कर दिया था, जिससे कर्मचारियों के परिवारों को सामाजिक सुरक्षा हासिल होती थी। जिसे फिर से लागू करने का एजेंडा अब कई राज्यों के राजनीतिक दल लोकलुभावन नीति के तहत फिर से उठा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, निजी क्षत्र में पारिवारिक पेंशन का कोई प्रावधान नहीं है। जबकि साधन संपन्न राजनीतिक हस्तियां केवल एक कार्यकाल तक ही पेंशन सीमित रखने की अनिच्छा में कुछ अनुचित नहीं मानती हैं। हिमाचल की भाजपा सरकार ने एक अध्यादेश लाने का फैसला किया, जिसके तहत सभी विधायक अपने वेतन पर आयकर का भुगतान स्वयं करेंगे। कैसी विडंबना है कि आय तो माननीयों के खाते में और कर जनता के खाते से।

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107

cbhindi.news@gmail.com

दोबारा अटैक की तैयारी में कोरोना, डरे नहीं, सावधान रहें



एक्सप्रेस ने यह आशंका जताई है कि मामलों की असल संख्या इससे ज्यादा हो सकती है। हालांकि, उनका मानना है कि अभी ज्यादा चिंता की बात नहीं है क्योंकि अस्पतालों में मरीज नहीं बढ़ रहे हैं। कोविड मामलों में इजाफा सिर्फ दिल्ली ही नहीं, गुडगांव, नोएडा, गाजियाबाद समेत यूपी और हरियाणा के कई शहरों में देखने को मिल रहा है।

अप्रैल के महीने में दिल्ली के कोविड आंकड़ों में धीरे-धीरे इजाफा हुआ है। 31 मार्च को डेली केसेज का सात दिनी औसत 104 था जो अब 180 पहुंच गया। लैब के फाउंडर और चेयरमैन डॉ नवीन डांग ने हमारे सहयोगी से बातचीत में कहा, 'केसेज की असल

संख्या ज्यादा हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि कई लोग होम टेस्ट किट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं और फ्लू-ठपफकरवाने के बजाय घर पर ही आइसोलेट कर ले रहे हैं।' राहत की बात यह है कि कोविड पॉजिटिव केवल 11 मरीज ही इलाज के लिए एडमिट हैं। इसमें से 5 मरीज आईसीयु में हैं और वेंटिलेटर पर एक भी मरीज नहीं है। 11 में से 10 दिल्ली से हैं और एक मरीज दिल्ली से बाहर के हैं।

43 दिन बाद 24 घंटे में 146 नए संक्रमितों की पहचान हुई। 79 संक्रमित कोरोना को मात देकर स्वास्थ हुए। रोज बढ़ रहा पॉजिटिविटी रेट हालात के बिंगड़ने का इशारा कर रहा है। स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना

बुलेटिन में पॉजिटिविटी रेट अब बताना बंद कर दिया है। ऐसे में एक बार फिर से सर्कर रहने की जरूरत है। पाबंदियों में छूट व मास्क नहीं लगाने पर जुमार्ना वसूला जाना बंद किए जाने के बाद संक्रमण एक बार फिर बेकाबू होने लगा है। अप्रैल की शुरूआत से ही संक्रमण में इजाफा देखा जा रहा है। 13 दिनों में 875 संक्रमित की पहचान हुई है।

9 बच्चों समेत 33 लोगों की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई। इसके बाद सीएमओ ने सभी स्कूलों को आदेश जारी किया है कि किसी भी बच्चे के कोविड पॉजिटिव मिलने पर इसकी जानकारी स्वास्थ्य विभाग को दें। नए मरीजों की बढ़ती हुई संख्या से सक्रिय



मरीजों की संख्या भी 90 हो गई है। 4 दिन में 30 से अधिक बच्चे संक्रमित हो चुके हैं। इनमें से करीब 10 बच्चों ने कोविड वैकीन नहीं ली है। संक्रमित मिल रहे अधिकांश बच्चों के बारे में स्वास्थ्य विभाग को यह जानकारी नहीं है कि वे किस स्कूल के हैं। इसके अलावा यह जानकारी भी नहीं होती है कि बच्चे ने कोविड से बचाव का टीका लिया है या नहीं।

वसुंधरा सेक्टर-6 के एमटी इंटरनैशनल स्कूल में छठी क्लास के एक बच्चे में कोरोना की पुष्टि हुई। वहीं, देर शाम वसुंधरा के सेठ आंनदराम जयुपिरा स्कूल में 10वीं का छात्र भी संक्रमित मिला। इससे पहले इंदिरापुरम के सेंट फ्रांसिस स्कूल और वैशाली के केआर मंगलम स्कूल में भी कोरोना के कुल 5 केस मिले थे, जिसके बाद स्कूलों को बंद कर दिया गया था। हालांकि केआर मंगलम स्कूल खुला, लेकिन इसमें कक्षा छह को बंद ही रखा गया। स्कूल मैनेजमेंट ने बताया कि 3 कोरोना पॉजिटिव केस कक्षा 6 से ही आए हैं। कोविड केस की पुष्टि होने के बाद स्कूलों में नियमों को लेकर सख्ती कर दी गई है। कोरोना का खतरा फिर बढ़ रहा है। इसके बावजूद लोग लापरवाही नहीं छोड़ रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना संक्रमितों की पुष्टि की है। 44 दिन बाद इतने अधिक मरीज एक साथ मिले हैं। इससे पहले 20 फरवरी को 34 संक्रमितों की पुष्टि हुई थी। उसके बाद एकदम से केस घट गए थे। अब फरीदाबाद में एक्टिव केस 78 हो गए हैं। मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग

वसुंधरा सेक्टर-6 के एमटी इंटरनैशनल स्कूल में छठी क्लास के एक बच्चे में कोरोना की पुष्टि हुई। वहीं, देर शाम वसुंधरा के सेठ आंनदराम जयुपिरा स्कूल में 10वीं का छात्र भी संक्रमित मिला। इससे पहले इंदिरापुरम के सेंट फ्रांसिस स्कूल और वैशाली के केआर मंगलम स्कूल में भी कोरोना के कुल 5 केस मिले थे, जिसके बाद स्कूलों को बंद कर दिया गया था। हालांकि केआर मंगलम स्कूल खुला, लेकिन इसमें कक्षा छह को बंद ही रखा गया। स्कूल मैनेजमेंट ने बताया कि 3 कोरोना पॉजिटिव केस कक्षा 6 से ही आए हैं। कोविड केस की पुष्टि होने के बाद स्कूलों में नियमों को लेकर सख्ती कर दी गई है। कोरोना का खतरा फिर बढ़ रहा है। इसके बावजूद लोग लापरवाही नहीं छोड़ रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना संक्रमितों की पुष्टि की है। 44 दिन बाद इतने अधिक मरीज एक साथ मिले हैं। इससे पहले 20 फरवरी को 34 संक्रमितों की पुष्टि हुई थी। उसके बाद एकदम से केस घट गए थे। अब फरीदाबाद में एक्टिव केस 78 हो गए हैं।

कोरोना से बचाव का सबसे अच्छा तरीका है। शुरू से लेकर अब तक जिन लोगों ने इन तरीकों को सख्ती से अपनाया, वो कोरोना के तीनों वेव में बचे रहे। इसका खुलासा एक सर्वे में हुआ है। हर 10 में से 8 परिवार ऐसे पाए गए जिन्होंने इन तरीकों को अपनाया तो उन्हें कोरोना नहीं हुआ। यहीं बजह है कि कोरोना महामारी

के दो साल बीत जाने के बाद भी एक्सप्टर्स बार-बार मास्क पहनने और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की सलाह दे रहे हैं। लोकल सर्कल के एक सर्वे में इसका खुलासा हुआ है। देश में 345 जिलों के कुल 29 हजार लोगों ने इसमें हिस्सा लिया था। 61 पर्सेंट पुरुष और 39 पर्सेंट महिलाएं इसमें शामिल हुईं।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नीतू चन्द्रा ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात



प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नीतू चन्द्रा ने आज 1 अगे मार्ग स्थित संकल्प में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात की। मुलाकात के क्रम में मुख्यमंत्री ने सुश्री नीतू चन्द्रा को हॉलीयुड की फिल्म में बेहतर अभिनय करने के लिये बधाई एवं शुभकामनाये दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। मुख्यमंत्री ने सुश्री नीतू चन्द्रा को बुके, प्रतीक चिह्न एवं अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। सुश्री नीतू चन्द्रा ने मुख्यमंत्री द्वारा महिला

सशक्तिकरण को लेकर बिहार में किये जा रहे प्रयासों की प्रशंसा करते हुये कहा कि बिहार की लड़कियाँ आज हर क्षेत्र में अपना नाम काम रहीं हैं। इस अवसर पर जल संसाधन सह सूचना एवं जन सम्पर्क मंत्री श्री संजय कुमार झा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह एवं सुश्री नीतू चन्द्रा की माँ तथा उनके भाई उपस्थित थे।

माला सिन्हा ने बनाया वार्ड 44 को पटना का सर्वश्रेष्ठ वार्ड

पटना का वार्ड 44 यूं ही आदर्श वार्ड के रूप में नहीं विकसित हुआ है इसके पीछे संघर्ष है वहां की वार्ड पार्षद माला सिन्हा व उनके पति सीतेश रमन का एशिया पोस्ट के तत्त्वावधान में कराए गए सर्वे में राजधानी पटना के वार्ड 44 को सर्वश्रेष्ठ वार्ड के रूप में चिह्नित किया गया है। इस वार्ड में नाले नालियों गलियों का निर्माण शत-प्रतिशत पूरी गुणवत्ता के साथ करवाया गया है। यह पटना का एकलौता वार्ड है जहां के स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था भी सुचारू रूप से चल रही है फागिंग मशीन से इस वार्ड में सभी इलाकों में मच्छर मारने की दवा का भी छिड़काव किया जाता है यहां के सौ फीसदी लोगों को वृद्धावस्था पेंशन लाल कार्ड राशन कार्ड इत्यादि उपलब्ध है। लोगों को सरकारी सुविधाओं का लाभ दिलाने के लिए वार्ड पार्षद द्वारा जनसेवक नियुक्त किए गए हैं जो लोगों के घरों तक जाकर उनकी समस्याएं सुनते हैं और उसका निदान भी करते हैं हेल्पलाइन नंबर के माध्यम से वार्ड के समस्याओं पर 24 घंटे नजर भी रखी जाती है। आमतौर पर कोई भी चुनाव जीतने वाला व्यक्ति समाज सेवा के साथ ही साथ खुद के सेहत को भी सुधारता है पर हम आज आपको एक ऐसे जनप्रतिनिधि के बारे में बताने जा रहे हैं जिसने चुनाव से पूर्व खुद के निजी कोष से अपने इलाके में एक बड़ी सड़क का ही निर्माण करवा दिया यह जनप्रतिनिधि है पटना कि वार्ड 44 की वार्ड पार्षद माला सिन्हा जिनके पति सीतेश रमन भी बिहार के चर्चित समाजसेवी हैं पिछली बार पटना नगर निगम के वार्ड 44 से चुनाव लड़ने से पूर्व माला सिन्हा के पति सीतेश रमन ने अपने इलाके के एक सड़क का जीर्णोद्धार अपने निजी कोष से करवाया। इस सड़क के निर्माण को लेकर यह दंपति राष्ट्रीय स्तर तक चर्चा में आ गया। इलाके के लोगों ने वार्ड पार्षद बनाया उसके बाद कारों की झड़ी लग गई सभी सड़कों का निर्माण जल निकासी की व्यवस्था सफाई की व्यवस्था इलाके में कई पार्क का निर्माण छठ घाट का निर्माण गरीब तबकों के लिए राशन और आवास की व्यवस्था वृद्धावस्था पेंशन सामाजिक सुरक्षा पेंशन की व्यवस्था की गई जहां सरकारी फंड कम पड़ा वहां इहोंने अपने निजी कोष से लोगों की सहायता की। यही कारण है कि चुनाव पूर्व किए गए सर्वे में पटना के सर्वश्रेष्ठ वार्ड पार्षद के रूप में वार्ड नंबर 44 से माला सिन्हा एकबार फिर से आगे हैं। सीतेश रमन और माला सिन्हा के काम से इलाके के लोग काफी प्रभावित हैं। दोनों के कुशल नेतृत्व से लोग काफी खुश भी हैं। काम के बदौलत लोग फिर से माला सिन्हा के पक्ष में हैं। क्षेत्र में काम की चर्चा है। इनका वार्ड आदर्श वार्ड के रूप में सुमार है। यानी वार्ड नंबर 44 से माला सिन्हा आगे हैं। इलाके के लोग कहते हैं कि यहां पर 100 फीसदी कार्य हुआ है आपको वार्ड



44 में कोई ऐसा इलाका नहीं मिलेगा जहां स्ट्रीट लाइट नहीं जलती हो समय-समय पर नालियों की सफाई होती है फागिंग मशीन से मच्छर मारने वाली दवाई का छिड़काव किया जाता है वार्ड पार्षद खुद सालों भर सक्रिय रहती हैं लोगों के सुख-दुख की भागीदार होती

है जिसकी जिस रूप में सहायता कर सकती हैं करती है। पटना के अन्य वार्ड की अपेक्षा यहां का विकास तेजी से हुआ है जहां कहीं भी सरकारी फंड कम पड़ा है माला सिन्हा ने वहां भी अपने निजी कोष से काम करवाया है।

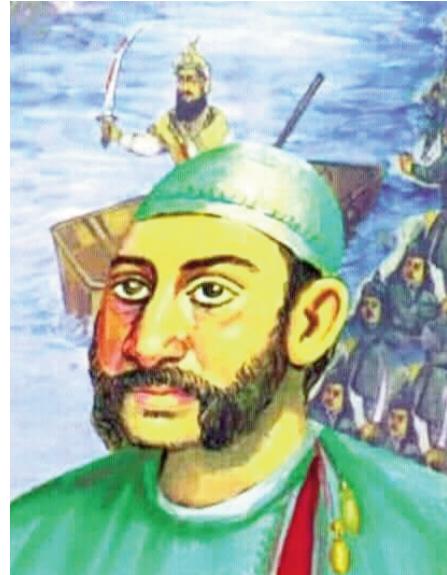


(23 अप्रैल विजयोत्सव पर विशेष)

1857 के गदर के महानायक बाबू वीर कुँवर सिंह

बिहार के शाहाबाद (भोजपुर) जिले के जगदीशपुर गांव में कुँवर सिंह का जन्म 1777 में प्रसिद्ध शासक भोज के वंशजों में हुआ। उनके छोटे भाई अमर सिंह, दयालु सिंह और राजपति सिंह एवं इसी खानदान के बाबू उदवंत सिंह, उमराव सिंह तथा गजराज सिंह नामी जागीरदार रहे। बाबू कुँवर सिंह के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वह जिला शाहाबाद की कीमती और अतिविशाल जागीरों के मालिक थे। सहदय और लोकप्रिय कुँवर सिंह को उनके बटाईंदार बहुत चाहते थे। वह अपने गांववासियों में लोकप्रिय थे ही साथ ही अंग्रेजी हुक्मत में भी उनकी अच्छी पैठ थी। कई ब्रिटिश अधिकारी उनके पित्र रह चुके थे लेकिन इस दोस्ती के कारण वह अंग्रेजनिष्ठ नहीं बने। बिहार में दानापुर के क्रांतकारियों ने 25 जुलाई सन 1857 को विद्रोह कर दिया और आरा पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इन क्रांतकारियों का नेतृत्व कर रहे थे वीर कुँवर सिंह। कुँवर सिंह का जन्म सन 1777 में बिहार के भोजपुर जिले में जगदीशपुर गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू साहबजादा सिंह था। इनके पूर्वज मालवा के प्रसिद्ध शासक महाराजा भोज के वंशज थे। कुँवर सिंह के पास बड़ी जागीर थी। किन्तु उनकी जागीर ईस्ट इंडिया कम्पनी की गलत नीतियों के कारण छीन गयी थी। जागीर ईस्ट इंडिया कम्पनी की गलत नीतियों के कारण छीन गयी थी। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय कुँवर सिंह की उम्र 80 वर्ष की थी। वृद्धावस्था में भी उनमें अपूर्व साहस, बल और पराक्रम था। उन्होंने देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए हृद संकल्प के साथ संघर्ष किया।

अंग्रेजों की तुलना में कुँवर सिंह के पास साधन सीमित थे परन्तु वे निराश नहीं हुए। उन्होंने क्रांतकारियों को संगठित किया। अपने साधनों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने छापामार युद्ध की नीति अपनाई और अंग्रेजों को बार द्वारा हराया। उन्होंने अपनी युद्ध नीति से अंग्रेजों के जन द्वारा धन को बहुत हानि पहुंचाई। कुँवर सिंह ने जगदीशपुर से आगे बढ़कर गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़ आदि जनपदों में छापामार युद्ध करके अंग्रेजों को खूब छकाया। वे युद्ध अभियान में बादा, रीवां तथा कानपुर भी गये। इसी बीच अंग्रेजों को इंग्लैंड से नयी सहायता प्राप्त हुई। कुछ रियासतों के शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया। एक साथ एक निश्चित तिथि को युद्ध आरम्भ न होने से अंग्रेजों को विद्रोह के दमन का अवसर मिल गया। अंग्रेजों ने अनेक छावनियों में सेना के भारतीय जवानों



को निःशस्त्र कर विद्रोह की आशंका में तोपों से भून दिया। धीरे द्वारा लखनऊ, झाँसी, दिल्ली में भी विद्रोह का दमन कर दिया गया और वहां अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी कुँवर सिंह ने अदम्य शौर्य का परिचय देते हुए अंग्रेजी सेना से लोहा लिया। उन्हें अंग्रेजों की सैन्य शक्ति का ज्ञान था। वे एक बार जिस रणनीति से शत्रुओं को पराजित करते थे दूसरी बार उससे अलग रणनीति अपनाते थे। इससे शत्रु सेना कुँवर सिंह की रणनीति का निश्चित अनुभान नहीं लगा पाती थी। आजमगढ़ से 25 मील दूर अतर्रालिया के मैदान में अंग्रेजों से जब युद्ध जोरों पर था तभी कुँवर सिंह की सेना सोची समझी रणनीति के अनुसार पीछे हटती चली गयी। अंग्रेजों ने इसे अपनी विजय समझा और खुशियाँ मनाई। अंग्रेजी की थकी सेना आप के बगीचे में ठहरकर भोजन करने लगी। ठीक उसी समय कुँवर सिंह की सेना ने अचानक आक्रमण कर दिया। शत्रु सेना बालिया के पास शिवपुरी घाट से रात्रि के समय किशतयों में गंगा नदी पर कर रहे थे तभी अंग्रेजी सेना वहां पहुंची और अंधाधुंध गोलियां चलाने लगी। अचानक एक गोली कुँवर सिंह की बांह में लगी। उन्होंने गोली लगी हाथ को काट कर गंगा मैत्रा को समर्पित कर दिया। इसके बावजूद वे अंग्रेज सैनिकों के धेरे से सुरक्षित निकलकर अपने गांव जगदीशपुर पहुंच गये। धाव के रक्त साव के कारण उनका स्वास्थ्य बिंदूता चला गया और 26 अप्रैल सन 1858 को इस वीर और महान देशभक्त का देहावसान हो गया।

(लेखक अनूप नारायण सिंह वरषि पत्रकार व फिल्म सेसर बोडे (सूचना प्रसारण मंत्रालय) के सदस्य हैं)

जानिए कौन है बिहार की फैशन आईकॉन देवजानी मित्रा

देवजानी मित्रा फैशन इंडस्ट्री की एक प्रमुख हस्ती हैं। वह आई-ग्लैम की संस्थापक हैं: इस्ट इंडिया की एक प्रमुख मॉडलिंग और सौंदर्य प्रतियोगिता कंपनी। वह हमेशा से एक आत्मनिर्भर महिला रही है। वह एक सफल एंटरप्रेन्योर, फैशन कोरियोग्राफर, पब्लिक स्पीकर, काउंसलर, सोशल एक्टिविस्ट और इवेंट प्लानर हैं। एक इवेंट प्लानर के रूप में उनकी सफलता को 60 सेलेब्रिटी शो और 100 अन्य शो द्वारा मान्यता मिली है, जिन्हें उन्होंने उच्च पूर्णता के साथ प्रबंधित किया है।

उन्हें हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनने में मदद करने के लिए ग्रुप इंडियन आइकन अवार्ड और रूबरू किंटेशियल 21 वीं सदी का महिला पुरस्कार भी मिला है। वह एक प्रभावशाली और शक्तिशाली प्रेरक वक्ता और परामर्शदाता हैं और उन्होंने हजारों लोगों को उनके डर, अन्य बाधाओं और रहस्यों को दूर करने और अपने जीवन में एक योद्धा के रूप में सामने आने में मदद की है। वह मटर टेरेसा और ओपरा विनफ्रे को अपना आदर्श और जीवन में प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत मानती हैं। वह वास्तव में और मस्तिष्क, करुणा, जुनून, करुणा और एक करिशमाई व्यक्तित्व के मालिक के साथ सुंदरता का प्रतीक है।

पार्श्वभूमि

देवजानी मित्रा का जन्म और पालन-पोषण कोलकाता के बानपुर में हुआ था। उन्होंने बर्दवान विश्वविद्यालय से गणित में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद, उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी से फैशन कोरियोग्राफी और मॉडलिंग में अपनी डिग्री पूरी की। वह हमेशा अपने करियर को लेकर बेहद जुनूनी रही हैं।

त्यवसायों: आई-ग्लैम

देवजानी मित्रा आई-ग्लैम की संस्थापक हैं: इस्ट इंडिया की एक प्रमुख मॉडलिंग और सौंदर्य प्रतियोगिता कंपनी। आई-ग्लैम रूबरू ग्रुप जैसे अंतर्राष्ट्रीय पेजेंट आयोजकों के साथ साझेदारी में मिस्टर, मिस, मिसेज और जूनियर्स श्रेणी में नियमित रूप से ब्यूटी पेजेंट आयोजित करता है। इसके अलावा आई-ग्लैम आगामी यंग बिडिंग और ग्राउंडलेस मॉडल और सौंदर्य प्रतियोगिता उद्योग के उम्मीदवारों के लिए एक मंच भी प्रदान करता है। रूबरू मिस इंडिया और रूबरू मिस इंडिया एलीट ब्यूटी पेजेंट में भारत के पूर्वी हिस्से की उपलब्धियों के पीछे वह प्रेरणा है।





एमवे बिजनेस ऑनर

देवजानी मित्रा अपने पति आशीष के झा (जेमस्टोन के प्रबंध निदेशक) के साथ: डी एंड ए के नाम से लोकप्रिय एक सफल और स्थापित पावर कपल होने के साथ-साथ डायरेक्ट सेलिंग (नेटवर्क मार्केटिंग) उद्योग में एक मान्यता प्राप्त ब्रांड हैं। साथ में, वे एमवे इंडिया एंटरप्राइजेज में एमराल्ड डायरेक्टर्स की स्थिति रखते हैं - भारत और दुनिया भर में अग्रणी डायरेक्टर सेलिंग कंपनी। उनका भारत, अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में अपना व्यवसाय संचालन है।

ड्रीम्ज एंड एस्प्रिरेशंस

देवजानी मित्रा ड्रीम्ज एंड एस्प्रिरेशंस के संस्थापक हैं- पूर्वी क्षेत्र में एक प्रमुख इवेंट मैनेजमेंट कंपनी। उसने सफलतापूर्वक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है जिसकी सभी ने सराहना की और सराहना की। एक इवेंट प्लानर के रूप में उनकी सफलता को 60 सेलेब्रिटी शो और 100 अन्य शो द्वारा मान्यता मिली है, जिन्हें उन्होंने उच्च पूर्णता के साथ प्रबंधित किया है।

ड्रीम्ज एंड एस्प्रिरेशंस

देवजानी मित्रा ड्रीम्ज एंड एस्प्रिरेशंस के संस्थापक हैं- पूर्वी क्षेत्र में एक प्रमुख इवेंट मैनेजमेंट कंपनी। उसने सफलतापूर्वक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है जिसकी सभी ने सराहना की और सराहना की। एक इवेंट प्लानर के रूप में उनकी सफलता को 60 सेलेब्रिटी शो और 100 अन्य शो द्वारा मान्यता मिली है, जिन्हें उन्होंने उच्च पूर्णता के साथ प्रबंधित किया है।

ईस्ट इंडिया निदेशक: रुबरु ग्रुप



देवजानी मित्रा रुबरु समूह के पूर्वी भारत के निदेशक का पद संभालती हैं। रुबरु ग्रुप एक प्रतिभा को बढ़ावा देने वाली एजेंसी, पेजेंट संगठन और एनजीओ है। संगठन महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के महत्व जैसे विभिन्न सामाजिक कारणों पर ध्यान केंद्रित करता है और घेरेलू हिंसा, मानव तस्करी, कन्या श्रूण हत्या और कन्या श्रूण हत्या जैसे संवेदनशील मुद्दों पर जागरूकता पैदा करता है। रुबरु समूह भारत में सात सौंदर्य प्रतियोगिताओं और मॉडलिंग प्रतियोगिताओं के मूल संगठन के रूप में भी कार्य करता है।

रुबरु समूह के सहयोग से, देवजानी मित्रा ने पूर्वी भारत में सक्रिय रूप से और सफलतापूर्वक विभिन्न सौंदर्य प्रतियोगिताएं आयोजित की हैं।

सलाहकार और परामर्शदाता



वह फैशन उद्योग में एक प्रमुख सलाहकार हैं। वह विभिन्न कंपनियों के लिए फैशन और मॉडलिंग परामर्श में विशाल और विविध अनुभव रखती है। उन्हें विभिन्न प्रमुख व्यूटी पेजेंट को करियोग्राफ करने और जज करने का सम्मान मिला है।

इसके अलावा वह करियर के साथ-साथ मेंटल काउंसलर भी हैं। उन्हें अपने परामर्श कौशल से सैकड़ों लोगों के जीवन को सकारात्मक रूप से बदलने का श्रेय मिला है।

प्रेरक वक्ता

देवजानी मित्रा एक सफल और शक्तिशाली प्रभावशाली और प्रेरक वक्ता हैं। उसने लोगों को उनके जीवन में प्रेरित करने और प्रेरित करने के उद्देश्य से विभिन्न सत्र और वेबिनार लिए हैं। उन्हें अतिथि वक्ता के रूप में विभिन्न कॉलेजों और संगठनों में भी आमंत्रित किया गया है। उन्होंने हमेशा महिला सशक्तिकरण और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जोर दिया है। उद्योग के साथियों द्वारा निस्वार्थ, आत्म-चालित और अत्यधिक भावुक के रूप में वर्णित, देवजानी की विशेषताएं हर भाषण और हर घटना में ध्यान देने योग्य विश्वास और ताकत के साथ खिलती हैं। उनकी गाय में, प्रतिभा की कोई सीमा नहीं होती है, उसे केवल पोषण की आवश्यकता होती है। विचारों से सराबोर और चमक में डूबी, वह हमेशा अपने उद्यम में हमारे देश की युवा नवोदित प्रतिभाओं को पोषित करने और उन्हें आवश्यक मंच प्रदान करने के लिए आगे आई है। वह विभिन्न सामाजिक कारणों के लिए भी सक्रिय रूप से काम कर रही है।

वाकई, उनका जीवन कई लोगों के लिए प्रेरणा है !!

मसरख मेरी जन्मभूमि तो तरैया मेरी कर्मभूमि लोगों की सेवा में सदैव रहता हूं तत्पर



मशरख। मेरा जन्म जिस परिवार में हुआ वह बिहार के राजनीति की पाठशाला रही मेरे बड़े पिताजी पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह की छत्रछाया में राजनीति की एक बड़ी पीढ़ी ही तैयार हो गई हम लोगों ने जीवन में कई उत्तर-चढ़ाव को देखा मेरा परिवार संघर्ष करते हुए आम जनमानस की सेवा करते हुए आगे बढ़ा है इस कारण से हम लोग संघर्ष से कभी नहीं डरते हैं यह कहना है तरैया से निर्दलीय प्रत्याशी रहे वाईपीएल संयोजक युवराज सुधीर सिंह का। एक विशेष बातचीत में युवराज सुधीर सिंह ने कहा कि बड़े पिताजी पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह का उनके जीवन पर बड़ा प्रभाव है इसी कारण से उन्होंने समाज सेवा को अपना मूल उद्देश्य बनाया है मसरख उनकी जन्मभूमि है तो तरैया उनकी कर्मभूमि विगत 15 वर्षों से तरैया के लोगों के सेवा में दिन रात लगे हुए हैं चुनाव हारना और जीतना किसी की लोकप्रियता का पैमाना नहीं होता आज भी मसरख आवास पर हजारों लोग तरैया से उनके पास आते हैं और जहां तक संभव होता है वे लोगों की सहायता करते हैं उन्होंने कभी भी जनसेवा से मुंह नहीं मोड़ा है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि उनके पिताजी दीनानाथ सिंह और बड़े पिताजी प्रभुनाथ सिंह एक झूठे मामले में जेल में हैं जिसके कारण समर्थकों में रोष है

वे लोगों की सहायता करते हैं उन्होंने कभी भी जनसेवा से मुंह नहीं मोड़ा है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि उनके पिताजी दीनानाथ सिंह और बड़े पिताजी प्रभुनाथ सिंह हृष्टे में जेल में हैं।

और कहीं ना कहीं राजनीति में विरोधियों की साजिश सफल होती भी दिख रही है। छोटे भाई छपरा से पूर्व राजद विधायक रणधीर सिंह को महाराजगंज से सांसद बनाने के लिए व्यापक पैमाने पर अभियान चल रहा है और इस बार महाराजगंज की जनता बदलाव के मूड में है पिछली बार जो गलतियां हुई हैं उसे सुधारने का प्रयास किया जा रहा है वोटरों को यह समझाया जा रहा है कि महाराजगंज को महाराजगंज किसने बनाया किसने महाराजगंज से मसरख तक बड़ी रेल लाइन दी महाराजगंज में अत्याधुनिक सुविधाएं हुईं क्षेत्र में सड़कों का जाल बना मसरख में केंद्रीय विद्यालय खुला मढ़ौरा को अनुमंडल मनाया गया तमाम तरह की जन उपयोगी कार्य हुए यह सब प्रभुनाथ बाबू की देन है जो लोग उनके बाद चुनाव जीते हैं वह एक भी उपलब्धि बता दें उन्होंने जनता को ठगने का काम किया है यही कारण

है कि जनता में रोष है और इसी रोष को देखते हुए इस बार पूरी तैयारी के साथ उनके छोटे भाई रणधीर सिंह क्षेत्र में लोग हुए हैं। सुधीर सिंह ने कहा कि राजनीति उनका पहला प्रम है तो किंकेट उनका दूसरा प्रम किंकेट को बढ़ावा देने के लिए जो कुछ संभव हो पाता है वह लगे रहते हैं ग्रामीण स्तर के प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए भी वह मदद करते हैं कई सारे आयोजन होते हैं जिसमें वह बड़े चढ़कर हिस्सा लेते हैं उनका कहना है कि अगर युवा पीढ़ी सही रास्ते पर हो तो समाज का नवनिर्माण संभव है यही कारण है कि युवाओं के लिए वह सदैव तत्पर रहते हैं जहां कहीं भी उनकी सहायता की बारी आती है वह सबसे आगे खड़े होते हैं बिहार में राजपूत राजनीति के संदर्भ में पूछे गए एक सवाल पर उन्होंने कहा कि वे सर्व धर्म सर्व जाति में विश्वास करते हैं किंतु जिस कुल में उनका जन्म हुआ है उसके प्रति भी उनकी जवाबदेही है यही कारण है कि मधुबनी हत्याकांड और आरा में बाबू बीर कुंवर सिंह के पौत्र की हत्या के बाद वे सबसे पहले आवाज उठा आने वाले लोगों में थे मधुबनी में उन्होंने अपने स्तर से जो कुछ भी संभव था सहायता भी कि आगे भी पूरे बिहार में जहां कोई पीड़ित शोषित होगा उसकी सहायता के लिए वे तत्पर रहेंगे।

संजय कुमार सिंह की राजनीतिक सफर कब और कैसे शुरू हुई



संजय कुमार सिंह बचपन से ही सादगी एवं शांत प्रवृत्ति के जीवन यापन कर रहे थे ठीक उसी समय देश और दुनिया में अराजकता का माहौल पैदा हो चुका था उसी समय पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर जी के सामाजिक न्याय के विचारों को अपना आदर्श मानते हुए समाज में व्यास कुरीतियों का खाला करने हेतु विभिन्न स्तर पर सक्रिय सामाजिक जन चेतना का कार्य करते हुए सामाजिक संगठन जैसे भारत जागरण मंच बरगया विकास मंच एवं जनकल्याण क्षत्रिय युवा मंच का गठन कर युद्ध स्तर पर कार्य करना इनका यह सफर सन 1989 से 2000 तक का रहा इसी बीच सन 1994 से 95 तक पटना विश्वविद्यालय के छात्र विकास मंच के अध्यक्ष पद पर रहकर एक ऊजावान शक्तिमान संगठन को खड़ा किया वर्ष 2001 से 2000 तक फतुहा विधान सभा के आदर्श ग्राम पंचायत अलावलपुर के पंचायत समिति सदस्य के रूप में पहली बार जीतकर

अपना परचम लहराए इसी दैरान वर्ष 2004 में पंचायत समिति का गठन कर प्रदेश की राजधानी पटना से बापूधाम मोतिहारी तक पैदल मार्च कर एक मील का पथर स्थापित की वर्ष 2006 से 2017 तक बिहार की जदयू सेवादल प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव के रूप में पार्टी द्वारा दी गई कार्यों को चरणबद्ध तरीके से निष्पादन कर 38 जिलों में संगठन को मजबूत किये वर्ष 2017 से 2020 तक बिहार प्रदेश जदयू सेवा दल के प्रधान महासचिव के पद पर रहते हुए पार्टी को जिला में जमीनी स्तर पर मजबूत करने का कार्य किए इनकी मेहनत रंग लाई पार्टी ने इन्हें प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत करते हुए राधोपुर विधानसभा का प्रभारी बनाया वर्तमान में नालदा जिला के हरनौत विधानसभा प्रभारी रहे इस कार्य को भी उन्होंने बखूबी निभाया ये जीवन में हर एक चुनौती को स्वीकार कर राजनीति के उस चोटी पर जा पहुंचे जहां अच्छे-अच्छे राजनीतिज्ञ नहीं पहुंच

पाते हैं , वर्ष 2012 में ब्रह्म बाबा सेवा एवं शोध संस्थान के संस्थापक संजय कुमार सिंह ने ब्रह्म बाबा मंदिर निरोगधाम की स्थापना की जो धर्मन्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरुति, परंपरा , रुद्धिवादिता के खिलाफ जनजागरण का केंद्र है, युग शक्ति गायत्री मंदिर वृद्धांवन कालोनी कुम्हरार पटना और ज्ञान मंदिर का निर्माण कर समाजिक, राजनीतिक, धर्मिक आंदोलन के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे है, अद्भुत प्रतिभा के धनी व्यक्ति संजय कुमार सिंह को पटना की जनता ने अपना मेयर पद के उम्मीदवार के रूप खड़ा किया हैं , इनका अपना मानना है कि जनता चुनाव जीतती है और जनता चुनाव हारती है, यदि जनता का सहयोग और समर्थन मिला तो पटना के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होगी, कई वर्षों के बाद इस तरह का ऊजावान शक्तिमान व्यक्ति पृथ्वी पर पैदा होता है।

सभी क्षेत्रों में हो रहा है विकास कहा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह ने



पटना बिहार सरकार में विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह ने कहा कि बिहार सरकार न्याय के साथ विकास की अवधारणा को पूरी करेगी बच्चित समाज को आगे लाने के लिए हर संभव प्रयास होगा महिलाओं के उत्थान के लिए भी कई सारी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। बिहार के यशस्वी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विकास पुरुष है विकास से किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जाएगा। बिहार प्रगति के पथ पर अग्रसर है विकास से समझौता नहीं किया जाएगा न्याय में के साथ विकास की अवधारणा को वास्तविकता के धरतल पर उतारने के लिए जनप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी पूरी तरह कृत संकल्पित है राज्य के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग भी अपनी अहम भूमिका अदा करने की तैयारी में है राज्य के युवा युवातानों को हुनरमंद करने के लिए विभाग के द्वारा कई सारे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं साथ ही साथ विभाग के द्वारा राज्य भर के लोगों से ऐसे प्रोजेक्ट अविष्कार आमंत्रित किए जा रहे हैं जिससे किसी भी क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन हो ऐसे किसी भी सुझाव या अविष्कार के लिए

विभाग के द्वारा ०३ लाख की वजीफे की भी व्यवस्था की गई है बिहार के युवाओं को हुनरमंद बनाना पहला लक्ष्य कहा बिहार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह ने मंत्री सुमित कुमार सिंह ने कहा कि विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की जाएगी। विभाग द्वारा जो भी योजनाएं चलाई जा रही हैं उसकी समीक्षा की जाएगी। यदि उसमें कोई त्रुटि होगी या कोई कमी होगी तो उसे दूर किया जाएगा। सुमित कुमार ने कहा कि जो जिम्मेदारी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दी है उसका निर्वाहन पूरी ईमानदारी के साथ करूंगा। सभी कॉलेजों की समीक्षा की जा रही है। हमारी कोशिश है कि हर बेहतर सुविधा छात्रों को उपलब्ध कराई जाए। बिहार के छात्र इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने दूसरे राज्य में जाते हैं यहां पर मुफ्त शिक्षा दी जा रही है। कोई नई योजना शुरू करनी हो या पुरानी योजना में बदलाव तो हम बेहिचक करेंगे। "जो जिम्मेदारी मिली है उसपर पूरी तरीके से खड़ा उतरेंगे। युवाओं की बेहतरी के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। उन्हें निराश नहीं करेंगे। जो भी सूचना मिलेगी उसपर कार्रवाई की जाएगी। यदि कोई

सुझाव मीडिया या आम लोगों द्वारा दिया जाएगा तो उसपर भी काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की बरनार जलाशय योजना, अजय, घाघरा जलाशयों को दुरुस्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री की सोच है कि युवाओं को रोजगार मिले। इसके लिए रोजगार के अवसर सृजित किये जायेंगे। प्लेसमेंट सेल की व्यवस्था की जाएगी। स्वास्थ्य सेवा को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। जो विश्वास उन पर राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और क्षेत्र चकाई की जनता ने जताया है उसे पूरा करने के लिए पूरा प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि चकाई बनेगा चंडीगढ़ के सपने को साकार करने के लिए हर सार्थक पहल की जाएगी। इस दिशा में काम भी शुरू हो गया है। तीन महीने के भीतर 170 करोड़ की विकास योजना की स्वीकृति ही गयी। शीघ्र ही इन योजनाओं का कार्य शुरू होगा। क्षेत्र का सर्वांगीण विकास ही हमारी प्राथमिकता है। सड़क, सिंचाई से लेकर स्वास्थ्य, शिक्षा व्यवस्था को सुट्ट करने एवं नक्सलबाद, उग्रवाद जैसी समस्याओं को लेकर भी काम किया जाएगा।

सफल होने के लिए 'लगे रहना और डंटे रहना' पड़ता है - रेयान सिद्धीकी



रेयान सिद्धीकी युवाओं के लिए वो मिसाल हैं जो बेहद कम उम्र में क्रिएटिव प्रोड्यूसर बनकर युवाओं के सामने उभरे हैं। रेयान सिद्धीकी बचपन से ही बेहद जुनूनी रहे हैं। इसलिए तो उन्होंने अपने उम्र के विपरीत वो रास्ता चुना जो उनकी उम्र वाले नहीं कर पाते हैं।

रेयान सिद्धीकी युवाओं के लिए वो मिसाल हैं जो बेहद कम उम्र में क्रिएटिव प्रोड्यूसर बनकर युवाओं के सामने उभरे हैं। इस उम्र में अधिकांश युवक तो यह फैसला ही नहीं कर पाते हैं कि उन्हें जिंदगी में क्या और कैसे करना है? लेकिन प्रोड्यूसर रेयान सिद्धीकी इस बात का उदाहरण रहे हैं कि आपकी मेहनत आपको सफलता के मामले में कहां ले जा सकती है।

रेयान सिद्धीकी बचपन से ही बेहद जुनूनी रहे हैं। इसलिए तो उन्होंने अपने उम्र के विपरीत वो रास्ता चुना जो उनकी उम्र वाले नहीं कर पाते हैं। यूएलएलयू ऑरिजिनल्स के बैनर तले बनी फिल्म लाइंट नंबर 7 से बातौर क्रिएटिव प्रोड्यूसर कदम रखने वाले रियान अक्सर उन बातों पर अमल किया, जो उनके करियर को और सपनों को पूरा करने में मील का पथर साबित हुई। रेयान क्रिएटिव प्रोड्यूसर होने के साथ ही साथ ही एनरील फिल्म्स एंड एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन हाउस के मालिक भी हैं। उनके प्रोडक्शन हाउस से कई फेमस बॉलीवुड हस्तियां जुड़े हुए हैं। इसके अलावा उन्होंने



कई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के साथ भी काम किया, जो उनके करियर के लिए वरदान साबित हुई है। ऐसे में वार्कइ में रेयान के लाइफ का सफर एक आम इंसान को मोटिवेशन देता है। रेयान को ये नाम और शोहरत जागीर में नहीं मिली है, उन्होंने अपने टेलेंट और मेहनत के दम पर इसे हासिल किया है।

रेयान सिद्धीकी का मानना है कि जब लोग आपके काम की तारीफ करते हैं और आपके काम से इम्प्रेस होते हैं तो ये सौभाग्य फील होता है। उनका मकसद

हमेशा दर्शकों के लिए कुछ खास और यूनिक और पॉजिटिव चीजों पर काम करना है।

उनका कहना है कि नए प्रोजेक्ट्स पर काम करना किसी परेशानी से कम नहीं है लेकिन उनकी टीम दर्शकों की उमीदों पर खार उत्तरने के लिए कड़ी मेहनत करती है। ऐसे में रेयान का कहना होता है कि सफलता किसी इत्तिहास की देन या सौमात में मिलने वाली चीज नहीं है। सफल होने के लिए लगे रहना और डंटे रहना पड़ता है।



नेपाल से संबंध को लेकर भारत को सजग रहने की जरूरत



**चीन वहां तेजी से बढ़ा रहा है
अपना प्रभाव**

**सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नेपाल
के रिश्ते से जुड़ा है बिहार का
आर्थिक संबंध**

अखिलेश कुमार

नेपाल का नाम आते भारतीय लोगों में अपनत्व की भावना जग जाती है। भारतीयों की नजर में नेपाल एक अलग देश कम, पड़ोसी छोटे भाइ के के भाव को अधिक जगाता है। सदियों से भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक संबंध नेपाल से रहा है। त्रेता युग से ही इस देश से भारत का बेटी रोटी का संबंध कायम है। इस संबंध को और प्रगाढ़ करने की जरूरत है, वरना वहां चाइना अपने कूटनीतिक प्रयास और भारतीय शासन द्वारा उदासीनता का लाभ उठाते हुए प्रभाव बढ़ाने की पुरजोर कोशिश में लगा हुआ है।

आजादी के बाद 1950 से अब तक नेपाल पर जो भी समस्या आई, भारत ने उस समस्या को अपना माना तथा बिना कोई सामरिक समझौता के नेपाल की संकट की घड़ी में हमेशा चट्टान की तरह खड़ा रहा। 1950 में जब नेपाल पर संकट आई थी तो उस समय वहां के महाराज त्रिभुवन दिल्ली आए थे। तथा सैनिक सहायता

की मांग की थी, ताकि नेपाल में सेना और प्रशासन का पुनर्गठन किया जा सके। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भरपूर सहयोग किया था और उस समय से भारत नेपाल के बीच संबंधों की मजबूती और बढ़ती गई। इधर पिछले कुछ वर्षों से नेपाल में उत्पन्न अस्थिरता के बीच पड़ोसी मुल्क चीन वहां

अपना प्रभाव बढ़ाने में लगा हुआ है। पिछले 10 वर्षों के भीतर नेपाल में 10 सरकारें बनी। इस बीच पहाड़ी तथा मध्येशी लोगों के बीच संविधान में प्रावधारणों को लेकर उत्पन्न विवाद और 2015 में आंदोलन के दौरान भारत से खाद्य सामग्रियों के आवागमन बाधित होने का भरपूर फायदा चाइना ने उठाया। चीन नेपाल- पाकिस्तान गठजोड़ पर तेजी से काम कर रहा है। इसके तहत इन दोनों देशों में पूंजी निवेश को बढ़ा रहा है। भारत को नेपाल ने सबसे बड़ी झटका पिछले वर्ष पुणे में होने वाले सैनिक अभ्यास के दौरान दिया था। बिस्टेक देशों की इस सैनिक अभ्यास में भाग लेने की सहमति देने के बाद अतिम दौर में नेपाल ने इंकार कर दिया। भारत को दूसरा झटका तब लगा जब नेपाल ने चीन के साथ सागरमाथा फ्रेंड्स नामक सैन्य अभ्यास में शामिल होने की सहमति दे दी। चीन का यह जादू नेपाली संविधान तथा मध्येशी आंदोलन के बाद नेपाल में तेजी से चल रहा है। नेपाल में दशकों से अस्थिरता की स्थिति और भारत तथा नेपाल के बीच कूटनीतिक रस्साकशी के बीच चीन नेपाल की गतिविधियों पर गिर्द दृष्टि गड़ाए हुए हैं। पिछले दिनों नेपाल के प्रधानमंत्री केपी ओली ने जब चीन की यात्रा की तो वहां 14 मुद्दों पर समझौता हुआ। इन मुद्दों में व्यापार को बढ़ावा देना, चीन तिब्बत रेल लिंक का समझौता तथा बुनियादी ढांचा में सङ्करण बिजली परियोजना में निवेश का निर्णय महत्वपूर्ण है। चीन ने हाल के वर्षों में अपने कई बंदरगाहों को भी नेपाल को उपयोग के लिए अनुमति दे दी है।



वही दूसरी तरफ भारत नेपाल के साथ पूर्व में किए गए समझौते और चल रहे कार्यों में उदासीनता दिखा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी का जनकपुर दौरे के बाद जनकपुर तक रेल का निर्माण तो हुआ लेकिन तकनीकी कारणों से रेल का परिचालन बंद है। भारत और नेपाल के बीच हुए समझौते के तहत रक्सौल से काठमांडू तक रेल लिंक निर्माण कार्य में कोई प्रगति नहीं हो रही है। भारत सरकार ने सड़क तथा रेल कनेक्शन के लिए म्यानमार के अराकान टट बंदरगाह तक रेल और सड़क कनेक्शन निर्माण की बात कही थी। परंतु इस क्षेत्र में कदम आगे नहीं बढ़ सका है। मोतिहारी से तेल पाइपलाइन पर भी कार्य में कोई प्रगति नहीं है।

पिछले पछवाड़े नेपाल ने भारत के बिहार और उत्तर प्रदेश से जाने वाली फल सब्जी तथा अन्य खाद्य पदार्थों पर यह कहकर रोक लगा दी कि भारत से नेपाल आने वाले फल और सब्जियों में बड़े पैमाने पर कीटनाशक का उपयोग किया जा रहा है। जिससे उसके नारिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है और लोग बीमार हो रहे हैं। नेपाल ने कहा कि काठमांडू लैब में जांच होने और मानक पर खरा उत्तरने के बाद ही भारतीय खाद्य सामग्री नेपाल में आ सकता है। नेपाल के यह सारे कदम

प्रमाणित कर रहे हैं कि भारत और नेपाल के संबंधों में कहीं ना कहीं कटूता के भाव से इजाफा हो रहा है। और इसका पूरा फायदा चीन उठाने के लिए तत्पर है। जबकि भारत सरकार इस मामले को लेकर इतनी सवेदनशील दिखाई नहीं दे रही है जितनी दिखने चाहिए। भारत को लेकर नेपाल की महत्वाकांक्षा बढ़ी हो, फिर भारत नेपाल की आकांक्षाओं पर खरा नहीं उत्तर रहा है, इस बिंदु पर गंभीरता से विचार करते हुए भारत नेपाल संबंध को मजबूती प्रदान करने तथा कूटनीतिक प्रयास के तहत वहां अपना सामरिक महत्व बढ़ाने हेतु निर्णयिक कदम उठाने की जरूरत है। भारत नेपाल संबंध पर नेपाल संसदीय दल के उपनेता रामाशीष यादव कहते हैं कि नेपाल और भारत का सदियों से रिश्ता रहा है ऐसा नेपाल का रिश्ता किसी अन्य देश के साथ कभी नहीं हो सकता। जिस समय भारत और नेपाल नहीं था उस समय से इन दोनों देशों के बीच बेटी रोटी का रिश्ता है। जनकपुर से समाजवादी पार्टी के टिकट पर निर्वाचित रामाशीष यादव कहते हैं कि राजनीतिक कारणों से दिल्ली और काठमांडू के रिश्ते में खटास आते रहे हैं लेकिन उस रिश्ते का गंभीर असर कभी भी नेपाल के आम जनमानस पर नहीं पड़ा है। हालांकि राम अशीष यादव यह मानते हैं कि चाइना वन ब्रिज वन रोड के

नीति पर काम कर रहा है, तथा दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है। इसके लिए भारत को सजग रहना होगा। भारत को नेपाल के अलावे भूटान और म्यानमार जैसे छोटे-छोटे देशों में अपनी पकड़ मजबूत करनी होगी। उन्होंने स्वीकार किया कि नेपाल के पहाड़ी लोगों को ऐसा लगता है कि भारत मध्येशी लोगों को ज्यादा तरजीह देता है। लेकिन यह पहाड़ी लोगों की भूल है। भारत मध्येशी क्षेत्र से अधिक पहाड़ी क्षेत्रों में अपना पूंजी निवेश कर रहा है। भारत का ऐसा मानना है कि मध्येशी तो भारत के साथ हैं हीं। पहाड़ी लोगों के उन्नति के लिए भी विशेष प्रयास होनी चाहिए। जनकपुर से निर्वाचित सदन के उप नेता रामाशीष यादव नरेंद्र मोदी और आदित्यनाथ योगी से काफी प्रभावित हैं और उनका कहना है कि मोदी के स्वच्छता अभियान तथा बेटी बचाओ बेटी बेटी पढ़ाओ अभियान को नेपाल में भी चलाया जा रहा है। जनकपुर में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के आगमन के बाद रिश्ते और मजबूत हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारत की कुल आबादी सवा सौ करोड़ है और नेपाल से प्रगाढ़ा रिश्ता को देखते हुए यदि एक प्रतिशत भारतीय भी पर्यटक के रूप में नेपाल आते हैं तो नेपाल का कायाकल्प हो जाएगा।

मिशन 3500 क्या है पटना के चर्चित गुरु डॉ एम रहमान का मिशन पढ़िए उन्हीं के कलम से

अनूप नारायण सिंह

जिन छात्र-छात्राओं के अंदर वर्दी पाने का जुनून हो, जिन छात्र-छात्राओं को मंजिल पाने का जुनून हो, जिनके रांगों में दारोगा बनने का चाहत हो, जिसके आँखों में वर्दी पाने का जुनून झलक रहा हो, जिनके दिल में कंधे पर स्टार का जिह हो, उनको लिए 'दारोगा 3500' एक बेहत ही शुभ एवं सुनहरा अवसर है इस अवसर को किसी भी कीमत में न गवाए।

किसी के दिल में अगर दारोगा बनने का चाहत है तो वे किसी द्विदिक के तैयारी में जुट जाएं। परीक्षा के नजदीक आने का इतेजार न करें, बहुत से बच्चे हैं जो सोचते हैं कि जब परीक्षा 1-2 महीना रहेगा तब तैयारी करेंगे, कुछ लोग सोचते हैं कि जब परीक्षा का डेट निकल जायेगा तब तैयारी करेंगे... जी नहीं आप ऐसा बिल्कुल न सोचें हा ठीक है आप 1 महीना पहले भी पढ़कर परीक्षा तो दे सकते हैं पर क्या आप सिर्फ परीक्षा में भाग लेने के लिए तैयारी किये हैं? या आपको सबसे बेहतर बनना है??? अगर सिर्फ परीक्षा में भाग देने के लिए बैठना है तब तो ठीक है 1 महीना क्या 1 दिन भी तैयारी करके बैठ सकते हैं परंतु अगर आपको सफल होना है तो आपको पता होगा कि किसी भी कम्पटीटीशन में कितनी भीड़ रहती एक सीट पर हजारों स्टूडेंट्स रहते हैं इसलिए अगर परीक्षा में सफल होनी है सीट पर कब्जा करना है तो उसके लिए सबसे बेहतर करना होगा और सबसे बेहतर करने के लिए सबसे ज्यादा मेहनत



भी करना होगा इसलिए समय का इतेजार न करे क्योंकि समय आपका इतेजार नहीं करता। अभी से ही ईमानदारी एवं नियमित रूप तैयारी में जुट जाएं, किसी प्रकार की आगे किस्मत को भी घुटने टेकने पड़ेंगी। क्योंकि क्योंकि इंसान लड़े तो संघर्ष के बल पर हाथ की लकीरें बदल सकता है।

उसे दूर करने का प्रयत्न करें या फिर अपने करीबी से उस बारे में बात करें, हर प्रकार के बाधा से दूर हटकर तैयारी में लगे रहें, अगर परिवार में किसी की समस्या हो रही हो तो घरवाले बस कुछ समय मांगने की कोशिश करें। और पूर्ण रूप से एक रणनीति के साथ तैयारी में लगे रहें जब तक परीक्षा नहीं हो जाता। बेहतर करना है तो परीक्षा के डेट का इंतेजार कभी नहीं करें। आप अपना काम करे आयोग का जो काम है वो अपना करेगा।

बहुत से छात्र-छात्राओं को पैसा बहुत बड़ा बाधा बन जाता है तो पढ़ने के लिए क्रम में पैसा बाधा न बनने दे जिस किसी को भी पैसे की समस्या है वे मेरे से मिले, अद्यता अदिति गुरुकुल में कोई बच्चा पैसे की समस्या से कभी लौट कर नहीं जाता न कभी जायेगा।

दारोगा का स्पेशल बैच प्रारम्भ हो चुका है और भी बैच प्रारम्भ होने जा रहा है जो बच्चे अभी तक तैयारी में लगे नहीं हैं वे जल्दी जगे और तैयारी में जुटे, क्योंकि सफलता ऐसे ही नहीं मिलती है सफलता छीनी पड़ती है उसके लिए लड़ना पड़ता है, समय का इतेजार नहीं करे क्योंकि समय आपका इतेजार नहीं करती है कुछ दिन के लिए अपने आप को झोंक दी तैयारी में, फिर सफलता जरूर मिलेगी। हर पढ़ने वाले का परिणाम अच्छा आता है हा कभी कभी किस्मत साथ नहीं देती कोई बात नहीं ये सोच कर आगे बढ़े की परिश्रम के आगे किस्मत को भी घुटने टेकने पड़ेंगी। क्योंकि क्योंकि इंसान लड़े तो संघर्ष के बल पर हाथ की लकीरें बदल सकता है।

योग से जीवन निर्माण का नया दौर



अनादिकाल से भारतभूमि योग भूमि के रूप में विख्यात रही है। यहां का कण-कण, अणु-अणु न जाने कितने योगियों की योग-साधना से आप्लावित हुआ है। योगियों की गहन योग-साधना के परमाणुओं से अधिषिक्त यह माटी धन्य है और धन्य है यहां की हवाएं, जो योग-साधना के शिखर पुरुषों की साक्षी हैं। संसार के प्रथम ग्रंथ ऋष्वेद में कई स्थानों पर यौगिक क्रियाओं के विषय में उल्लेख मिलता है। भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि-मुनियों से ही योग का प्रारम्भ माना जाता है। इसके पश्चात पतंजली ने इसे सुव्यवस्थित रूप दिया। कभी भगवान महावीर, बुद्ध एवं आद्य शंकराचार्य की साधना ने इस माटी को कृतकृत्य किया था। इस महान् भूमि ने योग की गंगा को समूची दुनिया में प्रवाहित करके मानवता का महान् उपकार किया है।

भारत की धरा साक्षी है रामकृष्ण परमहंस की परमहंसी साधना की, साक्षी है यहां का कण-कण विवेकानंद की विवेक-साधना का, साक्षी है क्रांत योगी से बने अध्यात्म योगी श्री अरविन्द की ज्ञान साधना का और साक्षी है। योग साधना की यह मंदाकिनी न कभी यहां अवरुद्ध हुई है और न ही कभी अवरुद्ध होगी। इसी योग मंदाकिनी से आज समूचा विश्व आप्लावित हो रहा है, निश्चित ही यह एक शुभ संकेत है सम्पूर्ण मानवता के लिये। विश्व

योग दिवस की सार्थकता इसी बात में है कि सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, विश्व मानवता का कल्याण हो। सचमुच योग वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। लोगों का जीवन योगमय हो, इसी से युग की धारा को बदला जा सकता है। गीता में लिखा भी है—योग स्वयं की स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुँचने की यात्रा है। योग धर्म का वास्तविक एवं प्रायोगिक स्वरूप है। दरअसल परम्परागत धर्म तो लोगों को खूँटे से बाँधता है और योग सभी तरह के खूँटों से मुक्ति का मार्ग बताता है। इसीलिये मेरी दृष्टि में योग मानवता की न्यूनतम जीवनशैली होनी चाहिए। आदमी को आदमी बनाने का यही एक सशक्त माध्यम है। एक-एक व्यक्ति को इससे परिचित- अवगत कराने और हर इंसान को अपने अन्दर झांकने के लिये प्रेरित करने हेतु विश्व योग दिवस को और व्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के उपक्रम होने चाहिए। इसी से योगी बनने और अच्छा बनने की ललक पैदा होगी। योग मनुष्य जीवन की विसंगतियों पर नियंत्रण का माध्यम है।

किसी भी व्यक्ति की जीवन-पद्धति, जीवन के प्रति वैष्णोण, जीवन जीने की शैली-ये सब उसके विचार और व्यवहार से ही संचालित होते हैं। आशुनिकता की अंधी दौड़ में, एक-दूसरे के साथ कदमताल से चलने

की कोशिश में मनुष्य अपने वास्तविक रहन-सहन, खान-पान, बोलचाल तथा जीने के सारे तौर-तरीके भूल रहा है। यही कारण है, वह असमय में ही भाति-भाति के मानसिक/भावनात्मक दबावों के शिकार हो रहा है। मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाने से शारीरिक व्याधियां भी अपना प्रभाव जमाना चालू कर देती हैं। जितनी आर्थिक संपन्नता बढ़ी है, सुविधादायी संसाधनों का विकास हुआ है, जीवन उतना ही अधिक बोझिल बना है। तनावों/दबावों के अंतहीन सिलसिले में मानवीय विकास की जड़ों को हिला कर रख दिया है। योग ही एक माध्यम है जो जीवन के असन्तुलन को नियोजित कर जीवन में शांति, स्वस्थता, संतुलन एवं खुशहाली का माहौल निर्मित करता है।

अंतःकरण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम तथा सत्संग आदि अनेक साधन हैं। ये समस्त साधन विषयासंक्ति के त्याग पर बल देते हैं। विषयासंक्ति का त्याग ही वास्तविक विषय-त्याग है। आसंक्ति अविद्याजनित मोह से होती है। जहां तक बुद्धि मोह से ढकी हुई है, वहां तक विषयों से वास्तविक वैराग्य नहीं हो सकता, कैवल्य प्राप्ति एवं मोक्ष तो संभव ही नहीं है। कहा गया है कि जब हमारा जीवन सांसारिक दलदल से निकल जाएगा तभी वास्तविक सुख एवं

शाति अवतरित होगी। मानवीय व्यक्तित्व को समग्रता से उद्घाषित परिभाषित करने वाले चार सकार हैं- स्वास्थ्य, सौंदर्य, शक्ति और समृद्धि। इनकी प्राप्ति और सुरक्षा के लिए प्रत्येक समझदार व्यक्ति सतत प्रयत्नशील रहता है पर अपेक्षा है उल्लेखित चारों तत्त्व श्रृंखलाबद्ध हों, एक दूसरे से जुड़े हुए हों। इन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में बांट कर जीवन को समग्रता प्रदान नहीं की जा सकती। उक्त सकार चतुष्टी को एक सूत्रता में जोड़ने वाला सशक्त माध्यम है योग यानी स्वस्थ मनोभूमि का निर्माण। मन का धरातल यदि स्वस्थ न हो तो स्वास्थ्य कब क्षीण हो जाए, सौंदर्य पृष्ठ कब कुम्हला जाए, शक्ति कब चुक जाए और समृद्धि की इमारत कब भरभरा कर गिर पड़े, कहा नहीं जा सकता। अतः योग को जीवनशैली बनाना आवश्यक है।

भारत में विभिन्न योग पद्धतियां प्रचलित हैं, मेरे गुरु आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के रूप में नवीन ध्यान पद्धति प्रदत्त की है, जो अंतःसौन्दर्य को प्रकट करने एवं उसे देखने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का यह विलक्षण प्रयोग है। यह योग मनुष्य को पवित्र बनाता है, निर्मल बनाता है, स्वस्थ बनाता है। यजुर्वेद में की गयी पवित्रता-निर्मलता की यह कामना हर योगी के लिए काम्य है कि ह्याह्यादेवजन मुझे पवित्र करें, मन में सुसंगत बुद्धि मुझे पवित्र करे, विश्व के सभी प्राणी मुझे पवित्र करें, अभिन्न मुझे पवित्र करें। हङ्ग योग के पथ पर अविमांगति से वही साधक आगे बढ़ सकता है, जो चित्त की पवित्रता एवं निर्मलता के प्रति पूर्ण जागरूक हो। निर्मल चित्त वाला व्यक्ति ही योग की गहराई तक पहुंच सकता है।

बटेंड रसेल अपने योगपूर्ण जीवन के सत्यों की अधिव्यक्ति इस भाषा में देते हैं- ह्याह्याअपने लम्बे जीवन में मैंने कुछ ध्रुव सत्य देखे हैं- पहला यह है कि बृहा, द्वेष और मोह को पल-पल मरना पड़ता है। निरंकुश इच्छाएं चेतना पर हावी होकर जीवन को असंतुलित

और दुःखी बना देती हैं। एक साधक आवश्यकता एवं आकांक्षा में भेदरेखा करना जानता है। इसलिए इच्छाएं उसे गलत दिशा में प्रवृत्त नहीं होने देती। हङ्ग आज योग दिवस के माध्यम से सारा मानव जाति आत्म-मंथन की ओर प्रवृत्त हो रही है, निश्चित ही दुनिया में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देगा।

योग किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति या भाषा से नहीं जुड़ा है। योग का अर्थ है जोड़ना, एकीकरण करना। अच्छी एवं सकारात्मक ऊजाओं को संगठित करने एवं परम परमात्मा से साक्षात्कार का यह अनुठान माध्यम है। इसलिए यह प्रेम, अहिंसा, करुणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग, जीवन की प्रक्रिया की छानबीन है। यह सभी धर्मों से पहले अस्तित्व में आया और इसने मानव के सामने अनंत संभावनाओं को खोलने का काम किया। आंतरिक व आत्मिक विकास, मानव कल्याण से जुड़ा यह विज्ञान सम्पूर्ण दुनिया के लिए एक महान तोहफा है।

आज योगिक विज्ञान जितना महत्वपूर्ण हो उठा है, इससे पहले यह कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। आज हमारे पास विज्ञान और तकनीक के तमाम साधन मौजूद हैं, जो दुनिया के विध्वंस का कारण भी बन सकते हैं। ऐसे में यह बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे भीतर जीवन के प्रति जागरूकता और ऐसा भाव बना रहे कि हम हर दूसरे प्राणी को अपना ही अंश महसूस कर सकें, वरना अपने सुख और भलाई के पीछे की हमारी दौड़ सब कुछ बर्बाद कर सकती है। इन्हीं भावों के साथ अहिंसक विश्व भारती विश्व में योग को स्थापित करने एवं अहिंसक समाज रचना के संकल्प को आकार देने के लिये प्रयत्नशील हैं।

कहते हैं कि दुनिया की कुल आबादी में लगभग दस करोड़ व्यक्ति किसी न किसी मनोरोग से पीड़ित है। एक अध्ययन के अनुसार अकेले भारतवर्ष में ही दो करोड़ से अधिक लोग मनोरोगी हैं। जाने-अनजाने प्रत्येक

व्यक्ति किसी न किसी मनोरोग से सदा पीड़ित रहता है। चिंता, घबराहट, नींद की कमी, निराशा, चिड़चिड़ापन, नकारात्मक सोच-ये सब मनोरोग के लक्षण हैं। यह मानसिक पंगुता की शुरूआत है। इससे मस्तिष्क कुठित हो जाता है। बौद्धिक स्फुरण अवरुद्ध हो जाती है। दिमागी मशीनरी के जाम होते ही शरीर-तंत्र भी अस्त-व्यस्त और निष्क्रिय हो जाता है। असंतुलित मन स्वयं रोगी होता है और तन को भी रोगी बना देता है। इस तरह एक बीमार एवं खडित समाज का निर्माण हो रहा है, जिसे योग के माध्यम से ही संतुलित किया जा सकता है।

इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि इस आधुनिक युग में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। हमारे रहन-सहन, बोल-चाल और खान-पान बिल्कुल ही बनावटी हो चुकी है। हमारी जिंदगी मशीनों पर पूरी तरह से निर्भर हो चुकी है। हमे एहसास भी नहीं है लेकिन हम इस दुनिया की ओर तेजी से आगे बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में योग ही वह कारगर उपाय है जो हमें बनावटी दुनिया से मुक्त करके प्रकृति और आध्यात्म की दुनिया की ओर ले जाती है, प्रकृतिस्थ बनाता है।

अगर लोगों ने अपने जीवन का, जीवन में योग का महत्व समझ लिया और उसे महसूस कर लिया तो दुनिया में व्यापक बदलाव आ जाएगा। जीवन के प्रति अपने नजरिये में विस्तार लाने, व्यापकता लाने में ही मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान है। उसे निजता से सार्वभौमिकता या समग्रता की ओर चलना होगा। भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, हमने गत वर्षों में अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रों में योग दिवस के सफलतम आयोजनों के माध्यम से दुनिया में योग का परचम फहराने का प्रयत्न किया, जो इस पूरी धरती पर मानव कल्याण और आत्मिक विकास की लहर पैदा करने की आहट थी।



पॉलिटेक्नीक कोर्स कर बनाये एक अच्छा कैरियर

इंजीनियरिंग करने में कई साल और कई सारा पैसा लगता है। इसके बाद भी नौकरी लगे न लगे इसकी कोई गाँठी नहीं। ऐसे में पॉलिटेक्नीक एक ऐसा कोर्स है जिसकी मदद से आप कम पैसे और कम समय में एक अच्छी जॉब पा सकते हैं।

क्या है पॉलिटेक्नीक कोर्स

पॉलिटेक्नीक कोर्स इंजीनियरिंग की तरह ही है। इंजीनियरिंग एक डिग्री कोर्स है और पॉलिटेक्नीक एक डिप्लोमा कोर्स है। पॉलिटेक्नीक कोर्स करने में इंजीनियरिंग के मुकाबले कम पैसा और समय लगता है। पॉलिटेक्नीक में इंजीनियरिंग की तरह ही कई सारी ब्रांच होती है जिसमें से आप जिस सब्जेक्ट में रुचि रखते हैं उसे चुन सकते हैं। वहीं इसमें एक फायदा और होता है कि आप इस डिप्लोमा को पूरा करके डायरेक्ट इंजीनियरिंग के दूसरे साल में एडमिशन ले सकते हैं।

पॉलिटेक्नीक कोर्स के लिए योग्यता

पॉलिटेक्नीक कोर्स करने के लिए उम्मीदवार का 10वी या 12वी पास होना जरूरी है। पॉलिटेक्नीक कॉलेज में एडमिशन के लिए आपको इंजीनियरिंग की तरह ही एक टेस्ट देना होता है। जिसके अंकों के आधार पर आपको सरकारी कॉलेज मिलता है। कई प्राइवेट कॉलेज में आप सीधे बिना एग्जाम के भी एडमिशन पा सकते हैं। आज देश में कई निजी कॉलेज इस कोर्स को चला रहे हैं। पॉलिटेक्नीक में एडमिशन के लिए होने वाली एग्जाम हर राज्य में अलग-अलग होती है जिसके नाम भी अलग-अलग होते हैं। पॉलिटेक्नीक में एडमिशन के लिए होने वाली एग्जाम में आप जितने ज्यादा मार्क्स लाएंगे आपको उतना अच्छा कॉलेज मिलेगा और आपकी फीस भी कम लगेगी।

पॉलिटेक्नीक कोर्स के फायदे

पॉलिटेक्नीक कोर्स करने का पहला फायदा है कि ये आप दसवीं से ही कर सकते हैं। यानि जैसे ही आपने दसवीं पास की वैसे ही आप इसके कॉलेज में एडमिशन ले सकते हैं। आपको बता दें कि कई पॉलिटेक्नीक कोर्स में बारहवीं पास होना जरूरी है। इन कोर्स में आपको जो भी सिखाया जाता है वो प्रैक्टिकल तरीके से सिखाया जाता है जिससे आपकी नौकरी काफी अच्छी और प्रैक्टिकल होती है। पॉलिटेक्नीक के कोर्स को करने के बाद आपकी नौकरी लगने की संभावनाएं काफी ज्यादा बढ़ जाती है क्योंकि इस कोर्स को करने के बाद नौकरी का ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ता है। ऐसे कोर्स को पूरा करने के बाद आप सीधे इंजीनियरिंग के दूसरे साल में



एडमिशन ले सकते हैं। देश में निकलने वाली कई सारी सरकारी नौकरियों जैसे रेलवे, एसएससी में पॉलिटेक्नीक डिप्लोमा वालों को आसानी से नौकरी मिल जाती है।

पॉलिटेक्नीक में कैसे लें एडमिशन

पॉलिटेक्नीक में एडमिशन लेने के लिए आप दसवीं में साइंस, मैथेस और इंग्लिश अच्छे से पढ़ें क्योंकि इन्हीं से प्रश्न इंट्रेस एग्जाम में पूछे जाते हैं। अगर आपकी इन सब्जेक्ट पर पकड़ अच्छी होगी तो आप इंट्रेस एग्जाम में अच्छे मार्क्स ला पाएंगे। दसवीं पास होते ही आप पॉलिटेक्नीक की इंट्रेस एग्जाम के लिए अप्लाई करें। ये हर स्टेट के लिए अलग होती है तो नजर रखें कि आपकी स्टेट में ये कब होगी। एग्जाम में अच्छे मार्क्स

लाने की कोशिश करें जिससे आपका एडमिशन सरकारी कॉलेज में हो सके। एग्जाम देने के बाद इस कोर्स के लिए काउंसलिंग होती है। काउंसलिंग में आपको कॉलेज और आपकी ब्रांच चुनना होती है। ये पूर्णतः ऑनलाइन होती है। यहां आपकी रैंक के हिसाब से यानि आपके मार्क्स के हिसाब से आपको कॉलेज और ब्रांच बताई जाती है जिन्हें आपको चुनना होता है। पॉलिटेक्नीक में एडमिशन होने के बाद इसकी 3 साल की पढ़ाई होती है। जहां आपको प्रैक्टिकली आपकी फील्ड का नौकरी दिया जाता है। ध्यान रखें पढ़ाई के साथ-साथ कहीं न कहीं इंटर्नशिप भी करें जिससे कॉलेज खत्म होने के बाद आपको तुरंत नौकरी मिल जाए।

1 पॉलिटेक्नीक कोर्स में कई बेहतर संभावनाएं हैं जो अन्य कोर्स में नहीं हैं।

हिंदू-मुस्लिम एकता की अनूठी मिसाल है बिहार का यह शिवमंदिर



समस्तीपुर जिला मुख्यालय से करीब 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम मोरवा प्रखण्ड के सुल्तानपुर मोरवा में स्थापित हैं- खुदनेश्वर महादेव मंदिर का नाम खुदनी नामक मुस्लिम महिला के नाम पर रखा गया है, जिसको इस स्थान के खुदाई के दौरान शिवलिंग मिला और तत्पश्चात वह भगवान शिव की भक्त बन गयी। खुदनी बीबी की मृत्यु प्रश्चात उसकी इच्छानुसार उसके पार्थिव शरीर को शिवलिंग से एक गज दक्षिण में दफना दिया गया। इसके बाद इस स्थान का नाम खुदनी बीबी के नाम पर खुदनेश्वर स्थान रख दिया गया। यह सामाजिक सौहार्द एवं साम्प्रदायिक एकता का अनुपम स्थल है। यहां बाबा खुदनेश्वर के शिवच्छलग एवं खुदनी बीबी के मजार की पूजा अर्चना श्रद्धा एवं विश्वास के साथ की जाती है। यह स्थल अपने आप में अद्वितीय है।

जनश्रुति

प्रचीन चक्रवर्दनी है कि सात सौ वर्ष पूर्व यहां घनघोर जंगल था जहां आस पास के लोग मवेशी चराया करते थे। वहीं मुस्लिम बाला खुदनी बीबी अक्सर गाय चराया करती थी। परन्तु, शाम के समय गाय के थन से दूध नहीं निकलता था। इस पर परिवार बालों को आश्रय हुआ। एक दिन गाय चराने के क्रम में खुदनी ने देखा कि गाय एक झूमट में खड़ी है तथा उसके थन से अपने आप एक निश्चित स्थान पर दूध गिर रहा है। यह देख उसे बड़ा आश्र्य हुआ। इस घटना को जब लोगों ने सुना तो उस स्थल पर खुदाई की गई। जहां भव्य शिवच्छलग दिखाई पड़ा। खुदाई के क्रम में कुदाल लगने से शिवच्छलग का उपरी भाग कट गया जो साक्ष्य के रूप में आज भी देखा जा सकता है। खुदनी बीबी के मरणोपरान्त शिव के स्वप्न के मुताबिक शिवच्छलग के



बगल में मात्र डेढ़ गज की दूरी पर उन्हें दफनाया गया। उन्हीं के नाम पर इस स्थल का नामकरण खुदनेश्वर स्थान पड़ा। ब्रिटिश समय में नरहन स्टेट ने 1858 में एक मंदिर का निर्माण कराया। जिसकी देख-रेख के लिए पुजारी भी नियुक्त किया गया। कालान्तर में मंदिर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था को देख आपसी सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ किया गया। निर्माण के क्रम में 2008 में बिहार धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष किशोर कुणाल का ध्यान आकर्षित कराया गया। न्यास बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा स्थल निरीक्षण के उपरान्त पंजीकरण के साथ आर्थिक सहायता करते हुए पर्यटन स्थल बनाने की घोषणा की गई। इस धाम का पंजीयन संख्या- "3783 श्री शिव मंदिर खुदनेश्वर धाम" मोरवा है।

आवागमन

समस्तीपुर जिला मुख्यालय से बस के द्वारा दक्षिण-पश्चिम में 15 किमी पर गंगापुर चौक है। वहां से लगभग 2 किमी दक्षिण खुदनेश्वर धाम अवस्थित है। ताजपुर चौक से 5 किमी दक्षिण-पूर्व की ओर खुदनेश्वर धाम अवस्थित है जहां से निजी वाहन के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। मंदिर के दक्षिण दिशा में मात्र 5 किमी की दूरी पर एनएच 103 पर सैरेया चौक है, जहां से निजी वाहन द्वारा धाम तक पहुंचा जा सकता है। पूजा अर्चना-वैसे तो यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है, परन्तु पूरे सावन, शिव पंचमी एवं महा शिवरात्रि के अवसर पर भारी मेला का भव्य आयोजन होता है। इस अवसर पर आस-पास का क्षेत्र भक्ति रस में सराबोर रहता है, तथा हर-हर बम-बम के मत्रोच्चार से दिशाएं निनादित हो उठती हैं।

समझे साइबर क्राइम को, बची रहेगी गाढ़ी कमाई

अगर आपने पढ़ ली यह पूरी खबर तो कभी नहीं होगी परेशानी



आज साइबर अपराध पुलिस के लिए बहुत बड़ी चुनौती साबित हो रही है। आए दिन साइबर अपराधी किसी न किसी के खाते से उनकी गाढ़ी कमाई लूट लेते हैं। अगर आप साइबर अपराध से बचना चाहते हैं तो यह पूरी खबर अवश्य पढ़ें।

ऐसे बचें साइबर अपराधियों से

अपने इंटरनेट की बैंकिंग और बैंकिंग लेन-देन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साइबर

कैफे, ऑफिस, पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान पर ना करें। किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पसंनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें। जब कभी भी आप अपने इंटरनेट बैंकिंग या किसी भी जरुरी अकाउंट में लॉगिन करें, तो काम खत्म कर, अपने अकाउंट को लॉग आउट करना न भूलें। जब आप लॉगिन कर रहे हों, तब इस बात पर जरूर ध्यान दें कि पासवर्ड टाइप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे ऑप्शन रिमेंडर पासवर्ड

या कीप लॉगिन में क्लिक न करें।

साइबर अपराधी फेक साइट के माध्यम से हटाते हैं लोगों को

लोगों को धोखा देने के लिए और अपनी चंगुल में फसाने के लिए अधिकतर स्कैमर्स (धोटाले बाज) फेक साइट को प्रयोग में ला रहे हैं, जिससे की लोगों को पता भी ना चले और उनका काम भी आसानी से हो जाए।

आइये जानते हैं अखिर फेक साईट होती क्या है ?फेक साईट के नाम से ही प्रतीत हो जाता है कि यह एक झूठी वेबसाईट है,जो हूबू आपके बैंक के वेबसाईट, खरीदारी करने वाली साईट या पेमेंट गेटवे के जैसा इंटरफ़ेस होता है ।ऑनलाइन खरीदारी या कोई भी ऑनलाइन लेन-देन करने के लिए जैसे ही आप, यहाँ अपने क्रेडिट कार्ड,डेबिट कार्ड,इंटरनेट बैंकिंग का यूजर नेम,लॉगिन पासवर्ड ट्रांजिक्शन पासवर्ड या ओ.टी.पी.इंटर करते हैं,तो वो इस डिटेल्स को कौपी कर लेता है और बाद में इसका प्रयोग कोई भी गलत तरीके से गलत कार्यों के लिए कर सकता है ।इस शातिर प्रक्रिया को आप और हम समझ नहीं पाते हैं कि यह गलत ट्रांजिक्शन कैसे हो गया ?फेक वेबसाईट का संचालन एक संगठित ग्रुप के क्रिमिनल्स के द्वारा किया जाता है ।आप अपने कम्प्यूटर में अगर इंटरनेट का प्रयोग करते हैं,तो सबसे पहले आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर को पासवर्ड से सुरक्षित कीजिए, जिससे कोई दूसरा व्यक्ति बिना आपके जानकारी के आपके कम्प्यूटर प्रयोग ना कर सके ।अगर आपका कम्प्यूटर सुरक्षित नहीं होगा,तो क्रिमिनल या कोई व्यक्ति आपके कम्प्यूटर से जरूरी जानकारियाँ चुरा सकता है और गलत कार्यों के लिए आपके कम्प्यूटर का इस्तेमाल भी कर सकता है ।इसके साथ आप यह भी चेक करें की आपके कम्प्यूटर में लेटेस्ट सिक्योरिटी अपडेट इन्स्टाल्ड है या नहीं ?साथ ही यह भी चेक करें की आपका एंटी वायरस और एंटी स्पाई वेयर सॉफ्टवेयर ठीक से काम कर रहा है या नहीं ?उसके बैंडर से जरूरी अपडेट्स आ रहा है या नहीं ?

हमेशा ए स्ट्रांग पासवर्ड का करें प्रयोग

हमेशा बहुत स्ट्रांग पासवर्ड का प्रयोग करें,जिससे आसानी से किसी को पता न चले ।क्वोइक साईबर क्रिमिनल प्रोग्राम ऐसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का निर्माण करते हैं जो कि आपके साधारण से पासवर्ड को आसानी से अनुमान कर सकता है ।ऐसे में अपने आप को बचाने के लिए आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जिसका कोई दूसरा अनुमान ना लग सके और आप आसानी से उसे याद भी रख सकें ।आपका पासवर्ड कम से कम आठ क्रेक्टर का हो,जिसमें लोअर केस लेटर्स,अप केस लेटर्स, नंबर्स और स्पेशल क्रेक्टर्स का मिश्रण हो ।अगर आप एक से अधिक अकाउंट्स का प्रयोग करते हैं,तो सभी के लिए अलग- अलग पासवर्ड का प्रयोग करें । अपना पासवर्ड कभी भी अपने नाम,पता,गली नंबर,जन्म तिथि, परिवार के सदस्यों के नाम, विद्यालय के नाम या अपने वाहनों के नंबर पर न बनाएं,जिसका दूसरों के द्वारा आसानी से अनुमान लगाया जा सके ।

बैंकिंग ट्रांजैक्शन करें सुरक्षित

अपने इंटरनेट बैंकिंग और बैंकिंग ट्रांजिक्शन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साईबर कैफे,ऑफिस,पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान पर ना करें ।किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें ।जब कभी भी आप अपने इंटरनेट



बैंकिंग या किसी भी जरूरी अकाउंट में लॉगिन करें,तो काम खत्म कर अपने अकाउंट को लॉग आउट करना न भूलें ।जब आप लॉगिन कर रहें,हो तब इस बात पर जरूर ध्यान दें कि पासवर्ड टाइप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे हैं ।ऑप्शन रिमेंडर पासवर्ड या कीप लॉगिन में कभी भी क्लिक ना करें ।कभी भी आप अपने बैंकिंग यूजर नेम,लॉगिन पासवर्ड, ट्रांजिक्शन पासवर्ड,ओ.टी.पी., गोपनीय प्रश्नों या गोपनीय उत्तर को अपने मोबाइल,नोटबुक, डायरी,लैपटॉप या किसी कागज पर ना लिखें ।हमेशा आप ऐसा पासवर्ड सेट करें,जो की आपको आसानी से याद रहे और आपको इसे कहीं लिखने की आवश्यकता ना पड़े ।

अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर रखें पैनी नजर

अपने सोशल मीडिया के अकाउंट को लगातार देखते रहें ।अगर कभी आप अपने सोशल साइट्स के अकाउंट को डिलीट कर रहे हैं, तो उससे पहले आप अपनी सारी पर्सनल जानकारी को डिलीट कर दें और फिर उसके बाद आप अपना अकाउंट डीएक्टिवेट करें या डिलीट करें ।आप किसी भी स्पैम ई-मेल का उत्तर ना दें । अंजान ई-मेल में आए अटैचमेंट्स को कभी

खोल कर ना देखें या उस पर मौजूद लिंक पर क्लिक ना करें ।इसमें वायरस या ऐसा प्रोग्राम हो सकता है,जिसको क्लिक करते ही आपका कम्प्यूटर उनके कंट्रोल में जा सकता है या आपके कम्प्यूटर में वायरस के प्रभाव से कोई जरूरी फाईल डिलीट हो जाए और आपका ऑपरेटिंग सिस्टम करप्ट हो जाए ।

सही साइट का ही करें प्रयोग, रहेंगे सुरक्षित

अगर किसी वेबसाईट पर कोई पॉपअप खुले और आपको कुछ आकर्षक गिफ्ट या इनाम ऑफर करे तब आप अपनी पर्सनल जानकारी या बैंक अकाउंट नंबर या बैंक से संबंधित कोई भी जानकारी ना भरें ।अगर आप किसी ऑफर का लाभ लेना चाहते हैं,तो आप सीधे रिटेलर के वेबसाईट,रिटेल आउटलेट या अन्य जायज साइट से संपर्क करें ।आज के दौर में इंटरनेट हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है लेकिन इंटरनेट पर जरा सी नासमझी स्कैमर्स को साईबर क्राईम के लिए खुला निम्रण देता है ।प्रक्ति विश्वास है कि अगर आप इन सभी बिंदुओं पर गैर करते रहते हैं,तो आप,कभी भी साईबर क्राईम के शिकार नहीं होंगे ।

(लेखक पुलिस इंस्पेक्टर और साईबर क्राईम सेल के विशेषज्ञ हैं ।)

आखिर मासूमों का शोषण कब तक



सुधांशु रंजन

प्रायः सभी धर्म यौन सम्बंधों के मामले में आत्म-संयम की सीख देते हैं। लेकिन विंडबना है कि इनके प्रतिनिधि एवं पुजारी ऐहिक आनंद में डूबे रहते हैं और अपने धार्मिक प्रभामण्डल का लाभ उठाते हुए अपने-अपने समुदाय की भोली-भाली स्त्रियों का दैहिक शोषण करते हैं। कई स्वयंभू हिंदू संत बलात्कार एवं हत्या के आरोपों में जेल की हवा खा रहे हैं। आसाराम बापू तथा राम रहीम को तो निचली अदालत ने बलात्कार का दोषी भी करार दिया है।

हाल के वर्षों में कई सिस्टरों ने फादरों एवं विशेषों के ऊपर यौन शोषण का आरोप लगाया है। सबसे हालिया हंगामा जालंधर के विशेष फ्रैंको मुलक्कल के विरुद्ध है। कोट्टायम की एक नन ने

आरोप लगाया है कि उन्होंने उनका कई बार बलात्कार किया। उन्होंने अपनी फरियाद कई जगह रखी, लेकिन कहीं उनकी गुहार नहीं सुनी गयी। अंत में थक हार कर उन्होंने भारत में पोप के राजदूत से मामले की निष्पक्ष जांच कराने की विनती की। काफी दिनों तक मामले में कोइ प्रगति नहीं हुई, किंतु अब केरल पुलिस ने जांच प्रारंभ की है। उसने बलात्कार की पुष्टि भी की है। जैसा कि ऐसे मामलों में अकसर होता है, अभियुक्तों को उनकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा एवं उनके मजहब की छवि को धूमिल करने की साजिश की बू आती है और फ्रैंको ने भी ऐसा ही कहा है। वैसे केवल आरोपों के आधार पर कोई धारणा बनाना उचित नहीं है।

पूर्व नन सिस्टर मेरी चैंडी ने साफगोई से लिखी आपनी आत्मकथा ह्यहनन्या निरंजन वाले स्वातिल्ल से भूचाल पैदा कर दिया था। इसमें गर्भवती

ननों एवं भोगी फादरों की अनेक दिल दहलाने वाली कहानियां हैं। सिस्टर जेसमे ने ह्यहाएमेनः दि ऑटोबायोग्राफी ॲफ ए ननल्हू में कॉन्वेंट के अंदर की घिनौनी हरकतों का वर्णन बेलाग लपेट किया है और यह भी कि उनका यौन शोषण कैसे किया गया। यह सब आश्रमों तथा डेरों पर भी लागू होता है।

धर्म में जो उपदेश दिये जाते हैं और जैसा इसके अनुयायी करते हैं, दानों में कोई तालमेल नहीं होता। यह पाखड निंदनीय है किंतु उतना नुकसानदेह नहीं। स्थिति खतरनाक मोड़ लेती है जब तथा कथित धर्मोपदेशक मासूम अनुयायियों का शिकार करते हैं। प्रारंभ में कैथोलिक पादरी पोप बनने के पूर्व ब्रह्मचारी नहीं होते थे। वे शादी-शुदा होते थे। कुछ पोप के रूप में निवार्चित होने के बाद भी यौन सम्बंध रखते थे जब कि कुछ अन्य पर आरोप लगा कि उन्होंने पोप रहते हुए

भी यौन सम्बंध रखे। यह परगमन एवं व्यमिचार था जिसे महापाप माना जाता था। इसलिए दूसरी लैटरेन काउंसिल (1139) ने पुरोहित बनने के लिए ब्रह्मचर्य को एक आवश्यक शर्त बनाकर विवाह करने की गुंजाइश समाप्त कर दी। ईसाईयत समलैंगिकता का विरोध करती थी, किंतु पोप पॉल पष्ठम समलैंगिकता थे। पोप बनने के बाद उन्होंने अपने पुरुष मित्र को अपना सचिव बना लिया। उनके उत्तराधिकारी उदार एवं तेजस्वी थे। उन्होंने मैसोनिक लाजों से सम्बंध रखने वाले बिशपों तथा कार्डिनलों की जांच का आदेश दिया। कैथॉलिक चर्च ने इन लाजों को अवैध घोषित कर दिया था। दुनिया के सबसे ऐश्वर्यवान व्यक्ति ही इनके सदस्य बनते थे। इनमें गुप्त कर्मकाण्ड होते थे जिनमें रंगरेलियां शामिल थीं। जांच से पता चला कि वैटिकन के कई शीर्ष पदाधिकारी प्रीमैसेन थे। इसलिए पोप ने उन सबों को पद से हटा दिया।

काय्युनिस्ट नेता जेड ए अहमद ने अपनी आत्मथा ह्याह्यामेर जीवन की कुछ यादेंह्ल में एक घटना का जिक्र किया है जिसने उनके मन में धर्मिक कर्मकाण्डों के प्रति विकारत पैदा कर दी। वह घटना सिध्ध प्रांत के नौशहरा फिरोज जिले की है। उन्होंने लिखा है, ह्याह्याएक दिन थाना इंचार्ज गुलाम कादिर थाने के सहन में हस्ब मामूल दरबार जमाये बैठे थे, तभी एक कद-काठी वाले सज्जन थाने में तशरीफ लाये। वह लंबा चोंगा और पगड़ी पहने हुए थे। उनको देखते ही गुलाम कादिर सहित सभी लोग खड़े हो गये। उनमें से कई लोगों ने अपनी जगह खाली कर दी। वह मंजर देखकर मुझे काफी अचरज हुआ। जनाब गुलाम कादिर साहब को किसी के आने पर इस तरह खड़ा होते मैंने कभी नहीं देखा था।ह्ल्हां बाद में उन्हें पता चला कि वह पीर साहब थे। उनके दोस्त शाकिर ने उन्हें पीरों के रूतबे के बारे में बताया। उन्होंने लिखा है, ह्याह्याउसका कहना था कि इन पीरों को मजहबी मुखिया का रूतबा हासिल है, जिसका वह लोग बहुत ही बेजा इस्तेमाल करके फायदा उठाते हैं। एक पीर जब अपना घर छोड़कर किसी दूसरे गांव में जाता है तो कई-कई दिन तक वहाँ डेरे डालता है। वह किसी बडेरा का मेहमान बनता है, जहाँ उसके लिए खास इंतजाम किया जाता है। उसके लिए अलग से एक जवान और खूबसूरत लड़की मुहैया करायी जाती है, जिसके लिए जरूरी है कि वह अद्भुती हो। किसी गरीब मुसलमान के घर से बुलायी गयी उस लड़की को पहले नहला-धुलाकर और साफ कपड़े पहनाकर ह्यापाकहूं किया जाता है, तब जाकर वह ह्यापीरजी डाचीह्ल बनती है। ह्यापीरजी डाचीह्ल क्या है, मेरे इस हैरानी भरे सवाल को सुनकर शाकिर ने कहा ह्याहां, पीरजी डाची।हां आप नहीं समझोगे, पीरजी डाची का मतलब है ह्यापीरजी की ऊंटनी।ह्ल.. इस गरीब खिदमतगर लड़की को रात में पीरजी के साथ ह्याहमबिस्तरह होना पड़ता है, यानी बीवी की तरह रात गुजारनी पड़ती है और वह मना नहीं कर सकती क्यों कि हर तरफ से वह घिरी हुई महसूस करती है, बहुआलगने का डर भी लगा रहता है।... एक बार जो लड़की पीरजी डाची बनने को मजबूर होती है, वह तजिंदरी पीरजी डाची बनी रहने को अभिशप हो जाती है। एक बार, बास एक बार, दो-चार गांवों पीरजी के साथ गुजार लेने के बाद न तो वह शादी कर सकती है और न ही घर बसा सकती है।ह्ल जब अहमद ने उनसे पूछा कि



लोग इस अमानवीय, घृणित रिवाज से क्यों चिपके हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, ह्याह्याकार करने की हिम्मत किसमें है। सैयदों-पीरों को लोग दूसरा खुदा जो मानते हैं। मजहब की ठेकेदारी उन्होंने के हवाले है। जो वह कहें वही मजहब है।ह्ल अहमद ने लिखा है कि शाकिर पुलिस बल में महज एक अर्दली थी, किंतु उनके लिए वही कबीर था जिसने मजहब और उसकी आड़ में चलने वाली धिनौनी हरकतों और मुल्जिमाना साजिशों से उनका परिचय कराया।

सेक्स एक वर्जित विषय है, परंतु धर्मशास्त्रों में इस पर विस्तार से चर्चा है। लिंगापूजा प्रकृति की उत्पादक शक्ति की पूजा का प्रतीक है जिसका सम्बंध उर्वरता से है। पूरी दुनिया में लिंग प्रतीक पाये जाते हैं जिन्हें पुनरजीवन की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। प्राचीन यूनान में यह प्रिएप्स एवं ऑर्फिक तथा डायोनीसिएक पंथ के चारों ओर केंद्रित है। मिस्र में ओसिरिस की पूजा में यह परिलक्षित होता है। रोम में साइबील एवं ऐटिस का पंथ इसका सबसे चर्चित रूप है। इसका वार्षिक ह्यारक दिवसहूं एक अजीबो-गरीब त्यौहार था जिसमें शामिल होने वाले उत्साही लोग छ्यारियों से खुद को जख्मीकर लेते थे। वे अपना बधिया भी करते थे क्यों कि लिंग पंथ के पुरोहित समुदाय में प्रवेश पाने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त थी। जापान के कावासाकी में एक विशेष अवसर पर विशाल लिंग के दर्शन के लिए भीड़ उमड़ती है। अमेरिका के जनजातियों के बीच फैलिक बैफिलो डांस प्रसिद्ध है।

हिंदू शिवलिंग की पूजा करते हैं। हिंदू धर्म में दो मार्ग हैं- प्रवृत्ति (बाहरी) और निवृत्ति

(आंतरिक)। पहला मार्ग गृहस्थों का है जो शादी करते हैं जब कि दूसरा संन्यासियों का है जो अविवाहित रहते हैं। गृहस्थ अपने वीर्य को पती के गर्भ में डालता है। परंतु प्रतीकात्मक रूप से वह समाज के गर्भ में डालता है और सृष्टि की प्रक्रिया चलती रहती है। सन्यासी ब्रह्मचारी होता है जो वीर्य का स्खलन नहीं होने देता किंतु इसकी धारा को उलट देता है जिसे उर्ध्व रेतस कहते हैं। यह प्रकट होता है उस प्रतीक में जिसमें संत का लिंग खड़ा होता है, किंतु आँखें बंद होती हैं। इसलिए उसे उत्तेजना आंतरिक ज्ञान एवं शक्ति से होती है, बाहरी ज्ञानेदिय से नहीं। शिव को भी देवी ने गृहस्थ मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित किया जिस कारण सती एवं पार्वती से उनका विवाह हुआ तथा दो पुत्र- कार्तिकेय एवं गणेश पैदा हुए।

यह विवादास्पद है कि कितने संतों ने ईमानदारी से ब्रह्मचर्य का पालन किया है। अभी समस्या यह है कि कुछ ढोगी साधु का लिवास पहनकर भोले-भाले लोगों का शोषण कर रहे हैं। उन्होंने समझा दिया है कि जर्मांदारों की तरह वे भी ईश्वर एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ हैं। एक सच्चा गुरु सदमार्ग दिखा सकता है, किंतु एक सच्चा साधक गुरु के बिना भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है। समर्थ गुरु रामदास तथा रमण महर्षि का कोई गुरु नहीं था। महात्मा गांधी किसी को गुरु नहीं बना पाये क्यों कि उन्हें ऐसा कोई नहीं मिला जिसमें गुरु के सारे गुण मौजूद हों।

सेक्स निंदनीय नहीं है, किंतु यह सहमति से हो, छल से नहीं। साथ ही इस बारे में कोई आडम्बर न हो।

कब मिलेगा कात्यायनी मंदिर को पर्यटन स्थल का दर्जा

आशिष कुमार झा (सहरसा)

सहरसा जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर व खण्डिया मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर में अवस्थित चौथम प्रखंड के रोहियार पंचायत के बंगलिया गांवे (धमारा घाट) में मां दुर्गा के छठे स्वरूप के नाम से विख्यात है दुध की देवी शक्ति पीठे मां कात्यायनी स्थान। कोसी और बागमती के बीच में अवस्थित मां कात्यायनी की महिमा अपरम पार है। माता भक्तजनों की सभी मन्त्रों पूर्ण करती है। सरकार की उदासीनता के कारण मां कात्यायनी मंदिर को पर्यटन स्थल का दर्जा नहीं मिल सका है। बीच- बीच में पर्यटन विभाग मरहम लगाकर लोगों को खुश करने में लगे हुए हैं। मां के दरबार में भक्तजनों का जनसैलाब उमड़ी रहती है। श्रम शक्ति पर आधारित इलाके में मां कात्यायनी की महिमा है अगम अपार। मां कात्यायनी मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है। प्रचलित कथा के अनुसार चौथम का राजा मंगल सिंह था। राजा मंगल सिंह एवं सिरपत महाराज दोनों मित्र थे। कहा जाता है सिरपत महाराजे हजारों पशुओं का मालिक थे। गाय चरने के क्रम में जहां वर्तमान में मंदिर है वहां गाय स्वतः दुध स्नाव करने लगती थी। जिसे देखकर सिरपत महाराज को भी आश्र्य होने लगा। इस बात की खबर कानों कान तक फैल गई। चौथम के राजा मंगल सिंह को मां ने स्वप्न दिया। पुनः दैनों मित्र ने खुदाई करवाया। जहां माता का बायां हाथ मिला। सन् 1596 ई० में मंदिर का निर्माण करवाया गया। आज भी कथाओं में राजा मंगल सिंह एवं सिरपत महाराज की चर्चा विद्यमान है। शक्ति पीठ पौराणिक संदर्भ के अनुसार हिन्दू धर्म के अनुसार जहां सती देवी के शरीर के अंग गिरे वहां शक्ति पीठ बन गई। और वह स्थान अत्यंत पावन तीर्थ कहलाये। ये तीर्थ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर फैले हुए हैं। इसी क्रम में सती देवी का बायां हाथ रोहियार पंचायत के बंगलिया गांव में गिरा था। जो मां कात्यायनी शक्ति पीठ के नाम से विख्यात हो गया। मां कात्यायनी स्थान 51 शक्तिपीठों में एक है। दुध की देवी मां कात्यायनी मंदिर में दुधे चढ़ाने की विशेष परंपरा है। कोसी इलाके ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के पशुपालकों को गाय जब बच्चे देती हैं तो पहला दुध मां कात्यायनी स्थान मंदिर में चढ़ाया जाता है। इस मंदिर की खास विशेषता है कि जो भक्तगण सच्चे मन से माता को दुध चढ़ाने के लिए संकल्प लेकर आते हैं उसका दुध खराब नहीं होता है। प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार को वैराग्यन का दिन है। उस दिन मंदिर में आपार भीड़ उमड़ पड़ती है। दुध चढ़ाने से पशुपालकों का पशु स्वस्थ रहता है ऐसी मान्यता है। उक्त मंदिर में दुध की धारा बहती है। जानकार कहते हैं कि शक्ति पीठ मां कात्यायनी की कृपा इलाके में विख्यात है। यह



इलाका श्रम शक्ति पर निर्भर है। प्राकृतिक आपदा बाढ़, सुखाड़ के बाद भी इलाके में न तो कभी अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई है और ने होगी। यह माता की असीम कृपा है। दुर्गम रास्ते के बावजूद भी इलाके के लोग खुशहाल हैं। और यहां भक्तजनों का जनसैलाब उमड़ती रहती है। सैकड़ों परिवारों की जीविका इस मंदिर से चल रही है। मंदिर में समबाहु त्रिभुज में स्थापित है तीन देवी। इस शक्ति पीठ मां कात्यायनी मंदिर से सहरसा जिले के सोनवर्षा प्रखंड के विराटपुर में अवस्थित मां चण्डी देवी एवं महिषी में अवस्थित मां तारा देवी की दुरी एक दूसरे से समान है। एवं तीनों देवी समबाहु त्रिभुज की तरह तीन बिंदु पर विराजमान हैं जो बिहार ही नहीं देश में विख्यात हैं। मंदिर में प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग पूजा अर्चना करते हैं। लेकिन मां कात्यायनी मंदिर को अभी तक पर्यटन स्थल का नहीं मिल सका

है दर्जा। श्रद्धालुओं को मां कात्यायनी मंदिर जाने के लिए नाव एवं रेल का सहारा लेना पड़ता है जो कठिन प्रद है। मंदिर तक पहुंच पथ नहीं होने के कारण 19 अगस्त 2013 को मां कात्यायनी मंदिर में पूजा अर्चना करने जो रहे 28 श्रद्धालुओं की मौत धमारा रेलवे स्टेशन पर राजानी एक्सप्रेस ट्रेन से कटकर हो गई थी। उसके बाद भी सरकार की ओर से कोई पहल आज तक नहीं किया गया। समाजिक कार्यक्रमों ने शक्तिपीठ मां कात्यायनी मंदिर को पर्यटन स्थल का दर्जा देने को लेकर कई बार धरना प्रदर्शन भी किया लेकिन पर्यटन स्थल की बात तो दुर है मंदिर तक पहुंच पथ भी नहीं बन सका है। इस मंदिर में बिहार के हर क्षेत्र से भक्तजन मां की आग्रहना करने आते हैं। भक्तजनों के दिल में रह रहकर टिस मार रही है सरकार की उदासीनता।

पारंपरिक खेती छोड़कर समृद्ध हो सकते हैं किसान



सुरन्द्र, बेगूसराय

लागत के अनुरूप आय नहीं होने, फसल का उचित दाम नहीं मिलने से आज छोटे किसान आत्महत्या कर रहे हैं। खेती-किसानी छोड़कर दिल्ली, पंजाब, मुंबई में नौकरी कर रहे हैं। लेकिन पारंपरिक खेती छोड़कर आधुनिक तकनीक से खेती करने पर यह किसान भी गांव में रहकर 15 से 20 हजार रुपया महीना कमा सकते हैं। इसे साबित कर दियाया है बेगूसराय जिला के शकरपुरा निवासी किसान कृष्णदेव राय ने।

खेती से दो बेटा को बनाया इंजीनियर, छुड़ाया खेत

20 साल पहले तक अमानत करने वाले कृष्णदेव राय की इतनी आय नहीं थी कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा दे सकें, घर-मकान बना सकें। लेकिन अचानक से खेती के प्रति जगी ललक से अमानत छोड़कर किसान बन गए। पारिवारिक समस्याओं के कारण बंधक लगा सात बीघा जमीन, उसी महाजन से लीज पर लेकर उन्होंने मेंथा और गन्ना की नई तकनीक से खेती शुरू कर दी। समुचित आय हुई तो मनोबल बढ़ा और बढ़ते जोश में नई नई तकनीक से संपन्न विभिन्न खेती किया। आज हालात यह है कि अच्छा घर-मकान बन गया। दोनों पुत्र बैंगलोर में पढ़कर इंजीनियर बन गया। बंधक रखा सातों बीघा खेत दो साल में ही अपना हो चुका है। अब मेंथा की खेती छोड़कर पपीता, गन्ना, टमाटर, परबल, शिमला मिर्च आदि से प्रत्येक वर्ष छह से आठ लाख रुपया कमा रहे हैं। इसके साथ ही खेती किसानी की नई तकनीक इंटर क्रॉपिंग, मल्टिंग एवं ड्रीप लाइन का उपयोग कर दूसरे किसानों को भी प्रेरित कर रहे हैं। खेतों पर जाकर उन्हें सिखा रहे हैं। कृष्ण देव राय कहते हैं कि मोदी जी ने कहा किसानों के साथ सभी के अच्छे दिन आएंगे। लेकिन इसके लिए मोदी जी हमारे खेत पर आकर कुछ नहीं कर सकते हैं। हम सब किसानों को डिजिटल यानी नई तकनीक से खेती करनी होगी और इससे जरूर आएंगे अच्छे दिन।

इंटरक्रॉपिंग में मिला राष्ट्र स्तर पर प्रथम पुरस्कार

विगत वर्ष इन्होंने इंटर क्रॉपिंग कर सीओ 0238 गन्ना के साथ पुखराज किस्म का

आलू लगाया था। फसल अच्छी हुई, आलू 26 मन प्रति कट्टा हो गया। जांच में आए विशेषज्ञ ने आलू के साथ गन्ना का बिहार में सबसे बेहतर रिपोर्ट किया। इसके बाद दिल्ली में आयोजित समारोह में कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह के हाथों राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार मिला। 2018 में राज्य के कृषि मंत्री द्वारा तथा कृषि विश्वविद्यालय पुस्स में अभिनव सम्मान मिला। उन्होंने बताया कि पारंपरिक तरीके से हो रही खेती में 15 से 20 हजार खर्च करने पर मौसम के साथ देने पर 25 से 30 हजार मिलता है। लेकिन नई तकनीक की खेती में 15 से 25 हजार खर्च करने पर 30 हजार से अधिक आय हो जाती है।

मल्टिंग सिस्टम से बरकरार रहती है उचित नमी

इस सीजन में चार बीघा खेत में टमाटर एवं शिमला मिर्च के साथ मटर लगाया गया है। चारों ओर परबल एवं कट्टू हो रहा है। इसके लिए मल्टिंग सिस्टम एवं ड्रीपलाइन अपनाया गया है। मल्टिंग में पूरे खेत में समान दूरी पर बने मेढ़ पर टमाटर एवं शिमला मिर्च लगा है। मेढ़ पर पन्नी के नीचे समान दूरी पर छेद वाला ड्रीपलाइन पाइप है। इस पानी के पाइप से ही सभी आवश्यक जैविक तत्व सीधे पौधे की जड़ में पहुंचता है। तथा पन्नी के कारण नमी अधिक दिनों तक बरकरार रहती है। पौधा के जड़ में कीट एवं खरपतवार से सुरक्षा मिलती है। पहले जहां पटवन में 20 से 25 घंटा लगता था। वहीं, अब मात्र 30 से 35 मिनट में पानी की उचित मात्रा मिल जाती है। इससे फसल, किसान एवं जमीन की सुरक्षा हो रहा है।

कीटनाशक के बदले लगाया क्रॉप गार्ड

किसानों के फसल में लागत का एक बड़ा भाग कीटनाशक पर खर्च हो जाता है। लेकिन इसके लिए नई तकनीक में क्रॉप गार्ड विकसित किया गया है। यह कीटनाशक के छिड़काव पर 15 से 20 हजार खर्च एवं शरीर तथा फसल पर कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से मुक्त करता है। क्रॉप गार्ड के पीला एवं नीला पॉलिथीन में विशेष गोंद लगाकर दस्त-दस्त फीट की दूरी पर खेत में लगाया गया है। फसल पर आने वाला कीट इसी दोनों पॉलिथीन में चिपक कर मर जाते हैं और खर्च है मात्र 15 से 18 सौ रुपया छमाही।

वायु प्रदूषण के चलते जहरीली गैस के चैम्बर बनते शहर बने चुनौती

देश की राजधानी दिल्ली व एनसीआर का क्षेत्र दीपावली के त्यौहार के बाद से एकबार फिर मीडिया की जबरदस्त चर्चाओं में शामिल है। हर बार की तरह इस बार भी चर्चा की वजह है दिल्ली में बढ़ता वायु प्रदूषण, अपने जानलेवा वायु प्रदूषण के लिए विश्व में प्रसिद्ध हो गयी देश की राजधानी दिल्ली दीपावली के बाद से काले धुएं के बादलों के आगोश में छिपी हुई है। वायु प्रदूषण के चलते लोगों को भगवान् सूर्योदेव के दर्शन बहुत ही मुश्किल से हो पा रहे हैं।

लेकिन हम हैं कि फिर भी सुधारने का नाम नहीं लेते हैं अपने ही हाथों से अपने प्यारे चमन में आग लगा लेते हैं और स्वर्ग सी भूमि को स्वयं ही प्रदूषित करके नरक बना लेते हैं। हम सभी अपने चारों तरफ देखे तो इंश्वर की बनाई इस अद्भुत दुनिया के निराले प्राकृतिक नजारों को देखकर हमारा तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है। भगवान ने हमको प्रकृति की गोद में हर तरफ कल-कल करती नदियां, प्राकृतिक संगीतमय झरने, मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त पहाड़, तरह-तरह के अनाज, बेल-लताएं, हरे-भरे छाटे और विशालकाय वृक्ष, प्यारे-प्यारे चहचहाते पक्षी आदि से परिषूर्ण साक्षात् स्वर्ग रूपी सुंदर संसार दिया है, यह वो संसार है जो अदिकाल से और आज भी हम सभी इंसानों के आकर्षण का हमेशा केंद्र बिंदु रहा है। लेकिन आज इंसान ने अपनी जिज्ञासा और नई-नई खोज की अभिलाषा में जब से प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है, तब से पर्यावरण की हालात दिन-प्रतिदिन चिंताजनक होकर बेहद प्रदूषित होती जा रही है। आज देश में हालात यह हो गये हैं कि देश में बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते दिन आबोहवा जहरीली होने के चलते हमारे शहर व गांव तक भी गैस चैम्बर में तब्दील हो रहे हैं। विज्ञान के द्वारा उपलब्ध उन्नत तकनीक के बाद भी आजकल सभी लोगों को सांस लेने के लिए स्वच्छ आक्सीजन तक मिलना दुश्वार होता जा रहा है। आज स्थिति यह हो गयी है कि हम अपने परिवारों, दोस्तों व परिचितों का बहुत ख्याल रखते हैं, पांतु जब बात पर्यावरण के संरक्षण और उसके ध्यान रखने की आती है तो हम केवल प्रथमी दिवस, पर्यावरण दिवस, गांधी जयंती, आदि पर वृक्षारोपण करके या फिर सरकार प्रायोजित स्वच्छ भारत अभियान चला करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों की इतिश्री कर लेते हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हमको पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त करने के बारे में ठोस कारण पहल कागजों से निकलकर धरातल पर करनी होगी तब ही हम प्रकृति का संरक्षण करके हर तरह के प्रदूषण से बच सकते हैं।



वैसे तो आज जहरीली होती आबोहवा ने दुनिया भर के लोगों को परेशान कर रखा है, लेकिन हमारे प्यारे देश भारत पर इसका असर कुछ ज्यादा ही गम्भीर रूप से होता नजर आ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण की वजह से 20 लाख लोग हर वर्ष असमय काल का ग्रास बन जाते हैं जो बेहद चिंताजनक स्थिति है। हर वर्ष की तरह ही इस बार भी दीपावली के पावन पर्व को हर्षोल्लास से मनाने के बाद, लोगों को घरों के अंदर व बाहर सड़कों पर हर जगह आंखों में जलन से लेकर सांस लेने तक में तकलीफ हो रही है। प्रदूषण के चलते कुछ लोगों को तो अस्पताल जाकर उपचार तक कराना पड़ रहा है। हालांकि फिर भी देश में बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो रोजमरा के जीवन संघर्ष में रोजीरोटी कमाने के जुगाड़ व काम की आपाधानी में वायु प्रदूषण से होने वाली परेशानी को अनदेखा कर अपने कर्तव्यों का निर्वाह लगातार करते रहते हैं। वायु प्रदूषण पर नजर रखने वाले विशेषज्ञों के मुताबिक वैसे तो अब वायु प्रदूषण हर वक्त हर पल हम लोगों के जीवन को चुनौती दे रहा है, लेकिन यह हर वर्ष दीपावली के पावन पर्व के बाद ऊपर हवा में सामान्य से दस गुना तक बढ़ जाने के चलते सभी को स्पष्ट नजर आने लगती हैं। सोचनीय बात यह है कि आज वायु प्रदूषण के चलते हर छोटे बड़े शहर की आबोहवा में गम्भीर बीमारियों को जन्म देने वाले विषेश प्रदूषक तत्वों का भंडार मंडरा रहा है। लेकिन इसमें भी

कोई शक नहीं कि इस बार लोगों के कुछ जागरूक होने की वजह से और हवा चलती रहने की वजह से दिल्ली व एनसीआर में दीपावली पर वायु प्रदूषण पिछले वर्षों की तुलना में कुछ कम हुआ है। लेकिन अगर हम वायु प्रदूषण के लिए केवल दीपावली की आतिशबाजी को जिम्मेदार ठहराएंगे तो यह नाइंसाफी होगी। इतना जरूर है कि हर वर्ष दीपावली पर होने वाली आतिशबाजी के बाद हवा में प्रदूषण इस कदर बढ़ जाता है कि वो एकदम सबके लिए एक बेहद चुनौती पूर्ण गंभीर समस्या बन जाता है और आम लोगों को दिक्कत होने के चलते सभी को नजर आने लगता है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि वायु प्रदूषण की गम्भीर समस्या से निपटने के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालयहूँ ने राष्ट्रीय सचिवालय वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) शुरू कर रखा है। यह सरकार की एक मध्यमकालिक पंचवर्षीय कार्य योजना है जिसमें देश के 102 शहरों में पीएम 2.5 और पीएम 10 (सूक्ष्म धूल कण) के स्तर में 20-30 प्रतिशत की उल्लेखनीय कमी करने के लक्ष्य रखे गये हैं। इन 102 शहरों में से 84 शहरों ने अपनी-अपनी कार्य योजनाएं पहले ही पेश कर दी हैं। एनसीएपी का मुख्य उद्देश्य देश भर में वायु प्रदूषण को नियंत्रण में रखते हुए उसमें उल्लेखनीय कमी सुनिश्चित करना है। क्योंकि आज हमारे देश में जिस तरह से दिन-प्रतिदिन वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है उसका निदान करना आमजन के साथ-साथ सरकार के लिए भी

बहुत बड़ी चुनौती है। क्योंकि देश में अब वायु प्रदूषण का स्तर दिन-प्रतिदिन बेहद घातक व जानलेवा होता जा रहा है। जो की हम सभी देशवासियों के जानमाल व स्वास्थ्य के लिये बेहद खतरनाक साबित हो रहा है। जिस तरह से हाल के वर्षों में बहुत ही तेजी से हमारे देश का वायुमंडल जहरीले गैस चैम्बर में तब्दील होता जा रहा है वह चिंता का विषय है। लेकिन फिर भी हम सभी देशवासी व सरकार इस ज्वलत समस्या का कारगर समाधान ना करके, कबूतर की तरह आँख बंद करके बेफिक्र बैठे हुए हैं, यह स्थिति सोचनीय है।

आज देश में जहरीली होती आबोहवा की वजह से साँस, एलर्जी सम्बन्धी व अन्य प्रकार की तरह-तरह की गम्भीर बीमारियों का खतरा हम सभी देशवासियों पर बहुत तेजी से मंडरा रहा है। जहरीली हवा के चलते लोगों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता घटने से व गम्भीर बीमारियों के बढ़ने से देश में मृत्युदर में काफी तेजी से इजाफा हुआ है। प्रदूषण की वजह से दम तोड़ते लोगों के आकड़ों में साल दर साल बहुत ही तेजी से वृद्धि हो रही है। जहरीले वायु प्रदूषण की भयावहता का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज हमारे देश का हर छोटा व बड़ा शहर एक गैस चैम्बर के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है, जिसको अगर जल्दी ही नियंत्रित नहीं किया गया तो भविष्य में बहुत बड़ी संख्या में देश के लोग वायु प्रदूषण की वजह से असमय काल के ग्रास बन जायेंगे। प्रदूषण के इस मसले पर कुछ समय पहले विश्व प्रसिद्ध अमेरिका के दो संस्थान हैलथ इफेक्ट्स इंस्टिट्यूट (लाएक) एवं इंस्टिट्यूट फॉर हेल्थ मैट्रिक्स एंड इंवेल्यूशन (कल्टए) ने हाल ही में विश्व भर में वायु की गुणवत्ता से सम्बंधित आकड़ों पर अपनी एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की थी। जिस रिपोर्ट का शीर्षक था द्वारा स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर-2019 इस रिपोर्ट के अनुसार विश्व भर में वायु प्रदूषण से होने वाली 5 मिलियन मौतों में से 50% मौत केवल भारत और चीन में ही होती है जो कि बहुत ही भयावह स्थिति को दर्शाने वाले आकड़े हैं। इस विस्तृत रिपोर्ट में कहा गया है कि लंबे समय तक घर से बाहर रहने या घर में वायु प्रदूषण के चलते वर्ष 2017 में स्ट्रोक, डायबिटीज, हार्ट अटैक, फेफड़े के कैंसर या फेफड़े आदि की गम्भीर बीमारियों से विश्व में लगभग 50 लाख लोगों की मौत हुई है। इस रिपोर्ट के अनुसार आज भारत में वायु प्रदूषण अब स्वास्थ्य के लिए सबसे खतरनाक जोखियों के तीसरे पायदान पर पहुँच गया है, जो कि अब देश में मौत का तीसरा सबसे बड़ा गम्भीर कारक बन गया है। जो देश में धूम्रपान से होने वाली मौतों के ठीक ऊपर है। रिपोर्ट के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2017 में असुरक्षित प्रदूषित वायु के संपर्क में आने से 6,73,100 मौतें बढ़ते 2.5 के संपर्क में आने के कारण हुई और 4,81,700 से अधिक मौतें भारत में घेरेल वायु प्रदूषण के कारण हुई थी। 2017 में भारत की लगभग 60% आबादी घेरेल प्रदूषण के संपर्क में थी। आकड़ों पर गौर करे तो आज हमारे देश की अधिकांश आबादी 10 के वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश के ऊपर ढट्ट.2.5 सांद्रता वाले क्षेत्रों में रहती है तथा केवल 15% आबादी ही हल्ड के कम-से-कम कड़े लक्ष्य 3.5 के नीचे 2.5 सांद्रता वाले क्षेत्रों में रहती है। इस रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि यदि वायु प्रदूषण इसी प्रकार बढ़कर रहता है तो भविष्य में लोगों के सामने बहुत ही गम्भीर स्वास्थ्य

संकट उत्पन्न होंगे जिससे भविष्य में लोगों की जीवन प्रत्याशा (एक व्यक्ति के औसत जीवनकाल) में 20 महीने कम हो जाएगी इस रिपोर्ट में जब भारत की वायु गुणवत्ता का अध्ययन किया गया है, तो पाया कि विश्व में सबसे अधिक भारत में वायु प्रदूषण की वजह से लोगों की मृत्यु हो रही हैं जो कि भविष्य में देशहित के लिए ठीक नहीं है। यहाँ उल्लेखनीय है कि नाइट्रोजन, सल्फर और ऑक्साइड और कार्बन खासकर पीएम 2.5 जैसे वायु प्रदूषक तत्वों को असमय मौत का एक बहुत बड़ा कारक माना जाता है। ठीक उसी प्रकार केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में जिन शहरों को सबसे अधिक प्रदूषित शहर माना है। लेकिन फिर भी सरकार ना जाने क्यों उन शहरों के वायु प्रदूषण के संदर्भ में आयी रिपोर्टों को खास तबज्जो नहीं देती हैं, जिसके चलते देश में ना तो सही ढंग से प्रदूषण नियंत्रण हो पा रहा है ना ही सही आंकड़े सभी देशवासियों के सामने आ रहे हैं। लेकिन विदेशी संस्थाओं की रिपोर्ट में दी गयी इस बात से तो सहमत हुआ जा सकता है कि वायु प्रदूषण की वजह से देश में होने वाली मौतों की जो संख्या व इस रिपोर्ट में दी गई है उसकी संख्या कम या ज्यादा तो हो सकती है, लेकिन यह भी कड़वा सत्य है कि वायु प्रदूषण के चलते देश के शहर दिन-प्रतिदिन जहरीले गैस के चैम्बर बनते जा रहे हैं और उससे अब लोग असमय काल का ग्रास बन रहे हैं। इस सच्चाई से अब ना तो सरकार और ना ही आम-आदमी मुँह मोड़ सकता है। क्योंकि अब यह सबको समझ आ गया है कि वायु प्रदूषण एक बहुत ही गम्भीर पर्यावरणीय समस्या है जिसका जल्द से जल्द कारगर समाधान करने के लिए सरकार को आम-जनमानस के सहयोग से प्रभावी कदम उठाने होंगे, वरना इस जहरीले वायु प्रदूषण के चलते देश में लोगों की आये-दिन जान जाती रहेंगी। इतना कुछ होने के बाद भी आज देश में वायु प्रदूषण को लेकर बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि दिल्ली सरकार को छोड़कर अब तक देश के बाकी राज्यों की तमाम सरकारों व आम-जनमानस ने वायु प्रदूषण की इस समस्या को कभी गम्भीरता से नहीं लिया है जो कि भविष्य के लिए बहुत ही घातक स्थिति है। देश में आज भी हालत यह है कि वायु प्रदूषण कम करने की कोशिशें केवल देश के चंद बड़े शहरों दिल्ली, मुम्बई आदि जैसे बड़े-बड़े महानगरों तक केन्द्रित रहीं हैं। इस गम्भीर समस्या के मसले पर सरकारों ने छोटे शहरों व गांवों के निवासियों को भगवान भरोसे छोड़ दिया है जो लोगों के स्वास्थ्य के लिए घातक स्थिति है। यह हालात तब है जब वर्ष 2016 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों की सूची जारी की थी, उनमें भारत के 10 शहर शामिल थे। फिर भी अभी तक सरकार के छोटे शहरों व गांवों के प्रदूषण रोकने के लिए कोई ठोस कारगर पहल नहीं की है। सबसे अचर्ज की बात यह है कि ना तो हम व ना ही स्थानीय प्रशासन अपने शहरों में वायु प्रदूषण का अन्दाजा ठीक से नहीं लगा पा रहे हैं, तो इसकी वजह से आम जनता की सेहत पर पड़ने वाले कुप्रभावों का अन्दाज हम ठीक प्रकार से कैसे लगा पाएँगे? इसके लिये जरूरी बुनियादी ढाँचे के अभाव की स्थिति में हम वैश्वक स्तर पर किये जा रहे इन विदेशी आकड़ों पर विश्वास करके वायु प्रदूषण से निपटने के लिए प्रभावी कदम उठा सकते हैं, जब तक कि हमारा ढाँचा प्रभावी रूप से विकसित नहीं हो जाता

है तब तक हमारे पास विदेशी आकड़ों व रिपोर्ट पर विश्वास करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं बचता है। लेकिन यह भी कटु सत्य है कि देश में भविष्य में जब प्रभावी संसाधन हो जायेंगे और हम वास्तव में अपने छोटे-छोटे शहरों और गाँवों के प्रदूषणों के आंकड़ों से भी कहीं और अधिक गम्भीर व भयावह होगी। ऐसे में पर्यावरण मंत्रालय के लिये तब तक इस तरह की विदेशी रिपोर्ट को देश में वायु प्रदूषण कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जिससे की आने वाले समय में देश में जहरीले वायु प्रदूषण को नियंत्रित किये जाने की दिशा में कारगर प्रभावी कदम उठाने में मदद मिल सकेगी। आज हम सभी लोगों का यह नैतिक कर्तव्य है कि जिस पृथ्वी और पर्यावरण में हम रहते हैं उसका संरक्षण व सुरक्षा स्वयं अच्छे ढंग से करें और उसे प्रदूषित न होने दे। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि आज का इसान इतना स्वार्थी हो गया है कि यह पर्यावरण की तरफ वह कोई ध्यान नहीं दे रहा है। आज हम लोग केवल अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों अव्यवस्थित ढंग से दोहन कर रहे हैं, जिसके लिए हम अंधाधुंध पेड़ काट रहे हैं, गृहकार्य, कृषि व फैक्ट्री के लिए भूमिगत जल का जिस तरह से बेहिसाब दोहन कर रहे हैं है यह स्थिति सभी देशवासियों के लिए बेहद चिंताजनक है। आज देश में अव्यवस्थित औद्योगिक विकास, सहरीकरण और विकास के नाम पर आज हर दिन हम लोग अपने हाथों से पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। आज प्रदूषण के चलते देश की आबोहवा में रोजाना कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा तेजी से बढ़ती जा रही है। लेकिन अब समय आ गया है कि सरकार को आमजनमानस के सहयोग से इस ज्वलत समस्या का स्थाई समाधान ढूँढ कर सकता है कि आज देश के सहयोग से इस ज्वलत समस्या का स्थाई समाधान ढूँढ कर दीर्घकालिक निदान करना चाहिए। साथ ही देश में अब वह समय भी आ गया है की जब हम सभी देशवासी संकल्प ले कि प्रकृति से हम केवल लेंगे ही नहीं बल्कि प्राकृतिक संसाधनों व प्रकृति की सुरक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाकर प्रकृति को कुछ वापिस भी अवश्य करेंगे, इस संकल्प से ही भविष्य में प्रकृति व पर्यावरण की सुरक्षा हो सकती है। हम सभी को समझना होगा कि आजकल हमारे देश के सभी शहरों में तरह-तरह का इतना प्रदूषण और शोर है की पश्ची तक भी वहाँ से पलायन करने लगे हैं। अब पश्चीमों के नाम पर शहरों में सिर्फ कुछ गिने चुने चंद प्रजाति के पश्ची ही देखने को मिलते हैं। आज शहर व गाँव में तरह-तरह के प्रदूषण की वजह से लोग आयेदिन गम्भीर बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। प्रदूषण के चलते शहर का तो हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के रोग से ग्रसित हो गया है। देश की राजधानी दिल्ली व उसके आसपास के इलाकों में तो अब इतना वायु प्रदूषण बढ़ गया की लोगों का साँस लेना मुश्किल हो गया। इसलिए अब समय आ गया है कि हम सभी देशवासी सरकार के साथ मिलकर फाईलों से बाहर आकर धरातल पर पर्यावरण के संरक्षण व सुरक्षा के लिए हर संभव ठोस कारगर उपाय करें। ना कि कभी दीपावली की आतिशबाजी, कभी पराली जलाने, कभी वाहनों के धुएं के चलते प्रदूषण, कभी औद्योगिक ईक्सिलों से या कभी अत्यधिक निर्माण कारों का चलते गम्भीर प्रदूषण हो रहा है पर बात टाल कर अपनी जिम्मेदारी से इतिश्री करें।

अज्ञानता के अंधकार दूर करते अमरदीप ज्ञा गौतम

अनूप नारायण सिंह

अपनी अलग सोच व काम के अलग अंदाज की वजह से अमरदीप ज्ञा गौतम ने एलिट इंस्टीचूट को शिखर तक पहुंचा दिया है। बच्चों के साथ सपने देखना, उसके सपने बुनना और फिर उन सपनों को अंजाम तक पहुंचाने के लिए दिन-रात की मेहनत का ही नतीजा है कि हर साल एलिट इंस्टीचूट देश को बेहतर इंजीनियर और डॉक्टर देता रहा है।

सारा जीवन कालचक्र है,
आना-जाना यहां खेल है।
अपने उज्ज्वल लक्ष्य को देख,
रहा पुकार न कर अनदेख।
आशाओं के दीप जलाकर कर्म करो,
बस यही धर्म है !

तनाव में भी हंसना-हंसाना...

अगर 2019 के रिजल्ट पर नजर डालें, तो 178 जेर्ड्स मेन, 23 जेर्ड्स एडवांस्ड, 69 नीट-मेडिकल में और 2018 में 165 जी-मेन में, 30 बच्चे जी-एडवांस और नीट-2018 में 63 बच्चों को क्वालिफाइड करवा चुके अमरदीप ज्ञा गौतम का सफर काफी लंबा है। 18 सालों से हर दिन बच्चों के बीच रहते, उनसे फ्रेंडली बातें करते, उनकी प्रॉब्लम को सुनते और फिर उस प्रॉब्लम को दूर करने में लग जाते।

इस दौरान एक बार भी उनके चेहरे पर थकान का भाव नहीं आता।

एलिट इंस्टीचूट की सफलता के पीछे उनकी बेहतर सोच और बेहतर कर्म ही है कि वो आज बच्चों को बेहतर सुविधा के साथ-साथ बेहतर पर्याचर प्रोवाइड करवा रहे हैं।

स्मार्ट स्टडी और प्रैक्टिकल-एप्रोच...

पटना में एलिट इंस्टीचूट ऐसा पहला हुआ, जो अपने बच्चों की सुविधा और उसके ज्ञान को उन्हीं की लैंगेज में समझाने का ट्रेंड शुरू कर पाने में सफल हो पाया। एलिट अपने स्टूडेंट्स के लिए स्मार्ट-स्टडी के साथ-

साथ मॉडर्न स्टडी-पैकेज भी मुरीदा करवा रहा है।

अब दसवीं पास स्टूडेंट्स को मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए श्री इयर कोर्स भी सबसे पहले यहीं शुरू करवाया जाएगा।

एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और डायरेक्टर अमरदीप ज्ञा गौतम ने बताया कि बच्चों के स्किल को अपडेट करने के लिए हर 45 दिनों पर बच्चों की काउंसिलिंग



करायी जाती है।

इसमें स्टूडेंट्स की इन्जीं, उसका लेवल, उसकी समझदारी का आंकलन करने के बाद उसकी कमियों को दूर करने की दिशा में भी काम किया जाता है। सिर्फ कोचिंग हीं नहीं बल्कि सेल्फ स्टडी के लिए लाइब्रेरी, डिस्क्शन हाल, ऑन लाइन और ऑफ लाइन सिस्टम के साथ-साथ इंग्लिश की पढ़ाई भी मुहैया करवायी जा रही है।

योग-विज्ञान और कल्पना-शक्ति के सदुपयोग के प्रयोग

एलिट संस्थान एक ऐसा संस्थान हो पाया, जहाँ छात्र-छात्राओं को नियमित-रूप से योगासन, प्राणायाम और ध्यान के प्रयोगों से उनको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संवर्धन का लाभ मिलता है। वहीं संस्थान के निदेशक अमरदीप ज्ञा गौतम का शोध "रिदिमिक-एक्शन" के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के साथ अपनी कल्पना-शक्ति को जोड़ना सिखाया जाता है।

जनरल लाइफ के एजांपल से प्रॉब्लम दूर...

कुछ स्टूडेंट्स की शिकायत रहती है कि वे सवाल करने से डरते हैं।

अगर सवाल करते हैं, तो सही जवाब नहीं मिल पाता है।

लेकिन, एलिट इंस्टीचूट में बच्चों को आने वाले सब्जेक्ट्स परेशानी को जनरल लाइफ के एजांपल

देकर समझाया जाता है।

एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप ज्ञा गौतम ने बताया कि "मेरे इंस्टीचूट में टीचर और स्टूडेंट के बीच के गैप को कम किया जाता है। फ्रेंडली माहौल होने की वजह से बच्चे आसानी से अपनी पढ़ाई कर पाते हैं, साथ ही उनके सवालों का सही-सही जवाब भी दिया जाता है"।

12 टीचर और 10 नन टीचिंग स्टॉफ के साथ मॉडर्न टीचिंग हब के रूप में तब्दील हो चुका एलिट इंस्टीचूट बच्चों के सवालों के जवाब पर खरा उतर रहा है। यहाँ पर इंजीनियरिंग और मेडिकल दोनों के ही एक्सपर्ट द्वारा इसकी पढ़ाई करवायी जाती है।

विरासत में मिला शिक्षण कार्य...

बेगूसराय के सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश से आगे बढ़ने के बाद अमरदीप ज्ञा गौतम पटना साइंस कॉलेज और बी.एच.यू. से अपनी पढ़ाई करने के बाद संघ लोकसेवा आयोग के लिये चुने गये, पर उन चीजों में मन नहीं लगने के कारण शिक्षण-कार्य में जुट गये।

अमरदीप ज्ञा गौतम के माँ और पिताजी भी बिहार-सरकार के सेवा-निवृत शिक्षक हैं, जिन्होंने लगभग 28 वर्षों तक बिहार की शिक्षा में अपना योगदान दिया।

ऐसे में श्री गौतम ने शिक्षण का दायित्व विरासत के तौर पर ग्रहण किया।

वह फिजिक्स के विषयात शिक्षक हैं और बच्चों को खेल-खेल में फिजिक्स को आसान बना कर समझाने के हुनर में माहिर हैं।

फिजिक्स से सोशल एक्टिविटी तक...



एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम को जब भी मौका लगता है कि वो सोसायटी के गंभीर मसलों पर अपनी कलम भी खिंगाने लगते हैं।

फिजिक्स के जानकार अमरदीप झा गौतम एक साथ कई विधाओं में महारात रखते हैं।

मसलन कि उनकी लिखी नाटक 'आम्रपाली', 'सुदमा', 'मेरी आवाज़', 'चंद्र-पृथ्वी', 'शबरी' 'सीता' और 'द्रौपदी' ने उनकी लेखनी और उनके विचारों को बहुआयामी सिद्ध किया।

वहीं उनकी कवितायें, शायरी की बेहद रोमांचकारी प्रस्तुति लोगों को झूमने पर विवश कर देती है।

गाना लिखने का शौक और उसकी अदायगी एलिट इंस्टीचूट के एनुअल-फंक्शन में दिख जाती है।

एनुअल फंक्शन की मर्स्टी...

एनुअल फंक्शन में अपने लिखे गीत, नाटक, भाषण और काव्य पाठ के साथ उसे बच्चों की आवाज में पिरोकर पेश करवाया जाता है।

समाज के विभिन्न-वर्गों के विभूतियों और देश के लिये



समर्पित व्यक्तियों को "सरस्वती-सम्मान", "प्रतिभा-सम्मान" और "बाबा-नागर्जुन सम्मान" से अलंकृत किया जाता है।

स्वभाव से निर्मल अमरदीप झा गौतम ने बताया कि हरेक के अंदर एक्टर छिंगा रहता है। ऐसे में उसे उभार कर निकालने का दायित्व भी हम जैसे लोगों का ही है, इसलिए इस दिन को भी बच्चे काफी यादगार बनाते हैं और मैं भी इसमें जमकर जुट जाता हूँ।

मेधावी बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं...

- ज्ञानोदय योजना के अंतर्गत एलिट-21 प्रोग्राम चलाया जाता है।
- इसमें वैसे 21 बच्चों का सेलेक्शन किया जाता है जो गरीब होते हैं।
- उनके अंदर जबरदस्त मेधा रहती है, साथ ही उसके घर की वार्षिक आय एक लाख या उससे कम हो।
- गरीब बच्चों के लिए 25 परसेंट की स्कॉलरशिप दी जाती है।
- लड़कियों को पूरे साल बीस परसेंट की छूट उपलब्ध करवायी जाती है।
- 2019 से ग्रामीण-परिवेश के स्टूडेंट्स को कंप्यूटर की पढ़ाई और ऑनलाइन-टेस्ट के प्रैक्टिस के लिये कंप्यूटर-लैब की व्यवस्था की जायेगी।
- प्रैक्टिकल-एप्रोच से फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ और बायोलॉजी पढ़ाया जाता है।

सम्मान और पुरस्कार...

2012 में स्थानीय न्यूज चैनल की ओर से बेस्ट मोटिवेटर का अवार्ड मिल चुका है।

2013 में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के समूह द्वारा युवा शिक्षा सम्मान।

2014 में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए शिक्षा-रत्न पुरस्कार।

2015 में आईनेक्स्ट-अखबार के द्वारा एजुकेशनल एचिवर्स-अवार्ड।

2015 में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री से सरस्वती-सम्मान। 2016 में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा लालबहादुर शास्त्री सम्मान।

2017 में जागरण-समूह द्वारा गुरु-सम्मान।

2018 में गैर-सामाजिक संगठन द्वारा युवा-दर्शनिक सम्मान। 2018 में चंपारण में युवा-कविरत्न सम्मान।

प्रोफाइल :

नाम- अमरदीप झा गौतम

प्रख्यात शिक्षाविद, फिजिक्स-टीचर, कौरियर-काउंसलर, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीति-विश्वेषक सामाजिक चिंतक और एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और निदेशक।

अमरदीप झा गौतम के बारे में कुछ खास बातें:

पिता : श्री तेज नारायण झा।

माता : श्रीमति नगीना झा।

जन्म तिथि : 12 फरवरी, बैगूसराय।

शौक : भौतिकी पढ़ाना, काव्य-लेखन और वाचन, गजल लिखना, किताबें पढ़ाना, सामाजिक-जागरूकता को बढ़ाना।

फेवरेट मूवी : पेज श्री, आँधी, ब्लैक, डोर, पिंजर, आमिर, बाहुबली, मणिकर्णिका।

बेस्ट एक्टर : अमिताभ बच्चन।

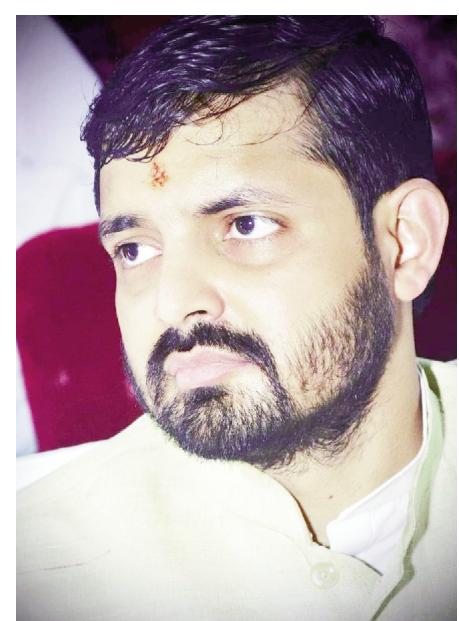
बेस्ट एक्ट्रेस : कोंकणा सेन और कंगना राणावत।

गजल : जगजीत सिंह और गुलाम अली।

फेवरेट नॉवेल : कर्मभूमि, गोदान, दिनकर और निराला की कवितायें, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, वाजपेयी जी की मेरी "इक्यावन कवितायें" का संग्रह शामिल हैं।

इंसायरिंग पर्सन : अमिताभ बच्चन, हरेक पल ऐसा लगता है कि वो कुछ न कुछ सीख रहे हैं, जिज्ञासा है।

**आंधियां बहुत तेज हैं कुछ दीप झिलमिलाते हैं !
ये वही हैं जो अंधेरों से रौशनी चीर लाते हैं !!**



किसी भी मामले में बैंक और बैंक कर्मचारी के खिलाफ शिकायत कैसे करे



बैंक में कई बार स्टाफ ग्राहकों के साथ बहुत बुरा वर्ताव करते हैं। जैसे बैंक अकाउंट खोलने अथवा बंद करने में आनाकानी करना, पूर्व सूचना के बगैर सर्विस चार्ज काट लेना, बिना उचित कारण बताए लोन आवेदन को रद्द कर देना, बिना किसी ठोस वजह के लोन देने से मना करना, क्रेडिट कार्ड बिल समय पर भरनेके पश्चात भी अतिरिक्त शुल्क काट लेना, बिना वजह बैंक कर्मचारी ग्राहकों से चिढ़ जाने पर ग्राहके के साथ दुर्व्यवहार करना और उन्हें सुविधाएं ना प्रदान करना, बैंक कर्मचारियों द्वारा ग्राहकों के साथ ऐसे दुर्व्यवहार करना आजकल अम होता जा रहा है। प्राइवेट सेक्युर के कुछ बैंकों को छोड़कर सरकारी बैंक कर्मचारी ज्यादातर ग्राहकों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसी स्थिति में ग्राहक बैंकों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं ले पाते हैं और वह उन सभी सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं जिन्हें प्राप्त करना उनका कानून अधिकार है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने ग्राहक के साथ बैंक कर्मचारियों द्वारा किए गए किए जा रहे दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने और ग्राहकों को बैंक द्वारा उचित सुविधा प्रदान करने के लिए किए बैंकों के लिए कई विशेष नियम बनाए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक ग्राहकों को लोकपाल जैसे मजबूत अधिकार प्रदान किए हैं। जिसके अंतर्गत ऐसे बैंक और बैंक कर्मचारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज करके ग्राहक बैंक और बैंक कर्मचारियों को भी सबक सिखा सकते हैं। जिससे यह उनके साथ ही नहीं बल्कि अन्य ग्राहकों के साथ भी दुर्व्यवहार नहीं कर सकेंगे।

कस्टमर हेल्पलाईन नंबर
बैंक कम्प्लेन
टौल फ्री नंबर
एसबीआई हेल्पलाईन
कस्टम केयर

के माध्यम से अपनी शिकायत दर्ज करा

सकेंगे।

लोक पाल शिकायत कैसे करे- भारतीय स्टेट बैंक शिकायत कैसे करे, बैंक मैनेजर की शिकायत कैसे करे, भारतीय रिजर्व बैंक में शिकायत कैसे करे, भारतीय स्टेट बैंक खाता शिकायत कैसे करे, शिकायत दर्ज कैसे करे, आदि प्रमुख मामले हैं जिसकी जानकारी ग्राहकों को नहीं होती जिससे वे अपना मामला बैंक अधिकारी या कर्मचारी के विरुद्ध शिकायत दर्ज नहीं करा पाते हैं।

बैंक द्वारा ग्राहकों से लोन, क्रेडिट कार्ड आदि की बकाया राशि वसूलने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं। तरह तरह की प्रताड़ना देकर उनसे पैसे वसूल किए जाते हैं। कई बार तो ऐसा देखा गया है कि बैंक की गलती से ऐसे ग्राहकों को भी प्रताड़ित किया जाता है। जिन्होंने बैंक से किसी प्रकार का लोन लिया तक नहीं होता है। हाल में ही मुम्बई से एक मामला सुनने को मिला, जहां एक 81 साल रिटायर्ड शिक्षिका लक्ष्मी भंडारकर को बैंक द्वारा धमकी भरी कॉल आने लगी जिससे वह अत्यधिक भयभीत हो गई। उनको उसमें कोई दोष नहीं था। उनके बेटे ने क्रेडिट कार्ड से ना कोई खरीदारी की थी और ना ही

कैश निकला था फिर भी बैंक द्वारा उन पर बकाया पैसे दिखाए जा रहे थे और बार बार कॉल करके उन्हें परेशान किया जाता जा रहा था। उब उनके परिवार ने पुलिस से संपर्क किया तब जाकर उनकी समस्याओं का समाधान हुआ।

आजकल बैंक अधिकारी या कर्मचारी सीधे साथे ग्राहकों के साथ दुर्व्यवहार करनेमें जरा सा भी हिचकते नहीं है। अक्सर देखा गया है कि बैंक अकाउंट खोलने में याबंद करनेमें आनाकानी करते हैं। क्रेडिट कार्ड बिल समय पर भरने पर भी अतिरिक्त शुल्क अदा वसूलते हैं, बिना किसी सूचना के सर्विस चार्ज काट लेते हैं, बिना किसी उचित कारण दर्शाए लोक का आवेदन रद्द कर देते हैं, लोन देने से मना करते हैं। इस तरह ग्राहकों को मिलने वाली सुविधाएं नहीं प्रदान करते हैं। जिसके कारण ग्राहकों को कई है। ग्राहक चाहे तो ऐसे बैंक और बैंक कर्मचारियों को भी उनके इस दुर्व्यवहार और मिलने वाली सुविधाओं से वंचित करने के लिए बैंक लोक पाल में शिकायत कर सकते हैं।

यदि बैंक अधिकारी या बैंक कर्मचारी द्वारा किसी प्रकार से प्रताड़ित किए जा रहे हैं जैसे बैंक द्वारा मिलने वाली सुविधाएं बैंक द्वारा प्रदान नहीं की जा रही है या बैंक आपके साथ अपनी मनमानी कर रहे हैं, बिना वजह आपके लोन को रिजेक्ट कर रहे हैं तो आप भी ऐसे बैंक अधिकारी या बैंक कर्मचारी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराकर उन्हें अपनी सफाई बैंक के सक्षम प्राधिकार को देने के लिए विवश कर सकते हैं।

बैंक अधिकारी या बैंक कर्मचारी के खिलाफ शिकायत दर्ज करा सकते हैं-

हर बैंक में एक शिकायत सेल होता है। आप इस शिकायत पर सेल में जाकर बैंक अफसरोंसे अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। आप को लिखित रूप में बैंक अफसरों से अपनी शिकायत दर्ज करानी चाहिए।

1- टोल फ्री नंबर पर शिकायत दर्ज कराएं-

अफसरों के पास शिकायत दर्ज करने के साथ ही आप बैंक के टोल फ्री नंबर पर भी कॉल करके अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। अपनी शिकायत दर्ज कराने के पश्चात अपनी कंप्लेट आईडी जरूर प्राप्त कर लें। आजकल सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के अपने टोल फ्री नंबर हैं। जहां आप आसानी से अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

2- बैंक की वेबसाइट पर शिकायत दर्ज कराएं-

टोल फ्री नंबर किस अतिरिक्त आप बैंक की ऑफिशियल वेबसाइट पर भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। अपनी शिकायत दर्ज कराने के पश्चात आपसे बैंक अधिकारी संपर्क करेंगे और कम से कम समय के अंदर आपकी समस्याओं को निपटारा करेंगे।

30 दिनों तक इंतजार करें-

बैंक शिकायत सेल, बैंकके टोल फ्री नंबर अथवा बैंक की वेबसाइट पर शिकायत करने के पश्चात आप को कम से कम 30 दिनों तक इंतजार करना चाहिए। 30 दिन के अंदर बैंक द्वारा आपकी शिकायत का समाधान किया जाएगा और यदि 30 दिनों के बाद भी बैंक ने आपकी समस्या का निवारण नहीं किया है और आपको बैंक द्वारा किसी प्रकार का संतोषजनक जवाब नहीं दिया गया है और या बैंक द्वारा दिए गए जवाब से आप संतुष्ट नहीं हैं तो आप बैंक लोकपाल/बैंकिंग लोकपाल से अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं और अपनी शिकायत का समाधान प्राप्त करा सकते हैं और अपने बैंकिंग ऑब्डसमैन भी कहा जाता है। बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल/बैंकिंग सेक्टर से जुड़ी ग्राहकों कभी सभी शिकायतों का निराकरण करते हैं। मौजूदा समय में 15 बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल नियुक्ति किए गए हैं जिनके ऑफिस अधिकतर राज्यों की राजधानी में होते हैं। बैंक लोकपाल के अन्तर्गत सभी शेत्रीय ग्रामीण बैंक, अनुसूचित प्राथमिक सहकारी बैंक और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक भी शामिल हैं। बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास आप शिकायत दर्ज करा सकते हैं। यहां शिकायत दर्ज कराने के लिए आपको किसी प्रकार का शुल्क नहीं देना होता है। बैंक से संबंधित शिकायत 30 दिन के अंदर दूर कर दी जायेगी और बैंक के खिलाफ उचित कार्यवाही करके आपको आपक द्वारा दिलाएंगे जिनके आप हकदार हैं।

बैंक शिकायत के पूर्व आवश्यक नियम

बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज कराने से पहले आपको अपनी शिकायत बैंक अधिकारियों से लिखित रूप में करनी चाहिए।

यदि बैंक के विरष्ट अधिकारी आपकी शिकायत नहीं सुनते हैं अथवा आनाकानी करते हैं, तो आप बैंकों के टोल फ्री नंबर पर शिकायत दर्ज करा कर अपनी कंप्लेट आईडी प्राप्त कर लें। अथवा बैंक की



आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर दर्ज कराएं।

इन जगहों पर शिकायत दर्ज कराने के पश्चात आपको कम से कम 30 दिनों तक इंतजार करना चाहिए।

इस दौरान यदि आपकी समस्या का समाधान नहीं किया जाता है अथवा आपको संतोषजनक नहीं लगता है तब आप आगे बढ़कर बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपालके पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं। बैंकिंग लोकपाल से कौन सी शिकायत कर सकते हैं।

1-किसी भी तरह के भुगतान या चेक, ड्राफ्ट, बिल के कलेक्शन में देरी होने अथवा ना होने की स्थितिमें आप लोक पाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

2-आरबी आई द्वारा निर्धारित किए गए शुल्क से ज्यादा शुल्क लेने/ वसूलने की स्थिति में भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

3-बैंक द्वारा की जा रही लापरवाही या किसी वजह से आपके चेक के भुगतान में की जा रही देरी के मामले में भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

4-यदि कोई बैंक आपको बैंक अकाउंट खोलने अथवा बंद कराने में आनाकानी करता है तो ऐसी स्थिति में भी बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

5-आरबीआई द्वारा निर्धारित नियर्देशों के अनुसार बैंक द्वारा आपको व्याज ना प्रदान करने अथवा निर्धारित व्याज दर से अधिक व्याज वसूलने में भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

6-नियर्देशों के अनुसार क्रेडिट कार्ड संबंधी किसी भी प्रकार के नियमों के उल्लंघन करने पर भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं या संपर्क कर सकते हैं।

7-यदि आपको बैंक आपको हक के किसी सुविधा अथवा सर्विस देने से मना करता है तो भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

8-अगर कोई बैंक भुगतान लेने से मना करता है तो भी शिकायत कर सकते हैं।

9-यदि बैंक बिना किसी ठोस कारण बताएं आपके आवेदन को रद्द कर दे तो शिकायत कर सकते हैं।

10-अगर कोई बैंक आपको बिना किसी उचित कारण बताए डिपोजिट अकाउंट खोलने से मना करता है तो बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

11-यदि कोई बैंक आपको पहले से सूचना दिए बिना ही किसी प्रकार का अतिरिक्त शुल्क वसूलता है/बिना उचित कारण बताए आपके अकाउंट को जबरन बंद करता है/या बंद करने से मना करता है/बैंक द्वारा पारदर्शी रूप से सभी नियमों का पालन न करने की स्थिति में भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

12-भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित नियर्देशों का उल्लंघन करने और आपको मिलने वाली सुविधाओं से वर्चित करने/ड्राफ्ट भुगतान आदेश और बैंकस चेक आदि की जारी करनेमें देरी करना अथवा जारी करने से मना करने /सिक्कों को बिना किसी विशेष और पर्याप्त कारण बताए लेने से मना करने पर भी आप बैंकिंग ऑब्डसमैन/बैंकिंग लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

आस्था के इस कुंभ में मोक्ष की प्राप्ति के लिए देश ही नहीं विदेश से भी खिंचे चले आते हैं भक्त



प्रजेश शंकर, नई दिल्ली। प्रयागराज (पहले इलाहाबाद) में 15 जनवरी से मकर संक्रान्ति के दिन पहले शाही स्नान के साथ ही कुंभ का शंखनाद हो चुका है। आस्था की गठरी लेकर पहुंचे श्रद्धालु त्रिवेणी में स्नान कर मोक्ष प्राप्ति की कामना कर रहे हैं। संगमनगरी में आध्यात्मिक व सांस्कृतिक समागम को देखने के लिए न केवल भारत, बल्कि सात समुंदर पार से भी भक्त खिंचे चले आए हैं। भीषण सर्दी के बावजूद पहले शाही स्नान में अखाड़े के शिविरों में विदेशी बाबाओं को देखकर देसी लोगों की सर्दी भी छू-पतर हो गई। जब तक कुंभ मेला चलेगा, तबतक विदेशी संत अखाड़े की परंपरा के अनुसार शिविरों में ध्यान, पूजा, जप और योग करते नजर आएंगे।

कुंभ का संस्कृत अर्थ है कलश कुंभ का पर्व दुनिया में किसी भी धार्मिक आयोजन में भक्तों का सबसे बड़ा

संग्रहण है। सैंकड़ों की संख्या में लोग इस पावन पर्व में उपस्थित होते हैं। कुंभ का संस्कृत अर्थ है कलश, ज्यतिष शास्त्र में कुंभ राशि का भी यही चिह्न है। कुंभ को सांस्कृतिक ज्ञान के आदान-प्रदान का मेला भी कहा जाता है। विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा भी सांस्कृतिक विचारधाराओं के आदान-प्रदान का हिस्सा है। कुंभ में न केवल भारतीय श्रद्धालुओं का आगमन हुआ है, बल्कि बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक और श्रद्धालु भी आए हैं। यहां पहुंचे सभी लोग दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक मेले को समझना और इसमें गोते लगाना चाहते हैं।

15 से चार मार्च तक चलेगा कुंभ

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित कुंभ मेला 15 जनवरी से 4 मार्च तक चलेगा। इस दौरान देश-विदेश

के करीब 15 करोड़ श्रद्धालु संगम में आस्था की डुबकी लगाते हुए पूण्य कमाएंगे। श्रद्धालुओं के लिए गंगा नदी के किनारे 3,200 एकड़ क्षेत्र में छोटा-सा शहर बसाया गया है। इसके अलावा कुंभ मेला के दौरान 500 से अधिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

12 साल पर होता है कुंभ का आयोजन

हिन्दू धर्म में कुंभ पर्व का आयोजन हर 12 साल के अंतराल पर चारों में से किसी एक पवित्र नदी के तट पर आयोजित होता है। हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में शिवा, नासिक में गोदावरी और इलाहाबाद में संगम तट पर जहां गंगा, यमुना और

सरस्वती नदी मिलती हैं।

प्रयागराज यानी इलाहाबाद का कुंभ पर्व

ज्योतिषशास्त्रियों के अनुसार जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, तब कुंभ मेले का आयोजन होता है। प्रयाग का कुंभ मेला सभी मेलों में सर्वाधिक महत्व रखता है।

हरिद्वार का कुंभ पर्व

प्राचीन ग्रंथों में हरिद्वार को तपोवन, मायापुरी, गंगाद्वार और मोक्षद्वार आदि नामों से भी जाना जाता है। हरिद्वार की धार्मिक महत्व विशाल है। यह हिन्दुओं के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थान है। कुंभ मेले की तिथि की गणना करने के लिए सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति की स्थिति की जरूरत होती है। हरिद्वार का संबंध मेष राशि से है।

नासिक का कुंभ पर्व

भारत में 12 में से एक जोतिलिंग त्र्यम्बकेश्वर नामक पवित्र शहर में स्थित है। यह स्थान नासिक से 38 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और गोदावरी नदी का उद्गम भी यहाँ से हुआ। 12 वर्षों में एक बार सिंहस्थ कुंभ मेला नासिक एवं त्र्यम्बकेश्वर में आयोजित होता है। बता दें कि नासिक उन चार स्थानों में से एक है, जहाँ अमृत कलश से अमृत की कुछ बूँदें गिरी थीं।

उज्जैन का कुंभ पर्व

उज्जैन का अर्थ है विजय की नारी और यह मध्य प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित है। इंदौर से इसकी दूरी लगभग 55 किलोमीटर है। यह शिंगा नदी के तट पर बसा है। उज्जैन भारत के पवित्र एवं धार्मिक स्थलों में से एक है।

पर्यटन को बढ़ावा

और रोजगार सूजन

नए साल में धर्मनगरी प्रयागराज में हिंदुओं के आस्था की डुबकी लगाने वाला पर्व कुंभ का आगाज हो गया है। कुंभ सिर्फ आस्था और विश्वास का केंद्रही नहीं, बल्कि इससे रोजगार और ट्रॉिज़म को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। कुंभ मेला के दौरान 4300 करोड़ रुपए से उत्तन प्रदेश में दुनिया के सबसे बड़े अस्थायी शहर को सरकार ने बसाया है। सरकार को उम्मीद है इससे पर्यटन के साथ रोजगार का सूजन बढ़े पैमाने पर होगा।

इस अस्थीयी शहर में मिलेगी सभी सुविधाएं

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में श्रद्धालुओं को सभी प्रकार की सुविधाएं देने और मेले को भव्य बनाने के लिए कुंभ नगरी में दुनिया का सबसे बड़ा अस्थायी शहर बनाया गया है। इस शहर को जोड़ने के लिए 250 किमी लंबी सड़क के साथ 22 पुल बनाए गए हैं। इस शहर में लंबी सड़कें, पुल, गाड़ियों के लिए पार्किंग स्पैस, सैकड़ों रसोईघर समेत हर तरह का जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया है। इस कंभ में करीब 12 करोड़ श्रद्धालुओं के जुटने की उम्मीद है।

प्रयागराज के लिए एयर इंडिया की स्पेशल फ्लाइट्स

एयर इंडिया कुंभ मेला के लिए विभिन्न शहरों और प्रयागराज के बीच विशेष उड़ानों का संचालन कर रही है। एयर इंडिया ने बताया कि विशेष उड़ानें 13 जनवरी से 30 मार्च के बीच संचालित करेगी। एयर इंडिया के इन स्पेशल फ्लाइट्स के जरिए इलाहाबाद को दिल्ली, अहमदाबाद और कोलकाता के साथ जोड़ा जाएगा।

दिल्ली-इलाहाबाद उड़ान (एआई 403) का संचालन सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को किया जाएगा। इलाहाबाद-अहमदाबाद उड़ान का संचालन बुधवार और शनिवार को होगा जबकि इलाहाबाद-कोलकाता उड़ान का संचालन शुक्रवार और रविवार को होगा।

जियो ने भी लॉन्च किया कुंभ जियोफोन

प्रयागराज में आयोजित कुंभ मेले के लिए रिलाय়েंस जियो ने नए 'कुंभ जियोफोन' की पेशकश की है। 'कुंभ जियोफोन' इस बार के कुंभ मेले से जुड़ी हर छोटी-बड़ी जानकारी से लैस है। कुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालु ट्रेन, फ्लाइट्स और बस स्टेशन से जुड़ी सूचनाओं के अलावा किस दिनकौन-सा स्नान है इसकी जानकारी भी 'कुंभ जियोफोन' से आप प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही, इसमें इमर्जेंसी हेल्पलाइन नंबर भी उपलब्ध रहेंगे।

कुंभ में क्रूज का भी आनंद ले सकते हैं आप

प्रयागराज कुंभ के लिए भारतीय अंतर्राष्ट्रीय जलमार्ग प्राधिकरण (इन्लैंड वॉटरवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया) ने 5 जनवरी से मोटरबोट्स और क्रूज राइड की शुरूआत कर दी है। प्राधिकरण के दो जहाज सीएल कस्तूरबा और एसएल कमला समेत 20 मोटरबोट्स हैं जो श्रद्धालुओं को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का काम करेंगे। सीएल कस्तूरबा की क्षमता करीब 150 यात्रियों की है। इसके ही निजी क्रूज और बड़े बोट भी लाइसेंस लेकर गंगा और यमुना नदियों में चल रहे हैं।



सरकारी स्कूलों के ढांचे में सुधार की जरूरत



शिक्षा पर नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश भर में स्कूली शिक्षा के मामले में काफी असमानताएं हैं। जिसमें बड़े पैमाने पर सुधार की आवश्यकता है। आयोग की हास्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्सहॉल रिपोर्ट में गुणवत्ता के आधार पर केरल को सबसे पहला जबकि देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश को अंतिम पायदान पर रखा गया है। यह रिपोर्ट स्कूल जाने वाले बच्चों के सीखने के परिणामों पर आधारित है। रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्तर पर दाखिले में देश के 20 बड़े राज्यों में से 11 में चिंताजनक गिरावट आई है। जबकि

माध्यमिक स्तर पर यह गिरावट 20 बड़े राज्यों में से 8 में दर्ज की गई है। पुस्तकालय और कंप्यूटर शिक्षा के मामलों में भी राज्यों में काफी असमानताएं हैं। राज्यों के बीच शिक्षा में असमानता देश के विकास में एक बड़ी बाधा है, क्योंकि यहीं वह सेक्टर है जो पूरी पीढ़ी की दिशा और दशा को इंगित करता है। आंकड़े बताते हैं कि अभी भी शैक्षणिक सुधार के लिए एक मजबूत पहल की जरूरत है। ऐसी नीति बनाने की जरूरत है जिसे सभी राज्यों में समान रूप से लागू करवाया जा सके। निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा (आरटीई)

अधिनियम, 2009 देश के सभी राज्यों में समान रूप से लागू है इसके बावजूद रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा नियम को लागू करवाने में केरल सबसे आगे और उत्तर प्रदेश सबसे पिछड़ा है। पढ़ाने का पैटर्न, शिक्षकों की ट्रेनिंग, क्लास रूम और पदों के अनुपात में शिक्षकों की नियुक्ति समेत सभी मामलों में केरल की अपेक्षा देश के सभी राज्य पिछड़े हुए हैं। देवभूमि कहलाने वाला पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड हास्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्सहॉल रिपोर्ट में दसवें पायदान पर है। जो सरकारी स्कूलों में इसकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में कमी को दर्शाता है।

विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिती और भी चिंताजनक है। जहाँ कुछ क्षेत्रों में स्कूल भवन पढ़ाने लायक नहीं है, तो कहीं शिक्षक के पद खाली हैं। सरकारी स्कूलों की चरमपराती व्यवस्था के कारण ही अभिभावकों का रुझान निजी विद्यालयों की तरफ बढ़ने लगा है। कम आमदनी के बावजूद मां बाप अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में दाखिला दिलाने को तरजीह दे रहे हैं। एक गैर सरकारी सर्वे के अनुसार 35 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के निजी स्कूलों का विकल्प चुन रहे हैं। वर्ष 2006 में निजी स्कूलों में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 20 से बढ़कर 2018 में 33 प्रतिशत हो गया है। उत्तराखण्ड के सरकारी स्कूलों ने वर्ष 2014 से 2018 के मध्य 1.5 लाख विद्यार्थियों ने निजी स्कूलों में पलायन किया है। 13 जिलों के 1689 प्राथमिक स्कूलों के 39000 विद्यार्थी एकल शिक्षकों की कृपा से चल रहे हैं। राज्य में छात्र शिक्षक के अनुपात में बहुत बड़ा अंतर है। वर्तमान में निजी एवं सरकारी स्कूलों के ढांचागत शिक्षा में भी बहुत बड़ा अंतर है। खासकर अंग्रेजी भाषा की महत्ता के मामले में अभिभावक निजी स्कूलों का रुख कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि सरकारी स्कूलों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूल में प्राइमरी स्तर पर ही अंग्रेजी बोलने पर जोर दिया जाता है। जो भविष्य में बच्चों को रोजगार दिलाने में सहायक साबित होगा। निजी स्कूल और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की शिक्षा क्षमता का अन्तर भी बढ़ता जा रहा

है। 2009 के अनुसार यह 16 प्रतिशत से बढ़कर 2013 में 29 प्रतिशत एवं 2018 में 37 प्रतिशत देखने को मिला है। बात केवल भाषा सीखने तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्कूल भवन और ढांचागत विकास भी प्रभाव रखता है। मेरे स्वयं के अनुभव से देखा है कि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की शिक्षा से ही नहीं वरन् स्वास्थ्य से भी रिवलवाड़ किया जा रहा है। इसी साल नैनीताल शहर के एक सरकारी स्कूल में भ्रमण के दौरान मैंने गंदे शौचालय देखे जो गुटखे, सिगरेट व दुर्गंध से भरे थे, जिसमें एक पल खड़ा रह पाना मुश्किल था। वहीं विद्यालय के सभागार का ऐसा आलम था कि छत कभी भी गिर कर एक बड़े हादसे का रूप ले सकती है। यह स्थिती नैनीताल शहर के केवल एक विद्यालय की ही नहीं है। उत्तराखण्ड राज्य के 90 प्रतिशत सरकारी स्कूल इसी परिस्थिती से जूझ रहे हैं। जबकि उत्तराखण्ड भूकंप के जोन 4 में आता है। जो उच्च क्षति जोखिम वाला क्षेत्र है। ऐसी में जर्जर भवन एक बड़े हादसे को अंजाम दे सकते हैं। जिसकी तरफ स्थानीय प्रशासन को गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसा नहीं है कि सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में ज्ञान की कमी है। उनकी नियुक्ति योग्यता के आधार पर होती है परन्तु स्कूली कार्य के अतिरिक्त उन शिक्षकों पर चुनाव, जनगणना तथा अन्य सर्वे जैसे कार्य बोझ लाद दिए जाते हैं। जिससे अक्सर उनका अध्यापन कार्य प्रभावित होता है। इसके विपरीत निजी स्कूलों के

शिक्षकों को केवल पढ़ाने का काम करना होता है, जिससे वह अपनी सारी ऊर्जा छात्रों के सर्वांगीण विकास में लगाते हैं। बहरहाल सरकार को नीतियों में सुधार करने की आवश्यकता है। निजी स्कूलों की अपेक्षा सरकारी स्कूलों को सभी अनुदान दिए जाते हैं। बजट में शिक्षा के लिए विशेष राशि आवंटित की जाती है। इसके बावजूद अभिभावकों का निजी स्कूलों की तरफ रुख करना इसकी लंगर व्यवस्था को दर्शाता है। जरूरत इस बात की है कि सरकार इन स्कूलों के मॉडल में सुधार करे। एक तरफ जहाँ प्राइवेट स्कूलों की तर्ज पर भवनों को तैयार किया जाये वहीं शिक्षकों की गुणवत्ता पर भी ध्यान दिया जाये। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी विषय पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। आधुनिक शैक्षिक पहलों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में कंप्यूटर हमारे दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन गए हैं। हमारी पीढ़ी इससे वंचित न रहे इसलिए जरूरी है कि कंप्यूटर की मूल बातें प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने चाहिए। वास्तव में सरकारी स्कूलों के मॉडल में सुधार की आवश्यकता है। कई स्कूलों में सुधार आया है लेकिन कई जगह अब भी सुधार की गुजाइश बाकी है। इसकी शुरूआत प्राथमिक स्तर से ही की जानी चाहिए क्योंकि मजबूत नींव पर ही सशक्त भवन तैयार किया जा सकता है।



असम में दो से अधिक बच्चे होने पर सरकारी नौकरी के दरवाजे बंद



अगर आपके पास भी दो से अधिक बच्चे हैं तो आपको सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। यह फैसला लिया है असम की सरकार ने। असम में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने उन लोगों को सरकारी नौकरियां नहीं देने का फैसला लिया है जिनके दो से अधिक बच्चे हैं। मुख्यमंत्री सबार्नद सोनोवाल की कैबिनेट ने सोमवार को यह फैसला लिया। इसके अनुसार 1 जनवरी, 2021 के बाद से दो से अधिक बच्चे वाले लोगों को कोई सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी। दरअसल 126 सीटों वाली असम विधानसभा ने दो साल पहले जनसंख्या नीति को अपनाया था और अब सोनोवाल सरकार ने यह फैसला लिया है। तब यानी सितंबर 2017 में असम विधानसभा ने असम की शजनसंख्या और महिला सशक्तीकरण नीति घोषित की थी ताकि छोटे परिवार को

प्रोत्साहित किया जा सके। इस नीति के अनुसार सरकारी नौकरी पाने के लिए वो लोग उम्मीदवार नहीं बन सकते जिनके दो से अधिक बच्चे हैं। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि मौजूदा सरकारी कर्मचारियों को भी दो-बच्चे के मानक का सख्ती से पालन करना होगा।

राजनीतिक महत्वकांक्षा

हालांकि सत्तारूढ़ बीजेपी के इस फैसले को प्रदेश में उनकी लब्बी राजनीतिक महत्वकांक्षा से जोड़कर भी देखा जा रहा है क्योंकि साल 2011 की जनगणना के हिसाब से असम की कुल आबादी 3 करोड़ 11 लाख 69 हजार में मुसलमानों की जनसंख्या करीब 1 करोड़ 67 लाख 9 हजार है। यानी राज्य की कुल जनसंख्या में मुसलमानों की आबादी 34.22 फीसदी यानी एक

तिहाई से अधिक है। इसके अलावा यहां के 33 में नौ जिले मुसलमान बहुल हैं। ऐसे में जनसंख्या नीति के अंतर्गत छोटे परिवार को सरकारी नौकरी देने के बीजेपी सरकार के इस फैसले को बरिष्ठ पत्रकार बैकुंठ नाथ गोस्वामी पार्टी के राजनीतिक फायदे से जोड़कर देख रहे हैं।

वे कहते हैं, जनसंख्या नीति के तहत अगर सरकार को कोई काम करना था तो उसे जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए मौजूदा जागरूकता कार्यक्रमों को और प्रभावी बनाना चाहिए था। यह नीति कि दो से अधिक बच्चे वाले व्यक्ति को सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी, इसे अद्यात भी चुनावी दी जा सकती है। यह कहकर नौकरी नहीं दिया जाना कि आपके दो से अधिक बच्चे हैं, सर्वैधानिक अधिकार का उल्लंघन होगा। वो आगे कहते

है, प्वरअसल राज्य में मुसलमानों के बीच जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत ज्यादा है। इसका मुख्य कारण उनमें शिक्षा की दर का कम होना है। अगर इस विषय का राजनीतिक पहलू देखे तो बीजेपी को इसमें राजनीतिक फायदा है। वो लोग चाहते हैं कि मुसलमानों की जनसंख्या कम हो। क्योंकि लोकतंत्र में सारा खेल नंबर का ही है। फिलहाल हमलोग 2011 की जनगणना पर निर्भर हैं लेकिन 2021 की जनगणना की जो रिपोर्ट आएगी उसमें प्रतिशत के आधार पर असम में मुसलमानों की ग्रोथ रेट पहले के मुकाबले कम होगी। बीजेपी की इतनी कोशिशों के बावजूद पिछले चुनाव में देश के मुसलमानों के कुल वोटों का केवल 6 प्रतिशत वोट ही उन्हें मिला था।

हालांकि बीजेपी ने इस तरह के किसी भी राजनीतिक फायदे की बात से इनकार किया है। असम प्रदेश बीजेपी के वरिष्ठ नेता विजय गुप्ता ने बीबीसी से कहा, छहमारी पार्टी जनसंख्या नीति के तहत यह काम कर रही है। जिस तरह से जनसंख्या बढ़ रही उससे तमाम सारी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इस जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हमारी सरकार ने लोगों से गुजारिशों की है कि वे दो बच्चे ही पैदा करें। वे कहते हैं, यह काम थोड़ा बाध्यतामूलक लगता है लेकिन इससे उन तमाम

परिवारों को भी कई तरह से राहत मिलेगी। सरकारी नौकरी पाने के लिए लोग इस नीति को ध्यान में रखेंगे। इसमें किसी के साथ अन्याय करना या फिर राजनीतिक तौर पर किसी धर्म विशेष से जोड़कर देखना ठीक नहीं है। दो संतान पैदा करने से आर्थिक रूप से भी वो परिवार आगे बढ़ेगा। वरना कम समय के भीतर ज्यादा संतान पैदा करने से पहले वाले बच्चों के पालन पोषण का बोझ बढ़ेगा और वहीं बेरोजगारी भी बढ़ाएगी। यह नीति सबके लिए है, चाहे वो हिंदू हो या मुसलमान।

अगर दूसरा बच्चा जुड़वा हुआ तो?

वहीं सरकारी नौकरी करने वाली इंदिरा गोगोई इस तरह की नीति के खिलाफ तो नहीं लेकिन इसमें परेशानी जरूर देखती है।

वे कहती हैं, सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि दो बच्चे पैदा करने वाली नीति को किसे ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। क्योंकि शिक्षित लोग तो दो से ज्यादा बच्चे पैदा करते ही नहीं हैं। अगर बात आर्थिक रूप से कमजोर चाय जनजाति या फिर किसी दूसरे समुदाय की है तो वो लोग भी आजकल कम बच्चे पैदा करते हैं। फिर यह नीति विशेष तौर पर किन लोगों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। वे एक अहम

मुद्दा उठाते हुए कहती हैं कि कई बार ऐसा होता है कि पहले बच्चे के जन्म के बाद किसी को जुड़वा बच्चा हो जाते हैं और ऐसे में उस परिवार में बच्चों की संख्या तीन हो जाएगी। क्या ऐसी स्थिति में उस परिवार के लोगों को सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी। इस नीति में ऐसे कई बिंदु हैं जिनपर सरकार को लोगों से बात करनी चाहिए।

कांग्रेस का क्या है कहना?

असम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद रिपुन बोरा ने बीबीसी से कहा, द्वेश में बढ़ती जनसंख्या को लेकर हम पूरी तरह चिंतित हैं लेकिन केवल दो बच्चे पैदा करने वाला कानून बनाने से जनसंख्या को रोका नहीं जा सकता। जनसंख्या को नियंत्रण करने के लिए हम एकमत है लेकिन इसके लिए कानून से नहीं बल्कि लोगों के दिल से सोचना होगा। लोगों को शिक्षित करना पड़ेगा और उनमें पूरी जागरूकता लानी होगी। असम सरकार के मंत्रिमंडल की बैठक में नई भूमि नीति को भी मंजूरी दी गई जिससे भूमिहीन स्थानीय लोगों को तीन बीघा कुधि भूमि और एक मकान बनाने के लिए आधा बीघा जमीन देने का फैसला लिया गया है।



अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है

हाजीपुर का विश्व प्रसिद्ध चीनीया केला

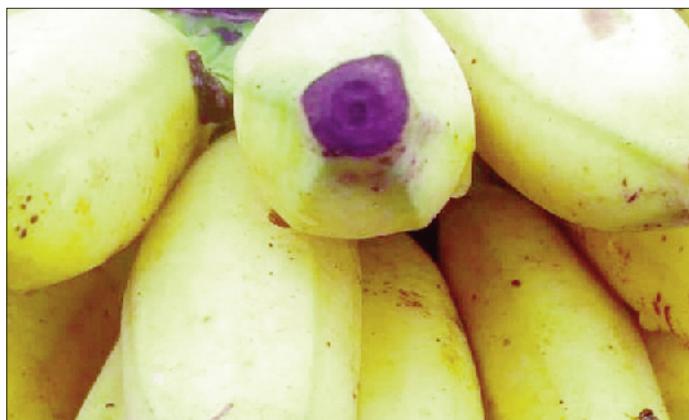


अनूप नारायण सिंह

छोटे आकार और अपने अनूठे स्वाद के कारण पूरी दुनिया में एक विशिष्ट पहचान बनाने वाला हाजीपुर का चिनिया केला उचित संरक्षण के अभाव में अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है कभी हजारों एकड़ में हाजीपुर में इसकी खेती होती थी जो अब सिमटकर रह गया है बाजारवाद के इस दौर में उचित मार्केटिंग के अभाव में किसानों ने चीनिया केला की खेती करनी छोड़ दी एक जमाना था जब आप पटना के महात्मा गांधी सेतु पुल होते हाजीपुर जाते थे तो दूर-दूर तक हजारों एकड़ में आपको केले की खेती नजर आती थी अब पूरा इलाका वीरान नजर आता है महात्मा गांधी सेतु के निर्माण होने के बाद सबसे ज्यादा कर फायदा किसी को हुआ था तो वह था हाजीपुर के केला और केला व्यवसायीयों को। उनके टोल प्लाजा के पास आते-जाते रुकते वाहनों के यात्रियों के रूप में चीनिया केला को बाजार मिल गया था। वैसे चीनी अकेला की डिमांड देश ही नहीं विदेशों तक में थी। महात्मा गांधी पुल की

बदहाली के साथ केला व्यवसायियों की बदहाली भी शरू हुई खासकर चिनिया केला बाजार में गुप्त होने लगा छाटे साइज और सस्ता दर होने के कारण किसानों ने भी चिनिया केला के खेती से मुंह मोड़ना शुरू किया। हाजीपुर का नाम सुनते ही सहसा एक नाम उभरकर जुबान पर आता है..यानि केला। इस क्षेत्र का मालभोग ही या अलपान या फिर चीनिया। इन सभी केलों का अपना स्वाद और अपनी विशेषता है। इस क्षेत्र के किसानों की अर्थिक स्थिति केले के बगानों की स्थिति पर ही निर्भर करती है। केले की खेती किसानों की अर्थिक व सामाजिक दशा सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परंतु समय-समय पर आई कई प्राकृतिक आपदाओं ने केले के फसल उत्पादकों की कमर ही तोड़ दी है। सरकार द्वारा केला फसल को फसल बीमा में शामिल नहीं किए जाने के कारण क्षेत्र के किसानों को प्रति वर्ष भारी अर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। वर्तमान में जिले के जहुआ, सहदुल्लहपुर, सैदपुर गणेश, पानापुर धर्मपुर, कंचनपुर, रजासन, पकौली, भैरोपुर, माइल, दाउद नगर, खिलवत, बिदुपुर, रामदौली, शीतलपुर

कमलपुर, अमेर, कमोर्पुर, मधुरापुर, मथुरा, गोखुला, मजलिसपुर, चेचर, कुतुबपुर, मनियापुर आदि गांवों के हजारों हेक्टेयर भूमि पर केले की फसल लहलहाती है। जानकारी के अनुसार वर्तमान समय में 3250 हेक्टेयर भूमि पर केले की खेती होती है। फसल उत्पादन लागत में हो रही निरंतर वृद्धि, कीट व्याधि का प्रकोप एवं बाजार की समस्या ने किसानों को प्राकृतिक आपदा के समय भी केला उत्पादक किसानों को सरकार से किसी प्रकार की अर्थिक सहायता नहीं मिलती। च्सचाई की कोई कारण व्यवस्था नहीं होने से किसान निजी पंप सेट से च्सचाई करने को बाध्य हैं। जो काफी महंगा पड़ता है। उत्पादन लागत अधिक होने के कारण भी किसान परेशान हैं। केले से बनने वाले उत्पादों के संयत्र भी यहां नहीं हैं। इस क्षेत्र में केला पकाने की न तो कोई व्यवस्था है और न ही केले से बने चिप्स एवं अन्य सामग्री के निर्माण हेतु कोई उद्योग। जबकि हाजीपुर के ही हरिहरपुर में ही स्थापित केला अनुसंधान केंद्र केले के थम के रेसे से बनी वस्तुओं के निर्माण की तकनीक विकसित हो पाई है। वर्तमान में केला उत्पादक किसान परेशान हैं।



पटना महावीर मंदिर की आस्था से जुड़ा है नैवेद्यम्

अनूप नारायण सिंह

पटना के महावीर मंदिर की पहचान के साथ जुड़ चुके नैवेद्यम् लड्डु खुशबू भक्तों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता ही है साथ ही साथ इस की एक विशिष्ट पहचान पटना के साथ पूरी तरह जुड़ चुकी है। धी, बेसन, केसर और मेवे से बने प्रसाद 'नैवेद्यम्' का स्वाद जिसने एक बार लिया, उसे वह ताउप्र याद रखता है। नैवेद्यम् और महावीर मंदिर का साथ 26 साल का हो चुका है।

महावीर मंदिर में चढ़ाया जाने वाला प्रसाद नैवेद्यम् लोगों की आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है। इसके स्वाद, शुद्धता और पवित्रता का हर व्यक्ति कायल है। पिछले 26 वर्षों से इसकी प्रसिद्धि लगातार बढ़ती जा रही है। भक्तजन महावीर मंदिर में प्रसाद के रूप में नैवेद्यम् चढ़ाने के बाद इसे मिठाई के रूप में घरों में रखते हैं। कहते हैं, सभी मिठाइयों का स्वाद एक तरफ और भगवान को भोग लगाने के बाद नैवेद्यम् का स्वाद एक तरफ तिरुपति बालाजी से पटना आया प्रसाद। महावीर मंदिर न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल बताते हैं कि महावीर मंदिर में नैवेद्यम् की शुरूआत वर्ष 1993 में हुई। वह कहते हैं, 93 में मैं तिरुपति मंदिर दर्शन करने के लिए गया था। उस समय गृह मन्त्रालय के अधीन अयोध्या में ओएसडी था। तिरुपति में नैवेद्यम् चढ़ाकर प्रसाद ग्रहण किया तो उसका स्वाद काफी पसद आया। उसी समय निर्णय लिया कि पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर में भी इसे प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाएगा। इसके कुछ ही दिनों बाद यहा नैवेद्यम् का प्रसाद चढ़ाया जाने लगा। 10 फीसद राशि मिलती है कारीगरों को। महावीर मंदिर न्यास समिति नैवेद्यम् की कुल बिक्री की दस फीसद राशि प्रसाद बनाने वाले कारीगरों को देती है। यही कारण है कि तिरुपति से आकर कारीगर पटना में काम करने को तैयार हैं। अब तो कारीगरों की दूसरी पीढ़ी भी काम करने आने लगी है। मुजफ्फरपुर भी जाता है नैवेद्यम् पटना के महावीर मंदिर में बनने वाला नैवेद्यम् राजधानी के विभिन्न मंदिरों में चढ़ाये जाने के साथ-साथ मुजफ्फरपुर गरीबनाथ मंदिर में भी चढ़ाया जाता है। राजधानी के बेलीरोड महावीर मंदिर एवं जल्ला महावीर मंदिर में भी नैवेद्यम् का प्रसाद चढ़ाया जाता है। प्रसाद के रूप में ही ग्रहण की परंपरा नैवेद्यम् के हर पैकेट पर लिखा रहता है- 'नैवेद्यम् प्रसाद है, इसको बिना भगवान को चढ़ाये खाना मना है।' ऐसे में महावीर मंदिर या अन्य मंदिरों से नैवेद्यम् खरीदने के बाद भक्तजन पहले इसे प्रसाद के रूप में चढ़ाते हैं। इसके बाद ही प्रसाद के रूप में इसे ग्रहण किया जाता है। हनुमान मंदिर के अलावा पंचरूपी हनुमान मंदिर बेली



रोड, बांस घाट काली मंदिर आदि शहर के प्रमुख मंदिरों में यहाँ से नैवेद्यम् को अन्य जगहों पर भेजा जाता है। मान्यता है कि भगवान को प्रसाद भोग लगाने के बाद ही श्रद्धालु इसका ग्रहण करते हैं। प्रसाद के निर्माण करने वाले सारे कारीगर दूसरे राज्यों से आकर भगवान की सेवा प्रसाद बनाने को लेकर कर रहे हैं। प्रसाद बनाने में सभी कारीगर शुद्धता के साथ-साथ पूरी निष्ठा से बनाते हैं। हर मौसम में शुद्धता और सफाई का ध्यान रखना इन

कारीगरों की पहली प्राथमिकता होती है।

सबसे पहले शुद्ध बेसन से बुद्धिया तैयार की जाती है। इसके बाद चीनी की चासनी में डालकर उसे मिलाया जाता है। मिलाने के क्रम में ही बुद्धिया के साथ-साथ काजू, किशमिश, इलाइची और केसर मिलाया जाता है। चासनी में बुद्धिया का मिश्रण लगभग दो घंटे तक होता है। इसके बाद मिश्रण को लड्डु बाधने वाले प्लेटफॉर्म पर रख दिया जाता है। यहाँ पर एक साथ 15 से 20 कारीगर खड़े होकर लड्डु बाधने की परंपरा नहीं है। लड्डु बाधने के बाद उसे 250 ग्राम, 500 ग्राम और एक किलो के पैकेट में रखा जाता है। फिर उसे महावीर मंदिर भेज दिया जाता है। महावीर मंदिर से ही नैवेद्यम कई अन्य मंदिरों को भेजा जाता है, लेकिन सबसे ज्यादा खपत महावीर मंदिर में ही होती है। आचार्य किशोर कुणाल का कहना है कि शुरू में महावीर मंदिर में नैवेद्यम् पटना डेयरी प्रोजेक्ट के धी से तैयार किया जाता था, लेकिन तिरुपति जैसा स्वाद नहीं आ पाता था। इसके बाद पता किया गया कि आखिर तिरुपति के नैवेद्यम् का स्वाद इतना अच्छा क्यों होता है तो पता चला कि वहाँ पर कर्नाटक की देसी गायों के धी से इसे तैयार किया जाता है। इसके बाद महावीर मंदिर न्यास समिति ने कर्नाटक मिल्क फेडरेशन से संपर्क किया। वहाँ पर नदनी के नाम से कर्नाटक मिल्क फेडरेशन धी बेचता है। कर्नाटक मिल्क फेडरेशन से बातचीत की गई तो वह तिरुपति मंदिर को दिए जाने वाले दर पर ही महावीर मंदिर को भी धी देने को तैयार हो गया। यह सस्ता भी पड़ रहा था। यहाँ का धी 470 रुपये किलो पड़ रहा था, जबकि नदनी धी की कीमत प्रतिकिलो 380 रुपये आती है। महावीर मंदिर में वर्तमान में नैवेद्यम् 250 रुपये प्रति किलो बेचा जा रहा





है।

महावीर मंदिर द्वारा नैवेद्यम की बिक्री करने से जो लाभ प्राप्त होता है, उससे महावीर कैंसर संस्थान में इलाज कराने वाले गरीब मरीजों की अर्थिक मदद की जाती है। कैंसर के गरीब मरीजों को मंदिर की ओर से 10 से 15 हजार रुपये की मदद की जाती है। 18 वर्ष से कम उम्र के सभी मरीजों को 15,000 रुपये अनुदान दिया जाता है। इसके अलावा सभी मरीजों को मुफ्त में भोजन कराया जाता है। प्रतिदिन लगभग 1500 लोग भोजन करते हैं। मरीजों के परिजनों को भी अनुदानित दर पर भोजन दिया जाता है। कैंसर मरीजों को मात्र 100 रुपये प्रति यूनिट खून मुहैया कराया जाता है नैवेद्यम को तिरुपति के ब्राह्मण पूरी पवित्रता एवं शुद्धता के साथ बनाते हैं। इसके लिए राजधानी के बुद्ध मार्ग में एक कारखाना तैयार किया गया है। यहां पर प्रतिदिन 35 ब्राह्मणों द्वारा प्रसाद तैयार किया जाता है। नैवेद्यम बनाने वाले तिरुपति के कारीगर शेषाद्री का कहना है कि प्रसाद बनाने से पहले सभी कारीगर रात दो बजे से ही जुट जाते हैं। सभी स्नान के बाद साफ किये हुए कपड़ों को धारण करते हैं।

पटना का महावीर मंदिर

बिहार की राजधानी पटना के हृदयस्थली अवस्थित उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध मंदिर है। सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में शामिल पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर में रामनवमी के दिन अयोध्या की हनुमानगढ़ी के बाद सबसे ज्यादा भीड़ उमड़ती है। इस मंदिर में आकर शीश नवाने से भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है। इस मंदिर को हर दिन लगभग एक लाख रुपये की राशि विभिन्न मदों से प्राप्त होती है। इस मंदिर को 1730 ईस्वी में स्वामी बालानंद ने स्थापित किया था। साल 1900 तक यह मंदिर रामानंद संप्रदाय के अधीन था।

इसके बाद इसपर 1948 तक इसपर गोसाई संन्यासियों का कब्जा रहा। साल 1948 में पटना हाइकोर्ट ने इसे सार्वजनिक मंदिर घोषित कर दिया। उसके बाद आचार्य किशोर कुणाल के प्रयास से साल 1983 से 1985 के बीच वर्तमान मंदिर का निर्माण शुरू हुआ और आज इस भव्य मंदिर के द्वार सबके लिए खुले हैं।

इस मंदिर का मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर है और मंदिर के गर्भगृह में भगवान हनुमान की मूर्तियां हैं। इस मंदिर में सभी देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। यहां की एक खास बात यह है कि यहां रामसेतु का पत्थर कांच के बरतन में रखा हुआ है। इस पत्थर का वजन

15 किलो है और यह पत्थर पानी में तैरता रहता है। यह मंदिर बाकी हनुमान मंदिरों से कुछ अलग है, क्योंकि यहां बजरंग बली की युग्म मूर्तियां एक साथ हैं। एक मूर्ति परित्राणाय साधूनाम् अर्थात् अच्छे लोगों के कारज पूर्ण करने वाली है और दूसरी मूर्ति- विनाशाय च दुष्कृताम्, अर्थात् बुरे लोगों की बुराई दूर करने वाली है।

यह मंदिर पटना रेलवे स्टेशन से निकल कर उत्तर दिशा की ओर स्थित है प्रसिद्ध महावीर मंदिर पटना जंक्शन परिसर से सटे ही बना हुआ है। मंदिर प्राचीन है, जिसे 80 के दशक में नया रंग-रूप दिया गया। पटना आने वाले श्रद्धालु यहां सिर नवाना नहीं भूलते। लाखों तीर्थयात्री इस मंदिर में आते हैं।

यहां मंगलवार और शनिवार के दिन सबसे अधिक संख्या में भक्त जुटते हैं। यहां हनुमान जी को थी के लड्डू नैवेद्यम का भोग लगाया जाता है, जिसे तिरुपति के कारीगर तैयार करते हैं। हर दिन यहां करीब 25,000 लड्डूओं की बिक्री होती है।

महावीर मंदिर ट्रस्ट के अनुसार इन लड्डूओं से जो पैसा आता है वह महावीर कैंसर संस्थान में उन मरीजों पर खर्च किया जाता है जो अर्थिक रूप से कमज़ोर हैं और कैंसर का इलाज करवाने में सक्षम नहीं हैं।



हरिहरनाथ मंदिर सोनपुर



देश में सबसे ज्यादा शिव मंदिर मिलते हैं। वहाँ दक्षिण भारत में वैष्णव मंदिर बड़ी संख्या में हैं। पर एक ही गर्भ गृह में शिव और विष्णु का मंदिर दुर्लभ है। बिहार को सारण जिले में स्थित सोनपुर में हरिहरनाथ का अति प्राचीन मंदिर है। यहाँ हरि (विष्णु) और हर (शिव) की प्रतिमा एक साथ स्थापित है। कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर गंगा-गंडक के संगम स्थल यानी हाजीपुर सोनपुर में स्थित हरिहर क्षेत्र में गंडक नदी के किनारे लाखों की संख्या में श्रद्धालु स्नान कर बाबा हरिहर नाथ मंदिर में पूजा अचंका करते हैं। बाबा हरिहर नाथ का मंदिर पौराणिक है। भगवान राम ने स्वयं स्थापित किया था हरिहरनाथ को सोनपुर में गज और ग्राह के युद्ध स्थल पर हरि (विष्णु) और हर (शिव) का हरिहरनाथ मंदिर है। यहाँ हर रोज सैकड़ों भक्त श्रद्धा से पहुंचते हैं। सावन माह के सोमवार के दिन

यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या काफी बढ़ जाती है। कुछ लोगों का कहना है कि इस मंदिर का निर्माण भगवान राम ने सीता स्वयंवर में जाते समय किया था। कहा जाता है कि हरिहरनाथ मंदिर का निर्माण भगवान राम ने त्रेता युग के हाथों हुआ था। भगवान राम जब जनकपुर के लिए जा रहे थे तब उन्होंने यात्रा मार्ग में ये मंदिर बनवाया था। गंगा और गंडक नदी के संगम पर स्थित यह प्राचीन मंदिर सभी हिन्दूओं के परम आस्था का केंद्र है। बाद में इस मंदिर का निर्माण राजा मान सिंह ने करवाया। अभी जो मंदिर बना है, उसकी मरम्मत राजा राम नारायण ने करवाई थी। मंदिर के अंदर गर्भ गृह में शिवलिंग स्थापित है। इसके साथ ही भगवान विष्णु की प्रतिमा भी है। पूरे देश में इस तरह का कोई दूसरा मंदिर नहीं है जहाँ हरि और हर एक साथ स्थापित हों। कई सालों तक महंथ अवधि किशोर

गिरी हरिहर नाथ मंदिर के महंथ रहे। उनका साल 2006 में 8 अप्रैल को निधन हो गया। बिहार राज्य के अति महत्वपूर्ण मंदिरों में शुभार हरिहर नाथ मंदिर बिहार धार्मिक न्यास बोर्ड के तहत आता है। इसकी व्यवस्था राज्य सरकार देखती है। बड़े बड़े राजनेता और उद्योगपति बाबा हरिहरनाथ का आशीर्वाद लेने आते हैं। हरिहरनाथ मंदिर में सभी तरह के संस्कारों के कराए जाने का इंतजाम भी है। मंदिर के बगल में आवासीय धर्मशालाएं भी हैं। कैसे पहुंचे झ सोनपुर रेलवे स्टेशन से हरिहरनाथ मंदिर की दूरी तीन किलोमीटर है तो हाजीपुर जंक्शन से मंदिर की दूरी 6 किलोमीटर है। बाहर से आने वाले श्रद्धालु हाजीपुर में रहकर मंदिर जा सकते हैं। सालों भर सोमवार को और सावन के महीने में पड़ने वाले सोमवार को मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।

कितना महंगा होने जा रहा है मोबाइल इंटरनेट और क्यों

भारत ऐसा देश है जहां पर मोबाइल डेटा की दरें दुनिया में सबसे कम हैं। यहां पर चीन, जापान और दक्षिण कोरिया से भी सस्ता मोबाइल डेटा मिलता है। लेकिन आने वाले समय में भारतीय ग्राहकों को इसी डेटा के लिए ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि दो प्रमुख टेलिकॉम कंपनियों ने जल्द ही मोबाइल डेटा का दाम बढ़ाने की घोषणा की है। भारतीय बाजार में एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया की राजस्व के मामले में आधे से ज्यादा हिस्सेदारी है। ये दोनों ही कंपनियां जल्द ही मोबाइल डेटा को महंगा करने वाली हैं। हाल ही में दोनों कंपनियों ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 10 अरब डॉलर का घाटा दिखाया है। ऊपर से सुप्रीम कोर्ट ने एक पुराने मामले को निपटाते हुए हाल ही में आदेश दिया है कि सभी टेलिकॉम कंपनियों को 90,000 करोड़ रुपए की रकम सरकार को देनी होगी। इसी के बाद वोडाफोन ने हाल ही में बयान जारी किया है, एम्बाइल डेटा आधारित सेवाओं की तेजी से बढ़ती मांग के बावजूद भारत में मोबाइल डेटा के दाम दुनिया में सबसे कम हैं। वोडाफोन आइडिया 1 दिसंबर 2019 से अपने टैरिफ की दरें उत्पुत्त ढांग से बढ़ाएगा ताकि इसके ग्राहक विश्वस्तरीय डिजिटल अनुभव लेते रहें। एयरटेल की ओर से भी इसी तरह का बयान जारी किया गया है। नई दरें क्या होंगी, इस बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं मिल पाई है। जियो ने भी अभी तक ऐसी कोई घोषणा नहीं की है। कंपनियां क्यों डेटा का दाम बढ़ा रही हैं, किस हृद तक यह कीमत बढ़ेगी और आम आदमी पर इसका कितना फर्क पड़ेगा? इन्हीं सवालों के जवाब के लिए बीबीसी संवाददाता आदर्श राठौर ने बात की टेलिकॉम और कॉरपोरेट मामलों के विशेषज्ञ आशुतोष सिन्हा से।

तथ्यों बढ़ेंगे दाम

पहले टेलिकॉम सेक्टर में कई कंपनियां थीं और उनमें प्रतियोगिता के कारण डेटा की कीमतें गिरी थीं। ये कीमतें इसलिए भी गिरी थीं क्योंकि दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में भारत में ग्राहकों की संख्या तेजी से बढ़ रही थी। भारत में 22 टेलिकॉम सर्कर्ता हैं और उनमें तीन कैटिगरीज हैं - 1, 2 और 3, इनमें 3 कैटिगरी के सकल्स (जैसे कि ऑडिशा) में जियो, एयरटेल व दूसरी कंपनियां नए ग्राहक बनाना चाहती थीं। ऐसा इसलिए, क्योंकि यहां के ग्राहक हर महीने डेटा पर बेशक कम रकम खर्च करते हैं लेकिन इनकी संख्या इतनी है कि आपकी कुल कमाई अच्छी हो जाती है। इसी कारण वे कुछ समय के लिए नुकसान सहकर भी



ग्राहकों को आकर्षित करना चाह रही थी। वह दौर अब खत्म हो गया है। साथ ही कंपनियां भी कम बच्ची हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि डेटा की कीमत बढ़ेगी।

कितनी बढ़ोत्तरी होगी

एकदम बहुत बढ़ोत्तरी बड़ी नहीं होगी क्योंकि कंपनियां एकदम से 15-20 प्रतिशत दाम नहीं बढ़ा सकतीं। इसलिए हर कंपनी अपने हिसाब से योजना बनाएगी कि और देखेगी कि किस सेगमेंट से कितना राजस्व बढ़ाना है। दरअसल कंपनियां एवरेज रेवेन्यू पर यूजरश यानी प्रति व्यक्ति होने वाली कमाई को देखती है। अभी भारत में यह हर महीने लगभग 150 रुपए से कुछ कम है। आम भाषा में ऐसे समझें कि एक आम व्यक्ति हर महीने 150 रुपए खर्च कर रहा है। तो कंपनियां ऐसी योजना लाएं सकती हैं कि अभी आप महीने में 100 रुपए का प्लान ले रहे हैं तो 120 रुपए का प्लान लीजिए, हम आपको 100 रुपए वाले प्लान से दोगुना डेटा देंगे। इससे कंपनियां की 20 फीसदी कमाई तो बढ़ जाएगी लेकिन उनका डेटा का खर्च उतना नहीं बढ़ेगी कि परेशानी होने लगे। फिर भी, कंपनियां को अगर राजस्व बढ़ाना है तो ऐसा तभी हो सकता है जब वे मोटा खर्च करने वाले ग्राहकों से और पैसा खर्च करवाएंगी। एजीआर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला वोडाफोन-आइडिया और एयरटेल के घाटा दिखाने के साथ-साथ हाल ही में लाइसेंस फीस से जुड़े विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया है। मामला है एजीआर यानी अडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू का। यह 15 साल पुराना केस है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट का अभी फैसला आया है। जब मोबाइल सर्विस शुरू हुई थी, तो ऑपरेटरों से सरकार फिक्स्ड लाइसेंस फीस लेती थी। यानी आपके 100 ग्राहक हों या लाखों, आपको इसके एवज में निश्चित रकम देनी है। लेकिन अगस्त 1999 में नई पॉलिसी आई

जिसके मुताबिक ऑपरेटरों को सरकार के साथ रेवेन्यू शेयर करना होगा। यानी आपको 100 रुपए की कमाई में से भी निश्चित प्रतिशत सरकार को देना होगा और हजारों-करोड़ की कमाई में से भी। इससे सरकार की कमाई भी बढ़ गई क्योंकि टेलिकॉम कंपनियां भी बढ़ गईं और उनके ग्राहक बढ़ने से सरकार को भी फायदा हुआ। लेकिन एजीआर का झगड़ा ये है कि इसमें किस-किस चीज को शामिल किया जाए। अब यह टेलिकॉम कंपनियों की कि स्पृत खराब है कि इसी दौर में सुप्रीम कोर्ट का फैसला उनके खिलाफ आया है और उन्हें भारी-भरकम लबित रकम सरकार को चुकानी होगी। अब इसका समाधान यह हो सकता है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सरकार ही नया कानून लाकर बदलकर कंपनियों को गहत दे या फिर डिपार्टमेंट ऑफ टेलिकॉम कहे कि हम आपके यह रकम एकमुश्त नहीं लेंगे, आप धीरे-धीरे एक निश्चित अवधि में दे दीजिए।

दाम बढ़ाने से डर क्यों नहीं

प्रश्न यह उठता है कि जब कोई कंपनी डेटा को महंगा करेगी तो क्या उसके ग्राहक अन्य कंपनियों के पास नहीं चले जाएंगे? मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी (एमएनपी) अधिक सफल नहीं हुआ है, फिर बात आती है विकल्पों की। बीएसएनएल को भी मिला दिया जाए तो भारत में चार ही टेलिकॉम ऑपरेटर हैं। यानी ग्राहकों के पास बहुत विकल्प नहीं हैं। अगर आज की तुलना 2008-10 से करें तो तब देश में 13 टेलिकॉम ऑपरेटर थे। अब स्थिति उल्टी हो गई है। पहले प्राइसिंग पावर यानी मूल्य तय करने की ताकत कंपनियों के पास नहीं थी। उस समय ग्राहकों के पास विकल्प बहुत थे। इसलिए प्रतियोगिता के कारण कंपनियां मूल्य बढ़ाने से पहले सोचती थीं। लेकिन अब कम ऑपरेटर रह जाने के कारण प्राइसिंग पावर कंपनियों के पास आ गई है।

हीटवेव के लिए अलर्ट वार्निंग सिस्टम अब चाहत नहीं, जरूरत



यकीन नहीं होता लेकिन साल 2022 का मार्च पिछले 120 सालों में सबसे गर्म मार्च का महीना रहा। इतना ही नहीं, स्वास्थ्य एवं जलवायु परिवर्तन को लेकर लांसेट काउंट डाउन रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2019 में 65 वर्ष या उससे अधिक 46000 से ज्यादा लोगों की मौत का संबंध अत्यधिक तापमान से था। इन तथ्यों के चलते विशेषज्ञों का मानना है कि जिस तरह से गर्मी बढ़ रही है उसके मद्देनजर हीटवेव की पूर्व चेतावनी की पुख्ता व्यवस्था बहुत जरूरी है और इसे अधिक व्यापक रूप देते हुए सभी नगरों तक ले जाया जाना चाहिये।

इसी मुद्दे पर विचार विमर्श के लिए नेचुरल रिसोर्सेज डिफेंस कार्डिसिल (एनआरडीसी), कलाइमेट्रे ट्रेंड्स, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ-गांधीनगर, महिला हाउसिंग ट्रस्ट और भारतीय मौसम विभाग ने बुधवार को एक वर्चुअल संवाद का आयोजन किया। इसका विषय भीषण गर्मी के लिहाज से सबसे ज्यादा जोखिम वाले वर्गों के लिए जलवायु सहनक्षमता का निर्माण और भारत में भीषण गर्मी को लेकर तैयारियों तथा बेहतर प्रतिक्रिया को मजबूत करना था। एनआरडीसी के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनीष बपना ने दुनिया में बढ़ रहे तापमान की वास्तविक स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि दुनिया का लक्ष्य वैश्विक तापमान में वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना है लेकिन इस वर्क हम 2.7 डिग्री सेल्सियस वैश्विक तापमान वृद्धि की तरफ बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत में हम एक दूसरे से

जुड़े खतरों के मिश्रण से जूझ रहे हैं। इनमें अत्यधिक गर्मी, वायु प्रदूषण, भीषण सूखा और बाढ़ शामिल हैं। एनआरडीसी और अधिक समानता पूर्ण स्वास्थ्य तैयारी को आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर रहा है। वर्ष 2013 में हमने गांधीनगर में हीट एक्शन प्लान को लागू करने में मदद की। यह दक्षिण एशिया में अपनी तरह का पहला एक्शन प्लान था। इसमें अलर्ट वार्निंग सिस्टम और समन्वित प्रतिक्रिया की प्रणालियां शामिल थी। इस प्लान को देश के बाकी तमाम शहरों में भी लागू किया जाना चाहिए। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक डॉक्टर मृत्युंजय मोहपात्रा ने देश में रियल टाइम मॉनिटरिंग पूर्वानुमान और पूर्व चेतावनी के मुद्दों का जिक्र करते हुए कहा कि हीटवेव की पूर्व चेतावनी को लेकर हात के वर्षों में देश में काफी प्रगति हुई है। नगरों और जिला स्तर पर पर हीट एक्शन प्लान के परिणाम स्वरूप वर्ष 2015 के बाद देश में गर्मी के कारण मौतों की संख्या में कमी आई है।

उन्होंने कहा कि मौसम विभाग बढ़ती गर्मी के बीच हीटवेव की पूर्व चेतावनी को लेकर काफी काम कर रहा है। देश के उत्तरी इलाकों में मेट्रोलॉजिकल सब डिवीजन स्तर पर उपयोगकारी जैसे कि एनडीएमए, स्वास्थ्य विभाग, रेलवे, मीडिया तथा रोड ट्रांसपोर्ट इत्यादि को ईमेल, व्हाट्सएप, फेसबुक, टिवटर और प्रेस रिलीज के जरिए हीटवेव के संबंध में पूर्व चेतावनी भेजी जाती है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक हेल्थ गांधीनगर के

निदेशक डॉक्टर दिलीप मावलंकर ने कहा कि तापमान बढ़ने पर इनमें, जनवरों और पौधों के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। हमें तापमान के हिसाब से अनुकूलन करके अपना बचाव करना होगा। उन्होंने भारत में हीटवेव की पूर्व चेतावनी की व्यवस्था में बदलाव की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि पश्चिमी देशों की तरह भारत में भी मेहनतकश लोगों के लिए काम के पैमाने तय किए जाने चाहिए कि भीषण गर्मी में वे किस तरह से काम करेंगे। हमें शहरों में 'थ्रेशोल्ड आधारित लोकल वार्निंग सिस्टम' बनाना चाहिए। डॉक्टर मावलंकर ने कहा कि अगर कोई व्यक्ति सीधे धूप में काम कर रहा है और तापमान 4-5 डिग्री बढ़ जाता है तो उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा और उसे हीट स्ट्रोक हो सकता है। उस वक्त उसके बचने की उम्मीद सिर्फ 60% ही रह जाती है। भारत में हीट स्ट्रोक के जितने मामले रिपोर्ट किए जाते हैं, वे सिर्फ 'टिप आफ आइसबर्ग' ही हैं क्योंकि पश्चिमी देशों के विपरीत भारत में 'ऑल कॉज डेली मोटिलिटी' रिपोर्ट नहीं की जाती है। गौरतलब है कि वर्ष 2019 में भारत में अत्यधिक गर्मी के संपर्क में आने से 65 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 46600 लोगों की मौत हो गई भीषण गर्मी के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाला दबाव बुर्जुर्ग लोगों, शहरों में रहने वाले लोगों और दिल तथा फेफड़ों की गंभीर बीमारियों से जूझ रहे लोगों के साथ-साथ झुग्गी बसियों में रह रहे लोगों तथा कम आमदनी वाले समुदायों के लिए घातक बनता जा रहा है।

केजीएफ-2 की सफलता से निर्भय प्रभास दबाव नहीं, यह खुशी की बात है : प्रभास

दक्षिण भारत के ख्यातनाम निर्देशकों में शामिल लेखक-निर्देशक प्रशांत नील की हालिया प्रदर्शित केजीएफ-2 को बॉक्स ऑफिस पर जो सफलता प्राप्त हुई है उसने कई अभिनेताओं की पेशानी पर बल डाल दिए हैं। केजीएफ 2 ने पहले दिन वैश्विक स्तर पर 130 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की है, जिस कारण ट्रेड विक्षेपक खुश हैं। पिछले दो वर्षों से वो लगातार यही कहते आ रहे थे कि दर्शकों को सिनेमाघरों तक लाने के लिए मास एंटरटेनर्स की जरूरत है, जो बॉलीवुड देने में असमर्थ रहा है। ऐसे में साउथ की फिल्में हिन्दी दर्शकों को खूब भा रही हैं और बॉक्स ऑफिस पर बम्पर कमाई कर रही हैं। हिन्दी बैल्ट में पिछले दिनों प्रदर्शित हुई साउथ की पुष्पा: द रूल, आरआरआर और अब केजीएफ-2 ने बेहतरीन कारोबार करके हिन्दी सिनेमा के कई सितारों के साथ ही निमार्ता निर्देशकों को भी परेशानी में डाल दिया है। इन्हीं सितारों में शामिल हैं प्रभास जो हिन्दी फिल्मों में

भी काम कर रहे हैं। उनकी बाहुबली सीरीज के बाद साहो और राधेश्याम का प्रदर्शन हुआ, जिनमें राधेश्याम पूरी तरह से नाकाम साबित हुई। अब दर्शकों को उनकी आगामी हिन्दी फिल्म सालार का इंतजार है, जिसे



केजीएफ बनाने वाले लेखक-निर्देशक प्रशांत नील ही बना रहे हैं। फिलहाल इस फिल्म की शूटिंग जारी है। प्रभास ने जी मीडिया से केजीएफ 2 की बम्पर ओपनिंग पर बात की और बताया कि क्या वो इस कारण दबाव महसूस कर रहे हैं प्रभास ने जी मीडिया से बात करते हुए कहा है, मैं दबाव क्यों महसूस करूँगा... यह तो अच्छी खबर है ना...। प्रशांत नील ने ब्लॉकबस्टर फिल्म डिलीवर की है, वो मेरे डायरेक्टर हैं... यह बड़ी खबर है। हम सभी उनके लिए काफी खुश हैं। हम लोगों ने हाल में ही सालार की शूटिंग शुरू की है। मैं खुश हूँ कि मैं इतने सफल डायरेक्टर के साथ काम कर रहा हूँ। मैं प्रेशर क्यों फील करूँगा। मैं तो केजीएफ 2 की पूरी टीम के लिए काफी खुश हूँ। गौरतलब है कि केजीएफ 2 की बम्पर सफलता ने यश को भी प्रभास की तरह ही पैन इंडिया स्टार बना दिया है। बाहुबली सीरीज के बाद प्रभास की लोकप्रियता में काफी इजाफा हुआ था।

